



होमियोपैथिक मतके अनुसार

जगत जी देवा लाल एतम आर्य

**गृह चिकित्सा**

भगरचन्द भैरोदान घिटिया ।  
जेन प्रन्यालय ।  
वीकानेर, (राजपूताना)

लाहिड़ी एण्ड कम्पनी

मयुरा बाबा से प्रकाशित



# गृह चिकित्सा

( होमियोपैथिक मतके अनुसार )

---

स्वर्गीय

डाक्टर जगदीश चन्द्र खाहित्री की पताई हुई

पञ्चम संस्करण

षट्ठ भाषा की गृहचिकित्सा में हिन्दी भाषा में  
अनुवाद किया गया ।

खाहित्री एन्ड कम्पनी मथुरा शाखा से  
प्रकाशित

द्वितीयवार मुद्रित  
( बहुत परिष्कृत )

मूल्य 10/- ] भागा } *Mutra* { *Price 14 As*  
1905

भी देपकी नरुग प्रेस में जापानगा भी इम्दायत घाम ।



# भूमिका

जब कल दिन दिन भारत वासियों की दरिद्रता के साथ साथ तरह तरह के रोग भी बहुत बढ़ रहे हैं परन्तु उन के साथ रोग दूर करने के उद्देश्य से पश्चिमीय चिकित्सा प्रणाली भी खूब बढ़ रही है यहा तक कि आज कल एसा कोई घरिखा ही गाघ निकलेगाजहा दो एक आदमी अंग्रेजी चिकित्सा के पूरेया गधूरे जानने वाले नमिफख इस अंग्रेजी चिकित्सा प्रणाली में एलोपैथिक और होमियो पैथिक बोही प्रफारण की चिकित्सा प्रधान है इममें से भारत में सब जगह एलो पैथिक सब जगह जैसा प्रचार है होमियोपैथिक वैसा नहीं है बडे पुस्तक के साथ लिखना पड़ता है कि जेवख रंग देश के सियाय और देशों में अयतक होमियोपैथिक का जैसा प्रचार है उस नदी की बराबर ही कहना चाहिये पर इस रोगी पीड़ित भारत बंधे केलिये होमियोपैथिक चिकित्सा जैसी उपयोगी है औरचिकित्सा वैसी उपयोगी नहीं है यह एक सर्व प्रकार से सिद्ध बात है विशेषित एलोपैथिक मतकी चिकित्सा जैसी साध्य है वैसे ही इसकी औपधे विश क्रिया युक्त है जिनका व्यवहार समाचार पर विपक्षि से खाधी नहीं होता परन्तु होमियोपैथिक चिकित्सा प्रणाली वैसी नहीं है इसकी कीमत कम औपधे साधारण और चिकित्सा प्रणाली सुगम है यहाँ तक कि मामूली लिखना पढ़ना जानने वाला आदमी भी पुस्तक की सहायता से सहज सहज रोगों की चिकित्सा करसका है और पडोसी कुटुंबी गरीब दुखियारों का कष्ट मोचन करके अपूर्ब ब्याधि लाभ करसका है इसका विशेष गुण यहगी है कि औपधि यदि ठाक तजवीज गमी होता यदि उपकार नहागा तोहागिरी नहोगी ।

भाजफाज षग देश में होमियोपैथिक चिकित्सा प्रणाली का विस्तार होनेके साथ बहुत से चिकित्सा ग्रन्थ भी प्रकाशित हुये हैं सुप्रसिद्धि खाहिरि कंपनी के प्रतिष्ठाता स्वर्गीजगदीश चंद्र खाहिरि इसके पथ प्रदर्शक थे इन्होंनेही सबसे पहले कलकत्ता राजघाटीमें एक सत्र से बड़ा औषधालय स्थापित करके बंग भागमें अनेक प्रकार के चिकित्सा ग्रन्थ रचेये और उन्होंनेही बंग देशीय ग्रहणों के लिये ग्रह चिकित्सा नामक पुस्तक बनाई थी उस की सहायता से प्रत्येक गृहस्त सहज सहज सब रोगों में होमियोपैथिक औषध देकर लाभ उठा सकते है धीरे २ बिहार प्रदेश के पटना, और बाँकीपुर शहरों में एव युक्त प्रदेश के श्री मयुरा धाम में एक कम्पनी के शाखा औषधालय स्थापित होने से उन देशों में इस चिकित्सा प्रणाली प्रवर्त करने के लिये बगला गृहचिकित्सा का हिन्दी अनुवाद बाँकीपुर शाखा से प्रकाशित हुआ किन्तु वह अनुवाद प्रथम प्रकाशित गृहचिकित्सा का अनुवाद मात्र था इस के ऊपरान्त बगला गृहचिकित्सा के चार संस्करण और प्रकाशित हुए जिन में क्रमश अनेक धारें बढ़ती गयी और स्वाधारण पीडाओं की चिकित्सा का विषय विस्तृत रूप से सजाजित होने के कारण पुस्तक का आकार बहुतही बढ़ गया पुरानी जपी हिन्दी गृहचिकित्सा भी प्राय १ वर्ष हुआ सब विकचुकी इस समय पाँचवी धार छपी हुई बगला गृहचिकित्सा का यह हिन्दी अनुवाद दूसरीबार छपा जाना है पुरानी छपी पुस्तकों के साथ इस की तुलना करने से इसे एक नवीन पुस्तक कहना भी गत्युक्ति न होगी ।

जो सब रोग कठिन और सांघातिक हैं वह सावधानी से छोड़ दिये गये हैं क्योंकि निम के लिये यह पुस्तक लिखी गयी है उन्हें ऐसे कठिन रोगों की चिकित्सा में प्रयुक्त होता उचित नहीं

है। सहज सहज रोगों की चिकित्सा करनाही इन रोगों का उद्देश्य है। जिन के लिये यह पुस्तक लिखी गयी है वह यदि इस के द्वारा उपकार प्राप्त कर सके गे तो हम भी अपने परिश्रम और व्यय को सफल समझे गे यह गृहचिकित्सा स्वर्गपासी ग्रंथ कारकी बडे भाद्र की वस्तु है।

बडे भागद का विषय है कि प्राति दिन शिवाहृत्त्रि के साथ साथ बहा बाळो का यदि होमियोपैथिक चिकित्सा पर भी पडती जाती है और बडे २ शहरों में होगियोपैथिक चिकित्सा कभी हीन पडते हैं। परन्तु अगरेजी न जानने वाले चिकित्सको के उपयोगी पुस्तक का विषयकुल अभाव था परन्तु हमने उस अभाव को दूर करने के लिये सब प्रकार का कष्ट और व्यय स्वीकार करने का संकल्प किया है यिसुचिका चिकित्सा और चिकित्सा तत्व नामक दो बडी २ पुस्तके जितना शीघ्र होसके गा अनुवाद कर के हिन्दी में प्रकाशित होगी।

सर्वे साधारण लोग जिस से इस पुस्तक द्वारा लाभ उठा सके इस के लिये इस भाषा जहा तक समय है सरल रखी गयी है और जिस रीति से यह पुस्तक प्रत्येक घर में पंचांग के समान रह सके उसी लिये इस पुस्तक का आकार पहले से छोडा और कागज छापा खूब बढ़िया होने पर भी कीमत पहले से कुछ अधिक रखी है ॥

श्री उपेन्द्रनाथ गह्लिक

मनेजर छाटिङ्की एन्डको

मथुरा शाखा



अ

पृष्ठ

पृष्ठ

अमिश्र औषधि	३
अल्प मात्रा	४
अर्क	१९
अकृत्रिम औषध	२०
अनिद्रा	२६—१००
अंजनी (गुहेरी)	२७
अंश (घघासीर)	३३
अत्यन्त रज्जु खाद्य	३५
अहकोप प्रदाह	५२
अखिराम, ज्वर	८६
अहकोपका फूलजामा	११५
अजीर्णके कारण विरधूमना	१५१

आ

आहार	१०
आमसोहू	४०
आमघात	४२
आतशक	४८
आम्र मुखना	८०
आम्र में कीड़ा घुमजाना	१६६
आयैनिक	२०७
आर्गिका	२०७

इ

इतिहास	१
इन्द्रो कमुंडपर साल का चक्र-	

पट्टजाने खून का पेशाब	११५
इपीका	२०८
इग्नोसिया	२०८

उ

उगलियो का पकजाना	३७
उदरामय	३४ ६६-१२४
उपदश	४८
उल्टी होना	१३६
उदरामय खेचक के बाद	१८६

ऊ

ऊतुशुख (गासिक समय की-तकलीफ)	५०
-----------------------------	----

ऊतुरोध	१६५
--------	-----

ए

एँठजामा लडको का	१६८
एकोनाइट	२०८
एोटगटाट	२०६
ऐटिमकूड	२०६
ऐपिस	२०९
ऐसिडनाइट्रिक	२१०
ऐसिडफौस	२१

ओ

ओपियम	
-------	--

औ	प्र		प्र
औषधि पूर्ण वक्त	२२	कूपम	२१३
औरतों के ज्यादा खूनमाना	३५	कामला	२१३
	क		ख
कसरत	१६	खागा	१०
कमजोरी	३१	खांसी	३१
कान में दर्द होना	५७	खुजली	५६
कान का पहरा	५६	खासी सूखी	६२
कैसुभा	६८	खांसी तर	६३
कयजियत	७०-६९	खांसी स्वरभग के साथ	६४
कमजोरी से खून गिरना	१०६	खांसी हूपिंग	६५
कीड़े के सबब से खून-		खांसी घुगरी	६७
गिरना	१०७	खुजली	८२
काग में दर्द होना चेषफ के-		खून गिरना-नाक से	१०५
बाद में	१८६	खून गिरना भाये में खून	
काम में कीड़ा घुस आना	१६६	जमा होमे से	१०५
कीड़े का काटना	१६७	खूनगिरना-बोट लगने से	१०५
कीड़े का डंक खुमाना	१६६	खून गिरना-मासिक बंद हो-	
कट आना	२०५	जामे से	१०६
कैमोमिखा	२१०	खून गिरना-कमजोरी से	१०६
काळी धाई क्रोमिकम	२११	खून गिरना-कीड़े के सबब	
कोफिया	२११	से	१०७
कैलकेरिया	२११	खून गिरना-घार घार	१०७
कार्बोमिजिटोविजिन	२११	कसरत	१०६-१०७
काळोसिन्ध	२१२	खून का पेशाब	११५
कैथेरिस	२१२	खून का पेशाब-इन्दी के मुँद-	
कैलेडुखा	२१२	पर खाब का खरर पड़जाने-	
कैम्फर	२१२	से	११५

## प्रष्ट

खसरा ठीक न निकल कर-  
वैसेही बैठजावे १८६

## ग

ग्लोब्युख [ छोटी गोली ] २०  
गुदेरी २७  
गर्मी [ उपदश ] ४८  
गलगंड ७४  
गले में घाव ७५  
गर्भ अथस्था की पीडा ७६  
गर्भ पात ७८  
गठिया ११६-१४१  
गठिया गई १४२  
गठिया पुरानी १४४  
गांठ फूखना १६०

## घ

घुगरी खांसी ६७  
घाव १९३-२०५

## च

चूयां २०  
चक्षु पद्राह ८०  
चोट लगने से खून गिरना १०५  
चेचक १३७-१८७  
चेचक के पीछे की शिका-  
यते १८६  
चेचक के पीछे खांसी १८६

## प्रष्ट

“ उदरामय १८६  
“ फान में दर्द होना १९०  
“ गांठ फूखना १९०  
“ दिख धड़कना १६०  
चोट लगकर खूनजमजाना १६७  
चोट लगकर कुचखजाना १६७  
चायना २१३

## छ

छोटी गोली २०  
छाजन ५६  
छाती में दूध का सूखजाना १२५  
छाती में जखन १५६  
छाजे १५६

## ज

जख १४  
ज्वर ८४-१००  
ज्वर सामान्य ८८  
ज्वर भाविराम ८६  
ज्वर सविराम ६१  
जुकाम १७८  
जखजाना १६८  
जखने से घाव होजाना १६८  
जहर खाना २००  
जखसिमिमिम २१३

ट	पृष्ठ		पृष्ठ
टिचर	१६	सि सिर घूमना	१५०
ट्राई यूरेशन ( घूर्ण )	२०	दुरवक्षता के संघसि सिर-	
		घूमना	१५२
	ड	दमा	१५४
१. डोसेरा	२१४	दिल धडकना	१६०
डल्कामारा	२१४	दुरवक्षता के कारण दिल-	
	त	धडकना	१६१
		दिल धडकना--मज्जिया के	
२. तापतिच्छी	१२८	कारण	१६१
	थ	दिल धडकना--मानसिक भा-	
		षेग के कारण	१६२
३. पूजा	२१४		
	ड	घ	
४. दवाई जो हरवक्त काम माती-		धनुष टंकार	१०३
हैं उसकी सूची	२४		
५. दवाई जो २४ बहुत जरूरी-		न	
हैं उन के नाम	२५	महाने के फायदे	१८
दाद [ दूध ]	६४	नियमायली होमियो पैथिक-	
दांतों में दर्द	६५	दवाइयों के विषय में	१६
६. दांतों उल्लम (दांतनीकाखना)	६८	नियम दवाई व्यवहार करने-	
देरी से दात निकलना	१०१	के	१२
दूध उखट देना	१०२	नाक से रूग गिरना	१०५
दूध का सुखार	१२४	नार का न गिरना	१२०
७. दिमाग में सूम अधिक		नया फोडा	१७६
	होना १४८	नक्षत्रोमिका	२१४
८. दिमाग में सूम उपाय होने		नेद्रोग	२६५

प	पृष्ठ		पृष्ठ
पथ्य का विचार	६	वेना	१६७
पानी	१४	पुराना फोडा	१७७
पाशाफ	१७	वीथ होना	१८६
पील्यूज ( बड़ो गोली )	२०	पक्षसिटला	२१५
पेचिस	२०	पेडो फाइलम	२१६
पतला दस्त आना	४३		
पीछिया	६०	फ	
पेट में फोडा पैदा	६८	फोडा	१७५
पुरानी विमारी	७१	फोडा गया	१७६
पैर फुलना	८०	फोडा पुराना	१७७
पुरातन चक्षु प्रदाह	८२	फास करिस	११६
पका स्राज	८२		
पेट चखना	८६	व	
पक्षाघात	१०७	बड़ी गोली	२०
पांडू रोग	१११	बबइजमी	२८
पेट का दर्द	१११	बवासीर	३३
प्रमेह	११२	बुखार	८४
प्रमेह पाटा क पीछे की शिक्षा		बुखार सर्दी का	८६
यत	११४	बायटा	८६
प्रसव	११६	बेचैनी	१००
प्रसव के बाद खून गिरना	११६	बार बार खून गिरना	१०७
प्रसव के बाद मूत्र का गिरना	१२२	बच्चा की होशयारी रखना	१२५
प्रसव के बाद कवजियत	१२३	बभरापन	१३३
गुग	१३०	बसत	१३७
गुग से बचन के उपाय	१३२	बव	१४०
पेशाब विछाने पर कर		प्रण	१४७
		माइयोनिषा	२१७

भ	पृष्ठ		पृष्ठ
मिरेट्टम अक्षयम्	२१७	लफया	१०७
मिरेट्टम भिरट्ट	२१७	लाफिया	१२२
<b>म</b>		खडकों का पेंठप्राना	१६८
मात्रा	२१	खार्फोपोडियम	२१८
मन्त्रा	३६	ख्येकेसिस	२२०
मासिक समय की तकलीफ	५०	<b>व</b>	
मूत्रां	१६-२०४	वायु	१५
माघे में खून जमा होना मे-		विस्त्रिका ( हैजा )	३२
खून घिरना	१०५	वमन	७६
मासिक षट् होजाने से खू-		घात	१४१
गिरना	१०६	वखेडोंमा	२१६
माता	१३७	<b>श</b>	
मुजसन ( छले )	१५९	शूल का वर्व	१७०
मूत्रांगन वायु	१६१	श्वेत-प्रहर	१७१
मृगी रोग	१६१	शोध	१७४
मूत्र कृच्छता	१६३	<b>स</b>	
मोच	२०१	स्वस्थ शरीर में होमियो पै-	
मस्तिष्क में थोट खगना	२०२	थिक औषध	५
मक्यूरियससख	२१७	स्वास्थ्यसम्बन्धी मियमाखी	६
मक्यूरियस कारोसाइमस-	२१८	स्नायु क फाइद	१८
<b>र</b>		समय	२४
रजस्वलयता	१६५	सूखी खांसी	६२
रस्टकस	२१८	स्वस्थान के वायु खांसी	६४
<b>ख</b>		सामान्य स्पर्	६८
खडकों का रोग	१७२		

प	पृष्ठ
पथ्य का विचार	६
पानी	१४
पाशाफ	१७
पीन्यूल ( घड़ीगोली )	२०
पेचिस	४०
पतला दस्त आना	४३
पीखिया	६०
पेट में फोड़ा पैदा	६८
पुरानी विमारी	७१
पैर फुलना	८०
पुरातन चक्षु प्रदाह	८२
पका साज	८२
पेट चखना	८६
पक्षाघात	१०७
पांडूगोग	१११
पेट का दर्द	१११
प्रमेह	११२
प्रमेह पाडा क पीछे की शिफा-	
यत्त	११४
प्रसव	११६
प्रसव के बाद खून गिरना	११६
प्रसव के बाद मैल का गि-	
रना	१२२
प्रसव के बाद कवजियत	१२३
रुग	१३०
रुग से घबरा के उपाय	१३२
पेशाब दिछाने पर कर-	

	पृष्ठ
बेना	१६७
पुराना फोडा	१७७
वीथ होना	१८६
पलसिटला	२१५
पेडो फाइलम	२१६
<b>फ</b>	
फोडा	१७५
फोडा नया	१७६
फोडा पुराना	१७७
फास फरिस	२१६
<b>व</b>	
बड़ी गोली	२०
बबदजमी	२८
बवासीर	३३
बुजार	८४
बुजार सबों का	८६
बायटा	८६
बेचैती	१००
बार बार खून गिरना	१०७
बन्धा की होशपारी रसना	१२६
बाहरापन	१३३
बसंत	१३७
बद	१४०
बरा	१४७
बाइयोतिया	२१७

## बूंद टपकाने की सुगम रीति



बून्द टपकाने का एक प्रकार का यन्त्र है जो टोटोठ होता है यह केवल काँच का है ।

इस यन्त्र के घटे हिस्से को शीशी के भीतर डाल दें जिस में दबा है और छोटे हिस्से को बाहर रखें ऐसा ऊपर आकार दिखाया है । काँच के घटे भाग को शीशी में डालके दिखावे फिर जिस पात्र में दबावेंगी हो एक एक बून्द डाल दें ।

१- मज्जास करने के लिये किसी शीशी में पानी भर के यन्त्र डाल के लीजिए ।

२- एक घार एक दबा में यन्त्र डालने के बाद सूख पानी स धो कर के दूसरी दबा की शीशी में डाले

३- भूलकर गी-कमी, सुराखदार नखी से दबा न टपकाना चाहिये । कारण ऐसा करने से उसका भीतर हिस्सा साफ नहीं होता है । -



## पृष्ठ

सर्वाराम उवर	६१
सुजाक	११२
स्तन में पड़त दूध होना	१२५
सिर घूमना	१५०
सिर घूमना विभाग में खून- ज्यादा होने से	१५०--१५४
सिर घूमना--मज्जीय के- कारण	१५१
सिर घूमना-बुध्दता के- सबब	१५२
सिर में दर्द	१५३
सिर में दर्द--सर्दी के कारण	१५३
सिर में दर्द-मज्जीय के- कारण	१५५
सिर में दर्द--बाहरी सपथों- से	१५६
सिर में दर्द-मागसिक विकार के कारण	१५६
सिर में दर्द--स्नायुविक वि- कार से	१५७
सर्दी [ सुफाम ]	१७८
सर्प गरमी	१८१
स्तन प्रदाह	१८३
सच्चित्त भैरवपतरा	२०७
मलफर-	२१८
साई बिसिया	२१७

## पृष्ठ

सिकेखी	२१६
सीपिया	२१६
सीना	२१६
सिमिसिपयगा	२२०
स्पन्जिया	२२०
<b>द्व</b>	
होमियो पैथिक	१
होमियो पैथिक क्या है	२
होमियो पैथिक की विशेष- यता	५
होमियो पैथिक शास्त्रयं नहीं- है	५
होमियो पैथिक नहीं है ऐसा विश्वास करना	५
होमियो पैथिक का सुभीता	८
होमियो पैथिक भविष्य, दया	१५
होमियो पैथिक दवाइयों के- विषय नियमावली	१९
हैजा	५२
हृयिग खाँसी	६५
हमल गिरना	७८
हड्डी टूटना	१६५
हाय सापेमस	२२०
हेमामेलिस	२२३
हैफर सक्षफर	२२३

## बूंद टपकाने की सुगम रीति



बूंद टपकाने का एक प्रकार का यन्त्र है जो टोढा होता है यह केवल काँच का है ।

इस यन्त्र के बड़े हिस्से को शीशी के भीतर डालेंगे जिस में दवा है और छोटे हिस्से को बाहर रखेंगे जैसा ऊपर आकार दिखाया है । काँच के बड़े भाग को शीशी में डालके दिखावे फिर जिस पात्र में दवा लेनी हो एक एक बुन्दे डालदेयै ।

१- प्रश्वास करने के लिये किसी शीशी में पानी भर के यन्त्र डाल के लीये ।

२- एक बार एक दवा में यन्त्र डालने के बाद सूय पानी स धो कर के दूसरी दवा की शीशी में डाले

३- भूखकर भी फमी सुराख दार नखी से दवा न टपकाना चाहिये । कारण ऐसा करने से उसका भीतर दिस्ता साफ नहीं होता है ।

## तापमान यन्त्र (थर्मोमीटर)



यह यन्त्र कांच का होता है इस की नली में पारा रहता है जो गर्मी को पाकर खटमा है हम के जरिये से घुंकार जाना जाता है इस के खगाने की यह विधि है। जिस जगह पर नली में पारा ऊँचा रहता है उसी हिस्से को बगल में पांच मिनट तक बसाये रखना चाहिये, ऐसा करने से पारा उठेगा, कांच पर निस्तान रहते हैं उनमें जो बड़े बड़े दाग है उनको "डिगरी" कहते है। और छोटे छोटे दाग १ एक डिगरी के पांचवें भाग होते हैं।

शरीर का सामूची ताप ९८.४४ वा ९८ ॥ डिगरी होता है। ज्वर होने पर ताप बढ़ता है और वह यन्त्र से जाना जाता है। ९८ डिगरी से कम ताप होने से जीवन का भय है परन्तु किसी किसी का स्रमाधिक ताप ९७ डिगरी तक होता देखा गया है

परन्तु विषुविका में ताप ९५ तक होता देखा गया है। जिस प्रकार ताप ग्यून होने से भय होता है वैसेही अधिक सेमी १०७ डिगरी वा इस से अधिक ताप भी भयानक है। ताप यन्त्र के खगाने के पूर्व ९८ डिगरी तक पारा ऊँच लेना चाहिये इसका उपाय यह है कि ऊपरी भाग को मुँहा से पकड़ कर झटका देने से बनरता है इसी प्रकार से ९८ पर करके खगाना चाहिये। सावधानी से इय्यहार करना चाहिये इस के टूटने का भय रहता है।

ओभी राधायन्त्रभोजयति ॥

# होमियोपैथिक गृह चिकित्सा ॥

## प्रथम अध्याय

### १। होमियोपैथि

ईश्वर की सय से बड़ी सृष्टि मनुष्य जीवन है और स्वास्थ्य ( तन्दुरुस्ती ) ही मनुष्य जीवन का सय से बड़ा सुख है। स्वास्थ्य के विगड जाने से उसका बना देना और फिर ऐसी कोशिश करना कि जिससे जिन्दगीभर स्वास्थ्य ज्यों का त्यों बना रहे यही इस पुस्तक के बानाने का उद्देश्य है। शरीर के रोगिख होने से होमियोपैथिक के इलाज से जितनी जल्द और आसानी से तन्दुरुस्ती हासिल होती है, दूसरे और किसी मयके इलाज से वैसी आसानी से और जल्द तन्दुरुस्ती नहीं मिलती है। पहले इस पुस्तक को पढ़कर होमियोपैथिक इलाज में विश्ठ देने के पाठकों को यह जान लेना उचित है कि होमियोपैथिक क्या है। इस लिये होमियोपैथिक के बाबत थोड़ी सी मोटी मोटी बात नीचे लिखी जाती हैं।

**इतिहास** - करीब सौ बरसका भरसा हुआ सन् १७२० ई० में महारमा हैनिमन के द्वारा इस होमियोपैथिक मय का प्रवर्तन अरमन देश में हुआ है। यह बात ठीक है कि हैनिमन के जन्म होने से बहुत पहले भी यूरोप और हिन्दुस्तान के आयुर्वेद वगैरह प्राचीन चिकित्सा शास्त्रों में इसके चिन्ह पाये जाते हैं। परन्तु हैनिमन

ने ही सच से पहले इसको ऊंची पदवी पर बैठाया है नव से प्रति दिन इसका प्रचार देश देशान्तर में फैलता गया और इस की यथार्थता सब मनुष्यों के हृदय में जमती जाती है। इस घस्त करीब चारसौ इग्लेन्ड में और दस हजार से ऊपर अमेरिका में फायदे के मुभाफिक सीखे हुए होमियो पैथिक डाक्टर हैं। सिर्फ ६० वर्ष से होमियो पैथिक मत का इलाज हिन्दुस्तान में चला है। इनहीं साठ वर्ष में बहुत से अच्छे अच्छे चिकित्सकों ने पुरानी चिकित्सा प्रणालीको छोड़कर इस नये मत को ग्रहण किया है। यज्ञाख में होमियो पैथिक इलाज का आदर खूब है। और आदर के साथ ही साथ इसके चिकित्सकों की गिनती भी दिन प्रति दिन बढ़ रही है।

**होमियो पैथिक क्या है ?**—तन्दुरुस्ती की हाखत में जिस दवाई के देने से जो लक्षण शरीर में उत्पन्न होते हैं। अगर वैसे ही सब लक्षण किसी रोगी की हाखत में मालूम हों तो वही दवाई देना चाहिये। जो दवा बीमार को बीमारों के जिन लक्षणों को दूर कर सकती है। वही दवा तन्दुरुस्ती की हाखत में देने से वैसेही लक्षण पैदा करसकी है दवाई और रोग के साथ यह एक नित्य और स्वाभाविक सम्बन्ध है। इसका नाम होमियो पैथिक अथवा सहच चिकित्सा विधान है। अच्छे शरीर में कुनेन देने से कम्पज्वर की हाखत पैदा करसकी है। इसलिये कुनेन से कम्पज्वर आराम होता है तन्दुरुस्ती को अगर आरसेनिक देने से हैजे की सी हाखत मालूम देती है इसलिये आरसेनिक से हैजा आराम होता है होमियो पैथिक काल्पनिकमत नहीं है यह प्रत्यक्ष प्रमाण के ऊपर धनी है खूब यत्न से परीक्षा के जरिये जो प्रत्यक्ष प्रमाण मिला है उन्हीं सब अखरख्य और प्रत्यक्ष

प्रमाण्य और अभिज्ञानता पर यह होमियो पैथिक मत स्थापित हुआ है। हैनिमन ने जय इसको जारी किया था तब वर्षों तक छिपाये रखा था और जाहर नहीं किया था अन्त में परीक्षा प्रमाण्य और अभिज्ञता से इसकी यथार्थता को स्थिर और निश्चयमान कर जय उनको विश्वास हुआ तभी उन्होंने इसको सर्व साधारण में जारी किया था। ऐसाही प्रत्यक्ष प्रमाण्य और अभिज्ञता की मजबूत भीत पर यह होमियो पैथिक मत कायम किया गया है। जय तक यह प्रमाण्य अभिज्ञता का फल अम पूर्ण साधित नहीं होगा तब तक एक बड़े मारी किले के माफिक होमियो पैथिक इलाज की यात भी अच्छ और अटल रहेगी।

**अमिश्र औषध ।**—जैसे यह होमियो पैथिक मत प्रत्यक्ष प्रमाण्य के ऊपर निर्भर है वैसे ही इस के इलाज की राह भी अत्यन्त सहज है। एक घण्ट में सिर्फ एकही दवा रोगी को दी जाती है। इस लिये बिना मिथी हुई एक एक दवा का अलग अलग असर खूब सहज ही में समझ सकते हैं जय बहुत सी दवाइयाँ आपस में मिथी होती हैं तो यह यात समझ ही में नहीं आसकी है कि दवा का क्या असर है हर एक दवा का खास असर होता है। बहुत सी दवाइयें एक जगह मिलजाने से आपस में एक दूसरे के असर को बाधा पहुँचाती हैं। सिर्फ ये ही नहीं अगर इन मिथी हुई दवाइयों से कुछ नतीजा निकला तो ये यात समझना कठिन है कि किस दवा के असर से यह नतीजा हुआ और अगर कोई नतीजा नहीं निकला तो दवा बदलने के बखत यह भी समझना कठिन है कि उन मिथी हुई दवाइयों में से किस को निकालना होगा इसलिये होमियो पैथिक इलाज में एक घण्ट में सिर्फ एक ही दवा दी जाती है।

अल्पमात्रा ( कम मौताज ) ।—होमियो पैथिक कहने ही से अल्प मात्रा या ( कम मौताज ) नहीं समझना चाहिये । इस घावत में आम लोगों की बड़ी भ्रूष देखी जाती है । रोगके साथ इस दवा का एक खास सम्बन्ध होमियो पैथिक का मतलब है । दवा की मौताज होमियो पैथिक का मतलब नहीं है । मात्रा या मौताज कुछ भी क्यों नहो किन्तु होमियो पैथिक के कहने से दवाई की सादृश्य व्यवहार प्रयाली ही समझी जाती है । रोग में दवा का इस्तेमाल करने क वारे में एक खास मत अथवा नियम ( कायदा ) शास्त्र ही होमियो पैथी है हेनिमन साहब ने जब होमियो पैथिक मत बखाय तो प्रबलित मात्रा या मौताज का इस्तेमाल करते ये बखीर में परीक्षा और अभिज्ञता द्वारा उन्होंने समझा कि कम मौताजमें दवा देना काफी है । खास कर जियादा मौताज में बारबार दवा देने से जो नतीजा होता है थोड़ी मौताज में उम से जियादातर नतीजा मिखता है हेनिमन साहब के पीछे सब होमियो पैथिक डाक्टरों ने भी इसी मत का समर्थन किया है मात्रा या मौताज के थोड़े होने से आश्चर्य य अविश्वास करने की कोई बात नहीं है । रोगी के शरीर में होमियो पैथिक कायदे के मुताफिक कम मौताजकी दवा देकर परीक्षा करौ फिन जैसा नतीजा देखा जावे वैसा ही करना चाहिये । प्रत्यक्ष प्रमाण से बढकर और कोई प्रमाण नहीं है । रोग होने से शरीर का और शरीर के अन्दर रहने वाले बहुत यन्त्रोंका उत्तेजन गुण खूब बढ जाता है इसलिये मात्रा कम होने से भी कम मात्रा की दवाई से ठीक होता है । अच्छी समस्या में अगर किसी बदन के हिस्से को दवाया जाये तो तकलीफ नहीं होती है । परन्तु फोडा अथवा चोट लग जाने के कारण बदन के किसी हिस्से को दवाया जाये जिसमें कि दर्द साम्म होता है ।

## होमियो पैथिक की विशेषता—

होमियो पैथिक का इलाज ब्रह्मण के मुताबिक होता है । और इस का इफ्फा ब्रह्मण ही रोग है इस के सिवाय और दूसरी बात नहीं है । होमियो पैथिक की किताब में लिखे हुए ब्रह्मण के साथ रोगी के ब्रह्मण मिलाने जाते हैं उस के बाद चिकित्सा की जाती है । जिस ब्रह्मण के साथ विमारी का ब्रह्मण जियादा मिलजावै उसी रोग की वही ब्रह्मण है और उसी के होने से सर्वथा फायदा होता है । जिस ब्रह्मण के साथ विमारी का ब्रह्मण जियादा मिलेगा वही ब्रह्मण जियादा फलदायक होगी सब ब्रह्मण दूरहोने से विमारी भी दूर होजाती है ।

## होमियो पैथिक आश्चर्य नहीं है—

होमियो पैथिक आश्चर्य नहीं है और अमिहता के विरुद्ध भी नहीं है जो बात कि पहले हमने देखी नहीं है इसलिये वह बात मूठो होगी इस का कोई सबब नहीं है । जैसे किसी मनुष्य से रेल अथवा तार के जारी होने का हाल कहा जावै कि भाफ पानी और धुआं के जोर से चलती है और तार यिजली के जोर से इधर से उधर कपड़े पहुचते हैं तो कभी कोई विश्वास न करेगा परन्तु जब जो चीज आँखों से देख रहे हैं उनको मूठी नहीं कह सके जिस बात को कि हमने फल इसफर उठा दिया या उसी को आज प्रत्यक्ष देखकर सत्य मानना पड़ता है यह हमेशा समझना चाहिये, कि अमिहता और ज्ञान धीरे धीरे उन्नति की सीढ़ी पर चढ़ रहे हैं ।

## विश्वास करना होमियो पैथिक नहीं है—

जिन लोगों का ख्याल ब्रह्मण हुआ है कि होमियो पैथिक का इलाज विश्वास अथवा कल्पना के ऊपर है उनको यह ख्याल करना गलत है । ब्रह्मण का जो गुण है वह दीर्घ समय पर पहुचने पर



जरूर अपना गुण करैगी। जैसे गोदी का अज्ञान बालक और जो विमार अपना बुरा भला नहीं जान सका उस को होमियो पैथिक दवा से जरूर फायदा होता है। दूसरे गाय भैंस आदि घेजवान पशु जोकि धोखे नहीं सके वहभी ठीक चिकित्सा करने से और होमियो पैथिक दवा देनेसे अच्छे होसके हैं और जो लोग होमियो पैथिक इलाज के ऊपर किञ्चित् मात्र भी विश्वास नहीं रखते वहभी इस दवा से पूर्णरूप से आराम होजाते हैं परन्तु विश्वास होने से ही फायदा नहीं होता किन्तु दवा खाकर आराम होने से ही होमियो पैथिक पर विश्वास करने लगते हैं।

**पथ्यका विचार होमियो पैथिक नहीं है।**—जिन लोगों का ख्याल है कि होमियो पैथिक के पथ्य कहे हैं इसी से आराम होता है। यह सर्वथा मूढ़ है। क्या पथ्य का विश्वास करने से हैजा, गठिया, पेचिस, खाँसी, आदि आराम होता है कदापि नहीं। स्वस्थ का विगड़ना ही रोग है और स्वस्थता ही स्वाभाविक अवस्था है। अपथ्य और अत्याचार करने से ही विषम रोग भोगना पडता है। इसलिये जितना बीमारी की हालत में मनुष्य अपनी स्वाभाविक अवस्था में रहेगा उतना ही जल्दी बीमारी से अच्छा होना सम्भव है। इसलिये बीमार को चाहिये कि घेर से हजम होने वाली चीज और सुगन्धित वस्तु मसलन् गुलाब आदि का व्यवहार न करे और रात में घन विश्वास भयवा खैहसन कपूर, गरम मसाला इलायची आदि का खाना स्वाभाव के विरुद्ध है।

**सुस्थ शरीर में होमियो पैथिक औषध बहुत लोग उपहास भयवा हँसी करके यह कह देते हैं कि हम एक चीशी होमियो पैथिक दवा की खार्जाप परन्तु हमारा कुछ नहीं होता किन्तु हमारा कहना इस के जवाब में यह है कि अगर कोई आयुर्वेद**

स्वस्थ शरीर में तीन-छ-पा दो सौ नम्यर की दवाई को एक शीशी सा जाय तो उन को उसी थक तेज लक्षण प्रकाश नहीं हो सका परन्तु यह जरूर क्याल रहे कि कुछ न कुछ जरूर बसर करैगी। पीडा के समय शरीर की उच्छेजना जरूर बढ़जाती है ऐसी हालत में थोड़ी मात्रा दवाई अपना बसर जरूर दिखाती है और स्वस्थ शरीर में उच्छेजन शीघ्रता गुण्य नहीं रहता है इन्हीलिये इतनी थोड़ी मात्रा औषध स्वस्थ शरीर के ऊपर अपना कोई बसर नहीं दिखा सकती यह बात अच्छी तरह समझने के लिये दो चार उदाहरण भीचे लिखते हैं।

( १ ) मसलनु दिन के समय सूर्य का प्रकाश हम अच्छी तरह देख सकते हैं। परन्तु जब कि आँखों में पीडा हो अथवा धुन्धमे आगई हों तो सूर्य के तेज को आँखें देख सकती हैं कदापि नहीं इन्ही तरह दवाई का फायदा भी ऐसीही है अच्छी अवस्था में जो दवा सेवन करने से कुछ फायदा नहीं दिखाई देता इसी तरह बीमारी की हालत में शरीर की उच्छेजन शीघ्रता गुण्य बढ़-जाने से बड़ी दवाई बहुत जल्दी फायदा पहुँचाती है।

( २ ) दूसरे याजू अथवा रेत के ऊपर या पत्थर के ऊपर धीज डालकर फलखे सफने की इच्छा करग मूर्खता है इसी तरह स्वस्थ शरीर में थोड़ी मात्रा दवाई देकर फल मिखना असम्भव है परन्तु क्याल करिये कि थोड़े से धीज को अच्छे खेत में डालने से फल मिखने की उम्मेद होती है। इसी तरह थोड़ी मात्रा दवाई से काम लेने के लिये उस दवाई का साफ र लक्षण शरीर में मौजूद रहना उचित है।

( ३ ) जैसे चुम्बक पत्थर की आकर्षण शक्ति लोहे के साथ है। वैसे ही रोग के साथ औषध की आकर्षण शक्ति है। कदापि आप चाही के ऊपर चुम्बक पत्थर लगा कर यह फलना चाही

कि इस में आकरपर्या शक्ति नहीं है यह सर्वथा मिथ्या है।  
 वैसेही स्वस्थ शरीर में पेकोनाइट नम्बर ३० डायब्यूशन देकर  
 यह कहो कि फल नहीं हुआ यह कहना भी अनुचित है।  
 क्यों कि छोटे में शुम्बक लगादे तो फौरन सँचोखगा परन्तु  
 चाँदी को नहीं इसी तरह तैज नाडी आदि ज्ञाप्य देखकर पेको-  
 नाइट देओ तो फौरन उसको फायदा दिखाई दगा।

### होमियो पैथिक का सुभीता ।—होमियो पैथिक

मत के अनुसार इलाज कराने में सुभीता भी बहुत है। इस से थोड़े  
 दिन में ही आरोग्य होता है। और फट तथा खर्च कम पड़ता  
 है। पेमरीका आदि स्थानों में जितने होमियो पैथिक और पेसो-  
 पैथिक अस्पताल हैं। वहाँ सब चिकित्सा का हाथ देखकर यही  
 निश्चय कर चुके हैं कि होमियो पैथिक इलाज से बहुत थोड़े  
 दिनों में आराम हो जाता है। और एक घण्टा आराम होजाने से वह  
 बीमारी बुधारा जोर नहीं करती है। अथवा बीमारी फिर खूट-  
 कर नहीं आती है। इस मतके इलाज में दस्त कराना अथवा  
 कै कराना या खून गिराना आदि दुर्वर्ध करने वाले उपाय  
 बिलकुल नहीं है। रोगी को फट दूसरे इलाज में जियादा  
 होता है। एक तो रोगी वैसे ही अपनी पीडा के कारण दुखी होती  
 ही है दूसरे वह जायके और कड़वी दवा पीनी पड़ती है  
 ऐसे कष्टों से बचने के लिये होमियो पैथिक इलाज बहुत अच्छा है  
 दूसरा सुभीता इस में बड़ा भारी यह है कि चाहे यथा हो या  
 बूढ़ा हो वदजायका न होंगे के कारण सुगमता से पी खता है। ती-  
 सरा धमी हो या कफ़ाज दवा सस्ती होनेके कारण सब कोई ख-  
 रीव कर अपना इलाज सुगमता के साथ करा सके हैं। होमियो  
 पैथिक इलाज से जो बीमार अच्छा होजाता है उसका आराम  
 स्थिर और निश्चित है। नये और पुराने दोनों रोगों के लिये

होमियो पैथिक इलाज बहुत अच्छा है। देजा के समान तरुण और जल्द मार डालने वाला दूसरा और रोग नहीं है। ऐसी मरणात्मक बीमारी का इलाज भिवाय होमियो पैथिक के और दूसरा नहीं है।

**होमियो पैथिक भविष्य**—सत्य की हमेशा जय होती है जिस का मूळ सत्य है उस को जय खाम जरूर होती है। इसी तरह होमियो पैथिक चिकित्सा बहुत से विद्व और विपत्ति उठाकर अपने सत्य से स्थिर है। और इस का प्रचार देश देशांतर में प्रतिष्ठित फैलता जाता है। पहले जो लोग होमियो पैथिक को अपना बुद्धमन जानते थे वही लोग अब इस को मित्रता से देखने लगे हैं। और इस होमियो पैथिक की प्रशंसा करने लगे हैं। होमियो पैथिक ने जैसी प्रशंसा इन थोड़े दिनों में प्राप्त की है इन्ही से उम्मेद की जाती है कि थोड़े दिनों में यह होमियो पैथिक अच्छी चिकित्सा की गणाली पाह खाने लगेगी और स्थिर होगी।

**स्वास्थ्य सम्बन्धीय नियमावली**—बीमारी होने पर दवाई देकर मिथारण के अपेक्षा बीमारी न हो ऐसा उपाय करना उचित है। पाप, अत्याचार करने और शारीरिक नियम पालन न करने से एक नियम विधि न जानने से रोग का विप-गम फल भोगना पड़ता है। सर्व साधारण को स्वास्थ्य रक्षा के नियम जानना और उन के अनुसार चखना उचित है। स्वास्थ्य रक्षा के नियम पालन करने से अक्सर रोग के मरणात्मक रूप से बच जाते हैं, शरीर बखबाह होता है और अकाल मृत्यु भी कम हो सकती है। इसी लिये स्वास्थ्य रक्षा के प्रभाग विषय नीचे लिखते हैं।

हमारे देश में विजायती सभ्यता के साथ साथ रोगों की संख्या भी बढ़ रही है। मनुष्य की पहली और स्वाभाविक

अवस्थाओं में रोगों की दशा ऐसे विस्तार को नहीं पहुंची थी। हम लोग जितनेही सफ्यता के अभिमान में फूले फिरते हैं। उसी हिंसा से कठिन कठिन रोग आकर हमारे समाज में घुस कर हमारी सुख स्वच्छंदता को छीनते एवं उस के बदले में दुःखशोक और विषाद फैलाते हैं। हमारा जीवन ज्यों सफ्यता की उन्नति के साथ क्रमशः स्वाभाविक से अस्वामिक दशा में आता जाता है। योंही हमें भी जैसेही घनाघटी उपायों का अतल्लम्बन करके शरीर की सुख स्वच्छंदता बनाये रखना चाहिये हम आज कल इनघनाघटी उपायों के अघर्षयनमें भी अधर्रा और आलस्य कर रहे हैं इसी से हमारे देश में स्वास्थ्य शरीर मनुष्य नहीं है ऐसा कहना भी अशुक्ति नहीं है।

हम लोग बहुत से कार्य ऐसे ले बैठते हैं जिन में शरीर का चलाया बंध कर के केवल मस्तिष्कही चलाना पड़ता है। परन्तु यदि शरीर को स्वस्थ रखना हो तो हमें घनाघटी कसरत करनी चाहिये। किन्तु कर्तव्य कर्म समझ कर भी हमारे देश में ऐसे कितने मनुष्य हैं जो नियमित रूप से कसरत करते हों !

### आहार या खाना ।

आहार छोड़ कर जिन्दगी नहीं रहसकी जय लडका पैदा होता है तो धरती पर गिरने के साथही माका दूध पीने लगता है। आहिस्ते आहिस्ते जब उसकी उमर बढ़ती है तो शरीर की पुष्टता के लिये यहुत तरह की चीजें खाकर समजता है और पूरी उमर को पहुंचता है। और अस्त में खाने की ताकत घटजाती है उस वष्त जिन्दगी का चिराग युक्त जाता है। खाने की चीज जब पेट के भीतर जाती है तो उस के पचाय करने को दो तरह की तरकीबें करनी उचित हैं। पहिला तो पकाना दूसरा चयाना। खाने का उद्देश्य यह हैकि भोजन कीहुई चीज पचकर खून के साथ एक होकर शरीर के रोजाना खर्च को पूरा करे। जोखाना नहीं पचता है उहमे शरीर के खर्च की पूर्णता अच्छी

तरह नहीं होसकी और खाना शरीर से अलग रह कर फोरे तरह की घिमारी को पैदा कर देता है। इस्से भोजन की चीजे अच्छी तरह और होशयारी के साथ बनाई जायें इस का ध्यान रखना चाहिये ज्यादा अग्नाज से, घी, खहसन, व्याज, गरममसाखा मिले हुये भोजन से पतले दस्त आने की बीमारी होजाती है और पचने की ताकत कमती होती है। खाने की चीजे बहुत हौखे हौखे चबा कर खाना चाहिये खाने की चीजे अच्छी तरह चबाई न जायें तो वह मुंह की छारके साथ अच्छी तरह पर मिछ गहीं सकी इस लिये पचने में टकाघट करेगी आज कख प्राय' जो अम्ल रोग होता है उस का कारण अखी भोजन करनाही है।

हम खोगों के खाने की असख चीजे रोटी तथा चावल है इस लिये गेहूं व चावल खूब साफ अच्छा होना चाहिये दोनों वक्त चावल खाने के वदखे एक वक्त रोटी खाना घुरा गहीं खास कर मैकेरिया फैली हुई अगह में घहुतों की राय है कि चावल की जगह रोटी खाना अच्छा है। मात से रोटी ज्यादा पुष्ट है वगिस्वत मैदा के आटे की रोटी अच्छी क्योंकि आटेमें चोकर अथवा सुसी मिले रहने से कोष्ठ को साफ रखती है रोगी को पेसी देर से पचने वाली रोटी का आहार देना उचित नहीं।

दाख तरकारी सब्जी वगैरह भी हम खोगों के खाने की चीजे है। बीमार को उरव की दाख गहीं देनी चाहिये सुग मसूर घंट मटर की दाख उम्दा है दाख हम खोगों के लिये खास पुष्ट करने वाली खाने की चीजे है। क्योंकि मांस में जैसा एक प्रकार का अघाअर से निकला गुमा पदार्थ रहता है वही दाख में भी मौजूद है। पेट की बीमारी में दाख नहीं खाना चाहिये।

दोयम मांस उत्तम खाना है असावह इसके मछली मछला पुष्टार्थ का खाना है मछली का सोरवा [ रसा ] खून को पदाथ

है परन्तु रोगी के लिये छाटे छोटे [ फोड़े ] और [ मागूर ] मच्छी का सोरवा देना चाहिये बहुत बड़ा छिन्नकादार अथवा चोटीदार और बड़ी धींगा मच्छी रोगी के वास्ते नहीं देना चाहिये क्योंकि यह बहुत देर में इजम होती है । \*

तरकारियों में बहुत सी पुष्ट और खाने के फायिद हैं इङ्गलैंड वंगर देशों में हैं जहा कि केवल मांसाहार चला हुआ है व भी साली माम की जगह सच्ची तरकारी अधिक खाने के लिये खूब एक चख होरही है । मालू परबल फषा केला भरगी फटहरकी बीज गूबर आदि तरकारियों में अच्छी हैं कभी कभी कडवी चीजें भी खाना अच्छा हैं । पत्तीके साग के किस्म की चीजें बहुत खाना अच्छा नहीं है परन्तु उसमें खार रहने के समय से कभी कभी हम खोगा को साग खाना चाहिये । रोगी के लिये साग पथ्य नहीं ! फलों में अनेक पाने लाभक उपकारी हैं । जैसे आम नारियल फटहर केला फाला आमून पपीता यागी अड खरदूजा बेल घगैर नारियल सुख जाने पर देर से पचता है ज्यादा फटहर खाने वाले को पेट की बीमारी होती है ।

दूध बहुत उत्तम खाने की चीज है । ससार में दूध छोड़कर दूसरी फोड़े ऐसी चीज नहीं है कि जिसे खाकर आदमी हमेशा जिन्दा रह सके । दूध में हम खोगों की जरूरत के लायक सब चीजें बहुत उमदा तरह से मिली हुई हैं गौ का दूध हम लोगों के देश में प्रचलित है दूध इतना उपकारी और जरूरी चीज

---

\* सर्व साधारण से प्रार्थना है कि जो घात ऊपर मच्छी और मांस के धारे में लिखी गई है वह उष्यजाति के इस्तेमाल करने के वास्ते नहीं है क्योंकि फिताव के पहने वालों में से जिनके वास्ते यह फिताव बनाई गई है बहुत ऐसे हैं जो इन चीजों का इस्तेमाल करते हैं ।

है कि इस लिये हम लोगों के देश में गौ पूजा जाती है पश्चिम  
अथवा सासी की यीमारियों में यफरी का दूध फायदे मन्द है  
घरों के हक में मा का दूध जैसा उपकार करता और  
जल्दी से पचने वाला है वैसे दूसरी चीज नहीं है ।  
जब मा के स्तन में दूध नहीं रहता तब गर्भी का दूध या गाव का  
दूध पानी मिलाकर देते हैं अफसर दूध के द्वारा से सकामक  
यीमारी बहुत जगहों में फैलती दिखाई दी है । दूध से बहुत तरह  
की और पुष्ट करने वाली चीजें तैयार हुमा करती हैं उनमें से  
माखन घी वगैर उम्दा चीज हैं ।

हम लोगों के देश में मास कछ मास खाया दिन प्रति दिन  
चढ़ती पर है । इसमें शक नहीं कि मास एक उम्दा चीज है क्यों  
कि जल्द पचकर थोड़ी खुराक में ज्यादा ताकत पैदा करता है  
मास इतनी उम्दा खाने की चीज होने पर भी दो कारणों से उस  
से जहर का फल पैदा होता है । पहले जैसा जैसा मांस का खावेना  
पद सब जागते हैं । कि याज वफै जो मास बजारों में बिकता  
है वह ऐसा खराब होता है कि खाने का विष नहीं होता  
इच्छेण्ड में इस तरह का मास खाने के समय से जो कठिन  
यीमारियां देखने में आती हैं, हिन्दुओं के यहां मास खाने के  
वह कई तरह के फायदे जारी रहने के समय से यह सब बुराईयां  
देखने में नहीं आतीं । दूसरा ना पचने वाला मास तैयार करता है ।  
हम लोगों का कसब यकीन है, यकीन फाहेको भूख कदना चाहिये,  
मांस तैयार कराने के साथ घी, मसाला, प्याज वगैर  
चीजें भी बेमंदाज मिला देते हैं बयाल करना चाहिय कि ऐसी  
ऐसी चीज जरूर बुराई पैदा करेंगी ?

दो वफै असख भोजन और दो मरतया \* जलपान कर लेगा

\* धमाखियों में थोडा सा खाने को साकर ऊपर से पानी  
पीने को जलपान कहते हैं



हर एक मनुष्य को बेहतर होता है जल पान के साथ मीठी चीजें अधिक न खाना चाहिये, जल पान के समय फल फव्व और समय अनुसार पूरी, कचौरी, दाखमोठ, चिड़वा, अथवा चिरया, छाषा अथवा खीर घनैर भी उत्तम है। आहार के समय ऐसी जगह बैठे कि अहा कोई दूसरा गैर न होवे। दूसरे हर रोज ठीक समय पर भोजन करना उचित है भोजन के घण्ट में गडबड न करने से अक्सर खन्द बीमारियों के हाथ से छुटकारा हो सकता है।

खाने के बाद दात और मुह को अच्छी तरह से साफ करना चाहिये। खाई हुई चीजों में से कोई चीज अगर दातों में रह जावे तो मुह महकने लगता है और दातों को घरघाव कर देता है दातों के लिये उचित ब्रश नहीं रखने से आज का घोड़ी ही उम्र में दात गिरते हुए देखने में आते हैं। दातुन करना सबों के लिये उचित और ठीक है। खास कर जिन के दातों की जड ढीली पड गई हो और खून बहुत गिरे उनके लिये दातुन करना बहुत जरूरी है।

**पानी अथवा जल**—ज्यादा भिक्वार में साफ पानी त्रिजिन्गी नहीं रह सकी है साफ पानी बिना आज कल खाकर हैजा घनैर मारी मारी फैलने वाली बीमारियों की ज्य दती होती दिखाई देती है। उम्दा साफ ताखाव इस बेश में ना है ऐसा ही कहना ठीक है। गुजरे हुए जमाने के पोखर और तलाव फुल तो सूख गये और कितने ही मैले होकर बीमारियों की खान बन गये हैं अगर नदियों का पानी पीना चाहे तो सोना और सुगन्ध है। यदि घरसात में नदी होजाय तो घोड़ी ही कोशिश में यह साफ सकता है। उत्तर पश्चिम देश में

में लाते हैं जिस तालाब में बराबर लोग गहाते और कपडा धोते हैं उस के पानी को पीने के काम में खाना उचित नहीं है पीने के पानी के लिये एक तालाब अलग छोड़ देना चाहिये जिस जगह साफ पीने को पानी ज्यादा न मिले यहा कूबां या दूसरे किसम का पानी गरम करके वाष्प रेत और फोयले के जरिये से साफ कर लेना चाहिये । इस तरह के नियम और सावधानी से रहने वालों को मैलेरिया और हैजे के पीछे में रहते भी रोग से बचते देखा गया है ।

**हवा अथवा वायु—**जिन्दगी के कायम रखने के लिये पानी की तरह बखती हुई साफ हवा का सेवन करना एक असल उपाय है साफ हवा बहुत आसानी से हम खोग थोडा सा परिश्रम कर बिना खर्च गच्छी तरह से पा सकते हैं । जीव जन्तु अथवा पेड़ पत्ता सब जाने से तथा स्वास के जरिये अफसर हवा खराब हुमा करती हैं और बहुतसी साफ हवा के साथ मिल कर खराब हवा अफसर शुद्ध होती है क्या अमीर क्या गरीब सबों को हर रोज साफ हवा लेनी चाहिये । बरिख खोग बराबर बाहर मैदान में काम काज करते रहते हैं इस लिये उन खोगों को साफ हवा मिलने में मुदिकल नहीं होती है हमारे देश में एक घर में और एक ही बिजाधने पर कई आदमी सो रहते हैं और घर के भीतर साफ हवा की आसुरफ्त के लिये दरवाजा या खिडकी नहीं रखते यह कायदा ठीक नहीं है । हर मनुष्य स्वास के साथ हर घण्टे चौदह १४ घन फीट हवा लिया करता है इस लिये इस घात पर यथासु रख कर एक ही घर में कई आदमियों को सोने देना चाहिये सरकी के डरसे भी इस देश में बहनों के घर के दरवाजे और खिडकिया और छोटे मोथे तक को बन्द करके बंदे पोठे घोर को लेकर सोते देखा गया है । ऐसे घरों की हवा

थोड़ा देर में श्वास की आमद रफ्त से जहरीली होजाती है ऐसी हालत में घरकी दीवारों में कम से कम दो खिडकी अरु होनी चाहिये ।

रहने का घर सूखा और साफ रखना चाहिये सोने का मकान तर और भीगा रखने से घात और खासी घगैर की सब्धिमारी पैदा होती है ।

**कसरत**—कसरत से बदन जोराघर होता है और रोग पास नहीं आने पाता और मन में फुरती होती है । जिन्दगी बढ़ने के लिये कसरत बहुत जरूरी है । मिहनत बिना बदन के हिस्से सुस्त होजाते हैं और दौरान खून यानी चलना फिरना खून का काम होजाना है खासकर खून का आना जाना धीरे से होता है सुस्ती इफीकत में रोग की जड है इसी मध्य से इस देश के गमीर उमरा या रईम अनेक रोगों के अस्पताल बन बैठे हैं । कसरत से बदन के प्रदे मजबूत और बख्तान होते हैं दौरान खून याभी खून का चलना फिरना और इषाम की आमदरफ्त बढ़कर देह की फुल खराधी पसीने की राह दूर होकर पाचन शक्ति को बढ़ाकर भूख को बढ़ाती है ।

जिनसे अिस कधर मिहनत और कसरत होसके उसी तरह की कसरत करना उचित है । टहलगा सब से बडी कसरत है क्योंकि सयों की सधियत के माफिक और सहज है । सब हालत और सब उम्र वाले आरुभी राजिव अशज से टहल फिरकर बदन के माफिक कसरत कर सके हैं । इसके अलायह घोडे की सधारी, दौडना, मुग्दर हिजाना, और कुस्ती घगैर भी उम्दा कसरत हैं ।

बुखला और रोग की दशा में कसरत करना उचित नहीं है रोगियों को होशयारी से कसरत करना चाहिये धीमार गादमियों

के लिये तकलीफ देने वाला कौटुंबिक मसखन टहलना, फिरना, और तेज हवा में जाना सखत घुसा है इस देश के आदमी जरासी उम्र बढ़ने से कसरत करने को शरम की बात समझते हैं पर यह विषयकुल मूल है वलकि उम्र बढ़ने के साथ हम लोगों के शरीर की कसों की बाल जितनी बढ़ होती है और बाहर की मिहनत देने वाले काम कम होने पर घर में काम करने से मन की धिन्ता बढ़ती है उतनी ही कसरत करके शरीर को तेज और मन को शुध रखना चाहिये ।

**पोशाक** - तरह तरह की पोशाक पहनना सभ्यता के अनुकूल है सरदी और गरमी में आराम देना यही पोशाक का मतलब है, ऋतु बदलने के अनुसार होशयारी से कपडा बदलना अच्छा है इस देश में गरमी मुख्य है हम लोगों के देश में घरावर गरम कपडे से ढके रहने की जरूरत नहीं है परावर गरम कपडा जैसे फलाछैन और मोजा वगैरह से घदन ढके रहने से घदन में शीत सहने की ताकत कम होजाती है इसी लिये बहुत मामूली समय से भी सरदी, फासी और गले के दर्द वगैर की बीमारी होजाती है ।

जोरावर और मिहनती लोगों के घनिस्त्रत रोगी और बुचके, जवान आदमियों के घनिस्वत यूढे और लड़के लोगों की हिफाजत के लिये गरम कपडे की जरूरत है फिर भी सरदी के दरमे ज्यादा होशयारी जरूर है या इस लिये घरावर फलाछैन वा इस्तेमाल और घर का दरवाजा भी बंद रखना घुसा है गरमी में नूती कपडा काढे में हस्व हैसियत गरम कपडा व्यवहार करना उचित है ।

इस देश की एक वुरीति का हाल लिखना पडा किमी फिस्म का कपडा क्यों नहो परावर उसको साफ रखना आदिये सभ्यता

थोड़ा देर में श्वास की आमद रफ्त से जहरीली होजाती है ऐसी हालत में घरकी दीवारों में कम से कम दो खिड़की जरूर होनी चाहिये ।

रहने का घर सूखा और साफ रखना चाहिये सोने का मकान तर और भीगा रखने से घात और सांसी बगैर की सब्ब विमारी पैदा होती है ।

**कसरत**—कसरत से बदन जोराघर होता है और रोग पास नहीं आने पाता और मन में फुरती होती है । अिन्दगी बढने के लिये कमरत बहुत जरूरी है । मिहनत बिना बदन के हिस्से सुस्त होजाते हैं और दौरान खून यानी चळना फिरना खून का काम होजाता है खासकर खून का आना जाना धीरे से होता है सुस्ती हफ्तागत में रोग की जड है इसी सबब से इस देश के अमीर उमरा या रईम अनेक रोगों के अस्पताल घन बैठे हैं । कसरत से बदन के पट्टे मजबूत और बलवान होते है दौरान खून यानी खून का चळना फिरना और श्वास की आमदरफ्त बढकर बेह की कुल पराधी पसीने की राह दूर होकर पाचन शक्ति को बढाकर भूख को बढाती है ।

जिससे अिम्न फर्दर मिहनत और कमरत दोसके उसी तरह की कसरत करना उचित है । टहलना सब से बडी कमरत है क्योंकि सघा की तथियत के माफिक और सहज है । सब हालत और सब उम्र वाले आदमी गजिब अबाज से टहल फिरकर बदन के माफिक कसरत कर सकते हैं । इसके अलावा घोंडे की सवारी, दौडना, मुग्दर दिखाना, और फुरती बगैर भी उम्दा कमरत हैं ।

गुनखा और रोग की दशा में कसरत करना उचित नहीं है रोगियों को दौशवारी से कसरत करना चाहिये धीमार गादमियों

ध, स्नान के करने के बाद ठहर कर गोजग करना चाहिये । स्नान इस बेरा में तास बार हिन्दुओं के लिये रोजाना काम है पहले धर्म के नाम से यदुत से घदन के आराम के लिये बाँते गाभी जाती थी पर अफसोस की जगह है कि विद्या के दोष में आज फल धर्म का घदन दीखा हो पडा है और शरीर की नियमावली की प्रायदयकता और उप्तमता आज तक साधारण लोग नहीं समझ सके हैं । वस इस एक स्नान, आहार, वल सम्बन्धीय शरीरिक नियम के नहीं मानने का घुरा फल देखा जाता है ।

**होमियो पैथिक दवाइयों के विषय में नियमा-**

**वली ।** — होमियो पैथिक की दवाएँ विद्यास्ती और रसायन जानने वाले दवा फरोश के पास से खरीदी चाहिये । इन औषधों में इन पढे दवा बेचने वाले हम लोगों से छिपा कर तरह तरह के फरेव कर लिया करते हैं और एक दवा के वदले दूसरी दवा दे दिया करते हैं । इस फरेव के सघष से होमियो पैथिक दवा के फल में यदुत नुकसान होता है और चन्द्र वक विकिरसकों की भी शिकायत होती है और रोगी प्राण खो बैठता है ऐसे भोखे घाजों से सब सावधन रहे ।

होमियो पैथिक दवा आने के लिये तीन तरह की होती है । पहले टिञ्जर या अर्क दूसरा ग्लेविठल पीन्यूअल यानी छोटी पडी गोली और तीसरा ट्राईट्टेराग यानी चूर्ण ।

( १ ) टिञ्जर या अर्क ! कर्प्ता की जड, पत्ते, छाल, और फल वगैर को ( अलकोहल ) शराब में गिगोकर वे मिजाबट का अर्क या मदर टिञ्जर तैयार होता है मदर टिञ्जर की १ दूद लेकर उस में ८ दूद अलकोहल मिजागे से फस्ट डेसीमल, ट्राई-ल्यूरा ( एक दश गलष ) फल बनता है और ८८ दूद अलको-

के घस होकर हम लोगों को जय घर में बाहर जना पड़ता है तो उस घक घदा ढाक कर बाहर निकलते हैं गरमी में पर्नीने से कपड़ा जो घदबू दार मैला हो जाता है वह किसी से छिपा नहीं है आम तरह से गरीबी हाखत के सधष से कम स कम सातधे दिन धोरी को धोने के लिये देना असभव होता है घदबूशर कपड़े घट्टम दिनों तक पहने रहने में जो यदन में घीमारी, पैदा हो जाये तो इस में आश्रय भी क्या है !

इस हाखत में पहनने के कपड़ों को साफ पानी में खूब धोकर धूप में सुखा कर काम में लाना चाहिये । मैलेपन का विचार इस देश में दिन दिन तरकी पर है ।

## स्नान ।

स्नान यानी नहाने के फायदे ।—स्नान करना उचित है यह बात यहाँ वालकों को सिखलाना न पड़ेगा नहाने से शरीर ठंडा स्वस्थ और साफ रहता है । चमड़े के सुराख खुलजाते हैं यदन की यदबू रफे होती है और सरदी सहने की ताकत घदती है नहीं, तखाष, यगैर घट्टत जल में घदन डुया कर नहाना अच्छा है । जिस तरह हर रोज भोजन करने का समय मुकरर रहता है । उसी तरह से नहाने के लिये भी घक बांध देना चाहिये । नहाने के पहले खा लेना उचित नहीं दुधखे और रोगी को ठंडे पानी से नहाना नभे है । उन लोगों को पानी थोडा गरम करके नहाना चाहिये । निरोग घदन के लिये हर रोज ठीक समय पर ढंटे जल से स्नान करना चाहिये ।

नहाने के घक पहले धिर पर पानी देना बहुत जरूरी है, बाजे लोग पहले कागर पर पानी देकर नहाते हैं सो बहुत घुरा है अगर यदन में पसीना होये तो उस हाखत में स्नान करना घुरा

घादे तो दवाई अच्छी और असली होनी चाहिये। आज कल के दिनों में देखा गया है कि अक्सर दवाई खानों में घुरी दवाई मिलती है वह काममें लाई जाती है परन्तु वह दवाई अच्छी नहीं होती जिन खोगों का काम इलाज करना नहीं है और दवाई घनामा नहीं जान ले उा से दवाई खेना मुनासिब नहीं है। होमियो पैथिक दवाई खगाने के लिये रसायन शास्त्र और चिकित्सा शास्त्र में ज्ञान धर्म भीति सज्जन होना चाहिये ऐसे भावर्मी से होमियो पैथिक को बन-घाना चाहिये होमियो पैथिक दवाई देख कर यह कोई नहीं कह सका कि यह दवा असली है या नकली है। इस लिये घूर्त और आखाक खोग एक दवाई के बदले में दूसरी दवाई देते हैं। अथवा एक डायल्यूशन के बदले में दूसरा डायल्यूशन देते हैं। ऐसे खोगों के यहा सब दवा मौजूद न रहने से ऐसा करते हैं। इस लिये सब को चाहिये कि बहुत होशियारी से और विश्वास के साथक दवा खेचने वाले से दवा खरीद करे होमियो पैथिक इलाज की निम्दा का कारण खराब और असलीदवा न पहुचने से ही आजकल होता है।

**मात्रा**—पहले तो कौन डायल्यूशन काम में लाना चाहिये इस बात को ठीक करखेना उचित है। यह करने के लिये बहुत अभिज्ञता और बहुदर्शिता की जरूरत है हर तरह की बीमारी में नीचे या बीच का डायल्यूशन जैसे १, २, ३, ६, और १२, और पुचनी बीमारी में ३०, और १०० या २०० से भी जियादा डायल्यूशन काम में आता है। पूरी उम्र के रोगी के लिये १ बूँद अर्क किसी डायल्यूशन का क्यों न हो १ छोटा साफ पानी में मिलाकर एक बूँद देना चाहिये - उम्र की कमी के हिसाब से एक बूँद को दो या चार हिस्से में कर देते हैं।

छोटी गोली ४ और बड़ी गोली १ या २ ट्रिट्युरेशन या सफ-



हल मिलाने से पहला सेंटसीमल डाईव्यूशन ( पहला शततमिक ) क्रम तैयार होता है । यह पहला दशमिक या शततमिक तरीके का १ वृद्ध लेकर उस में ९ वृद्ध या ९९ वृद्ध अक्षकोहल मिलाने से दूसरा दशमिक या शततमिक क्रम तैयार होता है । इसी तरह से तीसरा चौथा १००, २००, आदि बहुत से क्रम बनते हैं । अर्क साफ बरतन में या साफ पानी में मिला कर घीमार को पीने को देते हैं ।

( २ ) ग्लोब्यूल यानी छोटी गोली और पी-ल्यूल यानी बड़ी गोली । ग्लोब्यूल देखने में सरसों की बराबर और पिल्यूल मटर की बराबर होते हैं दुग्ध शर्करा या साफ चीजों के जरिये से सब गोखियां पहले बनती हैं बाद जो दवा देनी जरूर हो उस के अर्क में अच्छी तरह से मिगो लेते हैं घर के इलाज करने अथवा जहां साफ पानी नहीं मिल सका वहां इन गोखियों से बड़ा काम निकलता है सफर घूमने के एक गोखी साथ रखने और इस्तेमाल करने से खूब सुभीता होता है अच्छी तरह से अगर गोली रक्की जायें तो बहुत दिनों तक रह सकी हैं ।

ट्राईट्युरेशन या चूर्ण ।—चूर्ण जो दवा बहुत कड़ी और जल्द अक्षकोहल में घुल नहीं सकी जैसे सोना, लोहा, तांबा वगैर घातु और दूसरी चीजें दुग्ध शर्करा एक ( अथवा दूध से निकाली हुई शर्कर ) के साथ चूर्ण करके अच्छी तरह से मिला लेते हैं यह ट्राईट्युरेशन तैयार करने में बहुत मिहनत और हो-शियारी चाहिये ।

अकृत्रिम औषध ।—अगर दवाई से रोग आराम करना

मे से छोटा परथर का कटोरा या बमचे से रोगी को देना चाहिये । यह बमचा बड़े पात्र में कुवाना न चाहिये । दवाई पीने के बाद यह बमचा धोकर रखना चाहिये होमियो पैथिक दवाई व्यवहार करने के लिये साफ और सुधरा घर्तन होना चाहिये ।

**समय** अगर दिन में दो बूके दवा पीने की जरूरत होवे तो एक सुबह और शाम के बख्त पीनी चाहिये पुरानी बीमारी में सुबह शामही दवा पीना बहुत है अगर दिन में ३ बूके दवा पीने की जरूरत हो तो भोजन के दो तीन घंटा बाद दवाई की जा सकती है । हैजा आदि नये और जल्दी मारने वाले रोगों में रोग की हालत के अनुसार १ घंटा आध घंटे या १५ मिनिट पर भी दवाई दी जा सकती है ।

होमियो पैथिक मत के अनुसार दो दवा एक साथ मिखाकर नहीं की जाती जब एक दवा से सब लक्षण न दिखाई दे तो उस हालत में एक के बाद दूसरी दवा देनी चाहिये अथा सफ हो सके एक ही दवा से काम लेना चाहिये । होमियो पैथिक दवायें बहुत साफ और गन्ध रहित और जहाँ घूप न लगे ऐसी जगह में रखते हैं । कपूर सब दवाइयों को बिगाड़ने वाला है इस लिये जिस घर में दवा रखनी हो उस घर में कपूर न रखना चाहिये दवा खाने के समय साफ पानी और साफ चाँशी, मिट्टी या परथर के बरतन में दवा तैयार करना चाहिये और उस बरतन में किसी तेज तरह का मसाखा या गन्ध की चीज, खटाई, कपूर काम में न लायेंगे। दवा खाने के १ घण्टे बाद और १ घण्टा पहले कुछ खागा या तमाकू पीना मना है ।

बाहर इस्तेमाल के करने के लिये ये मिखा हुआ बर्फ काम न आता है । यह बर्फ बर्तन में से फाँसी जोशम, फनी खिनी मेंट फनी मजदम तैयार होता है । ८ दिरसा साफ पानी जैवग-

फ १ ग्रेन से जियादा गिकदार ( या मात्रा ) में न खाना चाहिये सड़कों के छिये आधी और चौथाई खुराक देनी चाहिये ।

मात्रा का पूर्ण प्रयोग - जरूरत के ग्राफिक और धीमारी की हासत देखकर कभी हर १५ मिनट पर कभी दिन में २, या ३ दफे और कभी ७ वें दिन में एक दफे दवा देनी चाहिये हैजा वगैरह सस्त धीमारी में आधा घटा या १५ मिनट पर दवा दी जाती है । पुरानी धीमारी में दवाई जितना कम दिया जाय उतना ही अच्छा है दवाई से फायदा धीज तो जैसे दस दफे दिया जाता था तो घटाकर हौले हौले कम करके बंध कर देना चाहिये ।

**औषधि पूर्ण बक्स** - हर एक गृहस्थ को चाहिये कि एक घफन दवाई से पूर्ण और उमके साथ १ किताब जरूर रखना चाहिये । और घफस के बन्दर सिवाय दवाई के और कोई चीज नहीं रखनी चाहिये । दवाई के घफस को बन्द करके रखना चाहिये और दवाई को हमेशा धूप और रोशनी तेज खुशबू से बचाना चाहिये । जिस शीशी से दवाई ली जाये उसका काफ फौरन बन्द करदेना चाहिये - अथवा एक शीशी की दवा या कार्क दूसरी शीशी में न खगाना चाहिये एसी हिफाजत न रखने से दवाका तेज गुण नष्ट हो जाता है ।

**दवाई व्यवहार करने के नियम** — दवा की गोली जब में घोखकर भी खासके हैं अथवा जवाग पर रखने से छुख जाती है । अर्क साफ पानी में मिलाकर इस्तेमाल करना चाहिये दवाई की दूह किस तरह से गिराई जाती हैं उसका चित्र पहले पत्रा में दिया गया है । जिस पात्र या घरतन में दवा बनाई जाये वह साफ और खुशबू से रहिन होना चाहिये । दवाई कांच या खीनी परधर या गाटी के घरतन में घमायी चाहिये । दवाई घन जाने के बाद परधर या कागज से ढाक देना चाहिये उस पात्र

दवाई क्रम	यानो डाइल्यूशन	४९ साइलिसिया	६ ३
३५	पलसिटिला	५० सखफर	६ ३०
३६	पडा फाइब्रम	५१ मिपिया	६
३७	फस्फरस	५२ सिना	३ २००
३८	वेखाडोना	५३ सिकेडि	६
३९	घ्रायोनिथा	५४ मिगिस फ्युगा	३
४०	भेराट्रिम प्लवम	५५ स्यावाइना	३
४१	भेराट्रिम मिरिडि	५६ स्पजिया	३
४२	माफ्यूरियसफर	५७ स्ट्रामोनियम	६
४३	मारफ्यूरियमसल्	५८ स्ट्रफिसेग्रिया	६
४४	मारफ्यूरिइस आयुड	५९ द्वेपारमल	६
४५	मसफस	६० हामामिक्सिस	३
४६	रमटफस	६१ हाइड्रोसिटिस	६
४७	खकेसिस	६२ हाईयोसायमस	६
४८	लाइफो पोटियम		

### वहुत जरूरी २४ दवाई

#### दवाइयों के नाम

१	मारसिनक	६	१३ पलसिटिला	६
२	मार्गीफा	६	१४ फोसफरस	३
३	इपीफा	३	१५ वेखाडोना	३
४	एफोनार्डिट	६	१६ घ्रायोनिथा	६
५	केमोमीला	१२	१७ भेराट्रिम	६
६	फफिया	३	१८ मारफ्यूरियस सल्	६
७	किलकेरीया फार्म	६	१९ रमटफस	३
८	कार्बोनेजिटविक्सिस	६	२० सखफर	६
९	प्याइंग	६	२१ साइलिसिया	६
१०	जखसीमीनिम	३	२२ स्पजिया	३
११	डासरा	६	२३ सिना	३
१२	गफसभोमिफा	६	२४ द्विपारमल	३

( *Olveoil* ) या गरी का लेज या मफलंग में एक हिस्सा वे मिला अर्क मिलाने से जैसा हो खोजन खेनीमेस्ट या मरहम तैयार होता है ।

जो दवाई हमेशा काम में आती हैं उन का सूचीपत्र नीचे दिया जाता है । और उस में जो ओ डायल्यूशन दिये गये हैं वह हमेशा इस्तेमाल किये जाते हैं । खास खास धीमारी में जो खास खास डायल्यूशन इस्तेमाल होते हैं उन के हाल उस धीमारी की जगह में लिखे जायगे ।

जो दवाई हर वख्त काम में आती हैं उनकी

### सूची

दवाई	काम	धानी	डायल्यूशन	१८	कालिघाई	कोमि	काम	६
१	औरम	६		१९	कोलचिकम		६	
२	भारसेनिक	६, ३०		२०	काखी हाइड्रो		६	
३	भार्निका	६		२१	फोफिया		६	
४	भाईरिस	६		२२	कैल केरिया कार्ब		६	
५	भारटिका	६		२३	कारघो भेजिटेविलिस	६	३०	
६	ईपिका	३		२४	कलोसिथ		६	
७	थूफेंसिया	३		२५	कौखिन् सौमिया		६	
८	इगनेसिया	३		२६	कैगाविस		३	
९	एकोमाइड	६		२७	फयान्यारिस		६	
१०	एन्डिमनियम ट्रांटे	६		२८	कोकुखस		३	
११	एन्डिमनियम क्रूड	६		२९	चाईना		६	
१२	एसिड फस्फरिक	६		३०	अठसी मीनम		३	
१३	एसिड नाईट्रिक	६		३१	डिजिटैलिस		३	
१४	एसिस	६		३२	इसेरा		३	
१५	औपयिम	३, ६		३३	डवकामारा		६	
१६	फयाममिखा	१२		३४	नफ्त सौमिका		६, ३०	
१७	काखि भाइयड	३						

ने के समय से पहले सोवे और रात के ३ घंटे तक अच्छी तरह सोकर ५ घंटे तक जागता रहे और पश्चात् पाँच घंटे के फिर सोवे और फिर निद्रा की कृति न हो या मन न मरे ।

पखसेटिखा—ज्यादा रात्रि जाने पर जिपादा भोजन करना बद्दहमी के सयव से निद्रा का न भागा किसी तरह निद्रा न माने और न सोने की इच्छा करे ।

सहकारी उपाय—शाम के बहुत गहाना, या ठंडे पानी से बदन पोंछना, सोने की जगह में हवा की सामवरफ्त होने देना, जिपादा रात में जिपादा खाने से बचे रहना, सोने से बाद घंटे पहलेही से मन स्थिर और शांत रखना, सवेरे उठना, कड़ी चारपाई पर सोना उचित मेहगन और कसरत करना बहुत जरूरी है । जन खोगों को रात में नींद नहीं आनी उन खोगों को ऊंचे तकिये पर सोना नहीं चाहिये । अगर नींद न पड़े तो एक अच्छी घास पर खूब ध्यान देने से तुरत नींद आयेगी ।

### ( २ अजनी यानी गूहरी )

लक्षण । आँखों के पलक की कोरपर पलक के बीच में फुफ्सी की तरह होती है और र्व तथा तकड़ीफ ज्यादा होती है पीव निकल जाने से आराम होजाता है ।

इलाज । पखसेटिखा भेष्ट औपच है । अगर गुहरी भीचे के पलक में होतो पखसेटिखा ज्यादा फायदेमद है । गुहरी होनेपर पखसेटिखा शुरू बालत में देने से नुपवनी है और न तकड़ीफ होती है यिखा किसी तकड़ीफ के आराम हो जाता है अगर प्रदाह रहे तो पखसेटिखा देने के पहले दो पप सुराफ एपग-गास्ट देना चाहिये ।

स्टाफिसोप्रिया । अगर दोनों पलकों में गुहरी हो अथवा ऊपर के पलक में दो और पके नहीं परन्तु सयव दा जावे एनी हानक

## बाहर लगाने की दवाई

- १ आरबीका
- २ कैगथरिस
- ३ हेमामेलिस

- ४ कैलैमठ्युखा
- ५ रसटफस
- ६ लिडग

### द्वितीयोऽध्याय. ।

#### नम्बर १ अनिद्रा ।

अक्सर यह किसी ग किसी रोग का साथी है । बहुत दिनोंसे नींद न आती हो तो शिमाग दुबड़ा होकर घातक फल पैदा करता है

**चिकित्सा**—बेखोडोना-सोने की अच्छी तरह इच्छा रहने पर भी न सोना, अथवा शाम के एक गंदि मालूम होती हो और निद्रा न आती हो, मामसिक चिन्ता, बेचैनी, और झूठा डर देने वाला हृदय, अथवा घुरे स्वप्न के कारण निद्राका न आना ।

**कौफिया**—मन में चिन्ता या उत्तेजना रहने पर या बहुतदिन तक रोगी की सेवा में रहने से और जागने से, साफ कारण न रहने पर बच्चों को निद्रा न आना ।

**अलसिमिनम**—छोटी नसों की उत्तेजना से नींद का न आना ।

**इगनेशिया**—कौफिया के बाद कभी कभी व्यवहार होता है उत्तेजना के बाद अयसाद होने पर अथवा नींद की हाजत में बेचैनी रहने पर रज, और फिर और दुखी होने के कारण से नींद का न आना ।

**नक्सभोमिका**—बहुत ध्यान से चिन्ता करना अथवा रात्रि जाग कर पाठ करना या बद्दजमी में ताफत कम होनेपर रात्रिको सो-

जो मिचलाना, कड़वा, स्रष्टा, या यद्बूलिय हुये डकार का भाग, छाती जखमा, जिहा में मैलापन, मुह का स्वाद विगड जाग, शिर में दर्द हाना, पेट बूझना, भोजन में अरुचि होगा, भोजन करने के बाद तकलीफ होना, कमी कषजियत, कमी जियादा वृस्त होगा ।

**कारण**—अपरिमित भोजन या तो ज्यादा भोजन करना अथवा भारी चीज खाना, शराब पीना, घे चचाये हुये और जखदी जखदी खाना, मन और शरीर की ज्यादा महनत, कसरत बंद कर देना, रात का जागना, दारदी का खगना अपने परिहार और गृहस्थ काम की बहुत चिन्ता करना आदि, कारण से यह रोग पैदा होता है । इस बीमारी के इलाज के एक ऊपर लिखी सब बातों पर ध्यान रख कर इलाज करना होता है । रोग का सधय बिना दूर किये हुये हजार तरह की दवा घेन से भी कोई फायदा दिखाई नहीं दे सफता ।

**इलाज**—शुरु हाखत में नफसयोमिका पलसेटिखा [ भारी चीज या घी, और लेख की घनी हुई चीज खाने से ] आइरिस [ कै, शिर में और पेट में दर्द ] आरसिनिक फलोसिन्ध [ फल, स्रष्टा चीज खाने से ] हाइ ड्रामटिस [ पाचन शक्ति कम होजानामे ] पुरानी हाखत में नफस योमिका, पलसेटिखा, हीपरसखफर, आयोनियां, कारघो वेजिटोबिलिस, फलफेरिया, सखफर, मरफ्यूरियस ।

**वर्षों के लिये**—फलफेरिया, इपिका, मरफ्यूरियस नफसयोमिका, पलसेटिखा, बुड्डों के लिये—कार्बगेज, नफस-मसघेटा, नैरेटा । खार्कोपोडियम गर्मघती स्त्री के वास्ते । आर-निगिक, कैरग, इपिका, एनाटिमफुड, क्रियाजौट, फाल फरस



ग स्टाफिसोप्रिया बहुत फायदे मद्द है और सजफरद्रेने से भी धार धार गुहेरी का होना बद्द होजाता है ।

ग्राफाइटिस । यार धार गुहेरी होना, और पक्षक के फिनारे म घाघ होना ।

**सेवन विधि**—शुरू हालत में एक एक घून् सवा तोखे पानी में तीन तीन घटा वाद एक एक खुराक देगा चाहिये पुरानी बीमारी होने से सुबह शाम दिन में दो खुराक देना चाहिये ।

**सहकारी उपाय**—गर्म पानी से सेकना और थोडा घडा होने पर पुकटिस घाघते हैं । अगर पक कर अपने आप फूट न जावै तो सुई से थोडा सा छेदपर पीध निकाल देना चाहिये । भाँख को थाप देना चाहिये जिस से काम से बच्चे और भाराम पाधे और रोशनी से बच्चे ।

### ३ बदहजमी ।

जिवन अग्नि की शिक्षा तुल्य है । जैसे धिगा लकड़ी के भाग नहीं जलती उसी तरह धिना भोजन के जीधन की अग्नि पृथ्ठ जाती है । जैसे भाग से ताप निकलती है उसी प्रकार वेह से भी ताप निकलती है । ताप जो खाने से निकलती है वह केवल वेह की रक्षा के लिये है । वेह में जो ताप रहता है और वेह परिश्रम करने से क्षय होजाती है उस को पूर्य करने के लिये भोजन का प्रयोजन है । जो स्वाभाविक क्रिया से हम खोंगों के खाने की बीज लोहू में परिणत होकर शरीर को वह पुष्ट करती है वह परिपाक क्रिया के धिगदने से जो बीमारी पैदा होती है उस बीमारी का नाम बदहजमी है ।

**लक्षण**—अवस्था के अनुमार हाल बदलने से बदहजमी के कई प्रकार के लक्षण दिखाने देते हैं । उन में से नीचे लिखे लक्षण अकपर नरेते जाते हैं—भूख का काम होजाण, घेटफूलना,

ज घिगडा जाये खाने पर भेजे में दर्द सब चीजें कटवी मालुम पड-  
ती हो, दर्द शिर में बहुत हो कम्ज, पाखागा सूना और सस्त हो।

**लार्डकोपोडीयम्—**। कमजोर पीमार को घद् हजमी  
और बेरी से हजम होना, खाने के घाद् गीद की ऐंड़ाई भाना  
पेट फूलना, दस्त साफ न होना । पेट फूलने और कब्जरहने से  
लार्डकोपोडियम और पेट फूलना और पेट की घीमारी, में कार्यों  
भोजिटेयिक्सि सपकारी है ।

**आरसिनिक** —फल और सट्टी चीज खानेसे यद् हजमी  
होना, खाने के घाद् जो मिचखाना, या कै होना, पेट में जखन  
मालुम होना ज्यादा पानी पीने की इच्छा होना धार धार में थोडा  
थोडा पानी पीना घेघेनी, पेट में मारीपन यागी परधर के सम  
मुख्य मारीपना मालुम घेना

**कपालेकोरिया कार्व**—कमर में धोती या पाजामा कडा घांध  
कर नहीं रख सके हैं मुह का सट्टा स्वाध रहना और सट्टाई सी  
कैफा होना, शिर में दर्द, दस्त का ज्यादा होना, थोडी मेहमत से  
यकन मालुम घेना ।

### खासी और कमजोरी ।

**सखफर**- यह दवाई पुरानी हालत में विशेष कर घयासीर  
रहने से लफल भोजिका के साथ मख सखफर काम में खाई  
जाती है । और दवाई देने के समय में यह सखफर कभी कभी  
एक एक छुराक देने से ज्यादा फायदा करती है ।

**सेवन विधि** - दिन में दो बफे, ।

**सहकारी उपाय**- इस घीमारी में नीचे लिखे हुये नियम के  
रूपर निगाह रखकर दवाई इस्तमाख करना चाहिये । ।

पलसेटिला ॥ मन की हाजत के कारण से नफस घोमिका [ कामकी फिक ] इगनेसिया, [ रजके सघष ] पेकोनाइट, चायना, अथवा, नफसघोमिका [ रात के जागने का सघष ] शरीर चयकार्पि नि सरण, जैसे पेट की शीमारी खून का आना, पेशाब के थाने से घदन की ताकत जानी रहना चायना, ऐसिड फस्फरिक, फौसफरस, कारबोभेजी, कैल्फेरिया । ठंडा लगने से-पेकोनाइट, आरसिनिक, मरफयूरियस, पलसेटिला । नियम क्लिष्ट गोजन करने से-ऐन्टिमक्रुड, नफस, इपिका, पलसेटिला ।

शराब पीने से—कारबोभेजिटिबिलिस लकसेसिस, नफस सलफर, चाइपीगेने-फेरम, अथवा शूजा । तमाखू पीनेसे कौकूलस इपिका, नफस, पलसेटिला, कृष्णकी, भूय काम लगनेसे कलकोरिया, चाइना, ज्यादा और ये वक्त भूख लगना चाइना, सीर्गा । जी मिचछाना, इपिका एन्टिम, कृष्णकी, नफसघोमिका, जलसीभीमिम आरसिनिक, मुह में पानी आना, आइभोगिया, लाइको पोटियम, नफसघोमिका, सुबह के वक्त मुह में सड़ा या कड़वा स्वाद, पेट में दर्द और गारीपन, मुह से पानी आना खास कर शराबियों को, दस्त कड़ा वस्त जाने की हाजत घराबर घनी रहे और पाखाना साफ न होवे । जो शराब पीते हैं, अपरिमित गोजन करते हैं और ज्यादा बैठे बैठे काम करते हैं उनके लिये खासकर फायदा देती है ।

**पलसेटिला**—चरबी और तेज की खोज खाने से बच्क हजमी, जीम सफेद, या पीछा रंग मैली, सुबह के वक्त जवाम का आयका बिगडा हुआ खाने पर डकार और मुह से पानी आना पेट में दर्द । रात्रिमें पतला दस्त आना मुखायम मिजाजकी औरतों को यह दवा उम्दा है ।

**ब्राइओनीया** । बहुत धम पड़ने के बाद ठंडा पानी पीने से खाने की खवि न होवे—उहां तक जिस के गन्ध से मिजा-

७ - भरपेट खालेने पर मनुष्य को सब्जत परिश्रम नहीं करना चाहिये भयघ्ना बहुत मिहगत कर आने पर जय तक ठंडा न होखे तय तक भोजन करना उचित नहीं है । शकसर बेसा जाता है कि भाज फल हो खार प्राप्त खाने को खाकर स्फुब्ध या कचहरी को चख सडे होते हैं यह अर्जाय होजाने का कारण समझना चाहिये हर रोज सुबह उठना, ठडे पानी से नहाना, मुकरर मिहनत करना, और कसरत, खुशी और आराम शरीर की तन्धुस्ती के लिये लाजिम है ।

### अर्थ ( ववासीर )

मखद्वार की नसें फूलजाती हैं और सब्जत होकर मस्सा पैदा होजाता है । मखद्वार में जो मस्सा भीतर होता है उस को भीतर और बाहर मस्सा होता है उस को बाहर मस्सा कहा जाता है । इन मस्सों से कभी तो खून आने लगता है और कभी नहीं आता है । कभी कभी १ मस्सा होता है और कभी कभी बहुत मस्से होकर गुच्छा सा होजाता है । इन मस्सों में कभी खुबखी और कभी चपका कगी जखन और कभी सुई सी चुमना और बहुत प्रकार की तकलीफ मालुम होती है । दस्त के साथ भयघ्ना अपने आप खून बूँद, बूँद कर के गिरने लगता है । और कभी कभी बहुत खून गिरने लगता है ।

चिकित्सा—मफसमोमिका, और सखफर, साधारण ववासीर में और कयमियत के साथ से सखफर इस्फ्यूबस, मफसमोमिका, कौखिनसैगियां, हाईडेसटिस, गर्म अवस्था में की ववासीर में पेंछोज, कौखिनसौगियां मफसमोमिका । खूनी ववासीर में हेमेंमिक्सिस, सखफर [ काछेपन के खून की हालत में ] इस्फ्यूबस, एकोनाइट, पछोज, [ ज्यादा खून गिरने की हालत में ]

प्रथम - अच्छी तरह चबाकर धीरे धीरे भोजन करना चाहिये खाने की चीज लारके साथ खूब मिल जावे और वे मिखा हुआ वात के द्वारा खूब पिसा नही जावे तो सहज में पच नही सका। जिस तरहसे जल्दी म कोई काम सुधरता नहीं उसी तरह म खान में भी जल्दी करने से पचने में भी देर लगती है और वह कारण यह है जमी का होता है।

२ - खाने का समय और परिमाण ठीक रखना चाहिये। हर रोज ठीक वक्त पर भूख लगन पर, जैसा मुनासिब हो भोजन करना चाहिये।

३ - मरपेट खानेना उचित नहीं है। इससे पाकाशय यागी मदे के रस निकासने में और खाई हुई चीज के सचि मिजने से नुकसान होता है।

४ - जल्द हजम होंगे घासी और ताकत जाने घासी खान भोजन करना चाहिये इस विषय में खास नियम बांध देना असम्भव है। जिनका जो चीज फायदा करती हो वही खाना चाहिये, अथवा जो नुकसान करती हो वह न खाना चाहिये।

५ - पीने की चीजों में ठण्डा पानी सब से उत्तम है। शराब आदि गरो की चीजें एक बम मना है। इसमें सिवाय नुकसान क फायदा कमी नहीं हैं। भोजन के समय ज्यादा पानी पीना खराब है ज्यादा पानी पीने से पाक यत्र की ताप कम होजाती है। और पाक यत्र स जो रस निकलता है वह रस पानी के साथ मिलकर ज्यादा पतला होता है इससे पचने की ताकत घटजाती है। हग खोंगों की प्रकृति में इस लिये ज्यादा धरफ खाना अच्छा नहीं।

६ - खान क वक्त मनकी अवस्था के ऊपर पूरे तौर से परिपाक क्रिया निर्भर रहती है। इस लिये दु ख, गमगीनी, क्रोध, और रंजीदा होकर भोजन करना उचित नहीं है खुश दिख होकर परिवारके लोग यागों में बैठ कर मजे मजे की बातें और हसी, दिहगों करते हुये भोजन करना उचित है।

७- मरपेट खालेने पर मनुष्य को सक्रम परिश्रम नहीं करना चाहिये भयचा बहुत मिहगत कर आने पर जय तक ठंडा न होखे तय तक भोजन करना उचित नहीं है । भकसर देखा जाता है कि आज कल दो चार प्रास खाने को खाकर स्कुल या कचहरी को चख सखे होते हैं यह अजीर्ण होजाने का कारण समझना चाहिये हर रोज सुबह उठना, ठडे पानी से नहाना, मुकरर मिहनत करना, और कसरत, खुशी और आराम शरीर की तन्बुदस्ती के खिये लाजिम है ।

### अर्थ ( ववासीर )

मखद्वार की नसें फूळजाती हैं और सक्त होकर मस्सा पैदा होजाता है । मखद्वार में जो मस्सा भीतर होता है उस को भीतर और बाहर मस्सा होता है उस को बाहर मस्सा कहा जाता है । इन मस्सों से कमी तो खून आने लगता है और कमी नहीं आता है । कभी कभी १ मस्सा होता है और कभी कभी बहुत मस्से होकर गुच्छा सा होजाता है । इन मस्सों में कमी खुजली और कमी खपका कमी जखन और कमी सुई सी शुमना और बहुत प्रकार की तकलीफ मालुम होती है । दस्त के साथ भयचा अपने आप खून रूद रूद कर के गिरने लगता है । और कभी कभी बहुत खून गिरने लगता है ।

**चिकित्सा**—नफसमोमिका, और सखफर, साधारण ववासीर में और कयजियत के समय से सखफर इस्फ्यूबस, नफसमोमिका, कौखिनसैमियां, हाईडेसटिन, गर्भ अवस्था में की ववासीर में पेओज, कौखिनसौमियां नफसमोमिका । खूनी ववासीर में हेमेंमिबिस, सखफर, [ फाडेपम के खून की हालत में ] इस्फ्यूबस, एकोमाइट, पेओज, [ उपादा खून गिरने की हालत में ]

आरना [ ज्यादा खून गिरने के बाद ] बिना खून की घासीर में । नक्सभूमिका, और सखफर, पारी, पारी से देना चाहिये । बहुत दर्द में, एफोनाइट, जलन और खुजलाइट में-फैपसिकम, आर-सिनिक । जिस घासीर में रस गिरता है और खून नहीं गिरता उस में मारफ्यूरियस, पेसफ्यूलस, पलसाटिला, मस्सा पकने से मारफ्यूरियस देते हैं ।

**एकोनाइट**—बहुत दर्द और प्रवाह खाल रंग का खून गिरने में या मस्से के थोड़े थोड़े दर्द में भी उपकार करता है ।

**आरसिनिक**—बहुत जलन और कमजोरी आराध पीने से जो घासीर पैदा होती है ।

**कोलिनसोनियां**—पुरानी घासीर उस के साथ बहुत फयजियत । अधिक रात्रि में घट जाता और सुबह को कम हो जाना ।

**हमामिलिस**—दर्द और खून गिरना, बहुत खून गिरने से उपकारी है । थोड़े खून गिरने से बहुत कमजोरी ।

**हाइड्रासटिस**—जिस अस्थ फयजियत कि मुख्य शिफ-यथ होती है ।

**नक्सभूमिका**—जो लोग हमेशा बैठे रहते हैं । और हमेशा ताकत की चीज खाते हैं उगके खिये उपकारी है खासकर शराबी-यों को, फयजियत परंतु धार धार बस्त की हाजत होना और फांस फा बाहर गिफळ जाना ।

**सखफर**—पुरानी घासीर में यह धवाई बहुत उपकारी है विशेषकर फयजियत रहने से ।

**नक्षत्रभोमिका और सलफर ।** बघासीर के घास्ते अफ सीर बघाई है । १ घूँट सलफर सुयह के घक्त और १ घूँट नक्षत्र भोमिका रात्री में सोने के घक्त इसी तरह १ हफ्ता तक फिर चार पांच दिन बद्द करके फिर शुरू करना चाहिये ।

**सहकारीउपाय ।** गोस्त और गरम मसाला खाल मिर्च आदि गर्मचीज खाना गिरेष है प्रतिदिन ठंढा पानी व्यवहारकरना नियमित परिश्रम भारी चीज का भोजन त्याग करना चाहिये जिससे मेदास्ताफ रहे ऐसा घाना खाना चाहिये ऐसे बघासीर या खे को फलफूल भोजन करना चाहिये हर रोज रात्रि में सोने के पहले बघासीर बाखे को पाखोने हो आगा उछम है । स्नान और भोजन का समय ठीक रहना उचित है ।

**अत्यन्त रजः स्राव यानी औरतों को ज्यादा खून**

### आना

**लक्षणा—**कोई कोई समय संघातिक हो जाया करता है अतु समयमें और उसके अखाया अरायु से खून गिरता है । ज्यादा हाथ पैर ठंढे और सफेद चेहरा आँसु बैठजाना काग से काग-सुनाई देना, और गजर कम हो जाती है और अखीर में मूर्छा-आजाती है ।

**इलाज -** ज्यादा ताकतघर स्त्रियों के खून गिरने से बेखोडोना, फेरम, म्हाटीना, सवाईना । कमजोर स्त्रियों के खून गिरने में चार्डना, सीकेली । गर्भ अवस्था में, बघा पैदा होने के बाद बाधवा गर्भ गिरजाते के बाद खून गिरने में बेखोडोना कैमोमिखा फेरम प्खाटिना, सवाईना, इपीफाक, अखीर उन्न में माहवारी बद्द होने के घक्त में खून गिरना पस्तटिखा



चाहना [ ज्यादा रून गिरने के बाद ] बिना रून की घवासीर में ।  
 नक्सभोमिका, और सखफर, पारी, पारी से देना चाहिये । बहुत  
 दर्द में, एकोनाइट, जलन और खुजलाहट में-फेपसिकम, आर-  
 सिनिक । जिस घवासीर म रस गिरता है और रून नहीं गिरता  
 उस में मारफ्यूरियस, ऐसफ्यूबस, पलसाटिला, मरसा पकने से  
 मारफ्यूरियस देते हैं ।

**एकोनाइट**—बहुत दर्द और प्रदाह छाल रग का  
 रून गिरने में या मरसे के थोड़े थोड़े दर्द में भी उपकार  
 करता है ।

**आरसिनिक**—बहुत जलन और कमजोरी शराब पीने  
 से जो घवासीर पैदा होती है ।

**कोस्मिनसोनियां**—पुरानी घवासीर उस के साथ बहुत  
 कवजियत । अधिक रात्रि में घट जाना और सुबह को कम  
 हो जाना ।

**हमामिलिस**—रूंद और रून गिरना, बहुत खून गिरने से  
 उपकारी है । थोड़े रून गिरने से बहुत कमजोरी ।

**हाइड्रासटिस**—जिस बखत कवजियत कि मुख्य शिक-  
 यत होती है ।

**नक्सभोमिका**—जो लोग हमेशा बैठे रहते हैं । और हमेशा  
 ताकत की चीज खाते हैं उगके छिये उपकारी है खासकर शराबी-  
 यों को, कवजियत परंतु धार धार घस्त की हाजत होना और  
 कांच का बाहर निकल जाना ।

**सखफर**—पुरानी घवासीर में यह बचाई बहुत उपकारी  
 है विशेषकर कवजियत रहने से ।

जरायु—( बच्चेदागी जिसमें गर्भ के समय यथा-रहता है )  
जरायु की कमजोरी होने से खून का गिरना ।

**आरतिका ।** खून उजड़ा, छाब घणों, अथवा जमा हुआ  
उपादा मिहनत, गिरझामा, अथवा थोटा खगकर बीमारी होने से  
यह दवाई बहुत उपकारी है ।

**सहकारी उपाय ।** सर्व प्रकार मन की चिन्ता और  
उद्वेग मेहनत, घूमना एकदम मना है । खून आना बंद करने के  
खिये पीठ के नीचे तकिया देकर पैर को ऊँचा और शिर को  
नीचा करके बिस्त खेतना चाहिये रोगी को सुप चाप खेटा रह-  
ना चाहिये हिटना झुबना मुर्दा पैदा करता है । ज्यादा खून  
आने से ठंडा पानी पीना सर्व शरीर ठंडा रखना, पैर पीठ पर  
और पैर पर ठंडाजल प्रयोग करने से विशेष उपकार  
होता है गरम गरम कोई चीज नहीं खाना चाहिये जिन स्त्रियों  
के उपादा खून गिरता हो उन को थोड़े दिन के खिये खामी  
सहवास का परित्याग करना उचित है । बहुतरी स्त्रियों  
को रज छाब होने के बख्त खामी के स्पर्श करने से यह बीमारी  
पैदा होती है ।

### अथवा उगलियों का पकजाना ।

**लज्जरा ।**—यह बीमारी तकलीफ देनेवाली है उगलियों-  
के आगे की तरफ प्रदाह होकर पक जाता है । गरमी, बहुत  
दर्द, लपक का होना छाबरग इसका लक्षण है । उगली से  
खेकर हाथ तक में दर्द होजाता है । कमी कमी बीमारी के त्याग  
से पक कर हड्डी तक पहुंच जाती है ।

**चिकित्सा ।** थोटासग आने से खेडम, पीप पैदा होंगे के

लेकेसिम ग्रेडीना कैलकेरियाकार्व मुकररर घक्त से पहले-  
ज्यादा मिफदार में खून आना और ज्यादा दिनतक खून आना  
जारी रहे । खून आने के पहले छाती फूजजावे और छाती, शिर,  
पेट में दर्द होना,

**वेलेडोना ।** उजला और मुह का लाल रंग होना नाही  
पूर्ण और जल्द खून में बदव् घणा होने के बाद खून गिरना ।

**कैमोमिला ।** काळा और जमा हुआ खून बीच बीच  
में उजला और लाल रंग का पतला गिरना, छाव फंभी रहे  
और कभी न रहे ठंडी हवा लेने की इच्छा होती हो ।

**नक्सभोमिका ।** काळा और लिछडेदार खून, खून का  
आना पहले बन्द हो जावे बाद फिरजारी हो जावे खून आने के  
ठोक पहले पेट में घाई ठेका सा दर्द घमन की इच्छा शिर में दर्द  
कज्ज जल्द जल्द पासाने जानें की इच्छा । सघाईना खून ज्यादा  
आना आने के पहले घणा होने के समान दर्द लाल थोड़ा सा चलने  
फिरने में खून का आना ।

**सिकेली ।** दुर्बल और रक्त हीन स्त्रियों के लिये यह दर्धाई  
बच्छी है गून फाले रंग का और पतला घुटाने में अतु बन्द  
होजाने के समय ज्यादा खून आनेमें यह दर्धाई इपिकाफ के साथ  
पारी से की जाती है ।

**चापना ।** खून की कमी, फाले रंग का खून जमा हुआ  
रह रह कर आना ज्यादा खून गिरने से कमजोरी, कान से कम  
सुझा, मूर्छा का आना हाथ पाव ठंडे हो जाना मुह और हाथ  
नीचे हो आना, ज्यादा खून गिरने से, सिकेली के साथ, पारी-  
से दिया जाता है ।

**फिबोरिकएसिड** । निकम्मी हड्डी जखम के बन्द रहने से यह दवाई देनेसे खराब हड्डी गिफ्त जाती है ।

**रोकनेके उपाय** । पेपिस से भगर भाराम न हो तो सख-फर देना चाहिये मारक्यूरियस से भगर भाराम न हो तो लफीसिस, देना चाहिये । पीब पैदा होने के पहले, माइक्रोपसिड पानी के साथमिला कर उगळीयों में लगाया जावे तो ये बीमारी जड़ स जाती रहती है । फलफेरिया का र्थ देम से बार बार होना बन्द हुआता है ।

**सहकारी उपाय** । बीमारी पैदा होने से पहले उंग-खियों को गर्म पानी में डुबाना चाहिये घजाय मोबे रखने के हाथ को ऊपर की तरफ रखना चाहिये व्द दूर करने के लिये गर्म पु-खटिस बांधना चाहिये जरूरत दोतो खीर दिया जावे परन्तु खीरने के थक बडुन होशयारी होना चाहिये जिससे उगखियों की छोटी छोटी नस न कट जावे । प्राय हाने पर, कैथेनडुखा खोशन, से धो-ना चाहिये ।

### मस्ता ।

यह बीमारी फट देनेवाली नहीं है परन्तु देखने में खराब मालूम देती है यही खूब मूरत मुंह क ऊपर हुए ता तमाम चेहरे की खूब मूरती गिगाह देती है भगर बहुत मस्से होने लगे तो उनको दवाई से दूर करना चाहिये ।

**इलाजथूजा** । इस बीमारीकी उमदा दवाई है मस्से के ऊपर थूजाका मूल अमिध अर्क बिग में दोती बार खगा ना उ-चित है और साथ साथ थूजा व कम सेधग करना चाहिये एक हफता अथवा दस दिन में फायदा अवश्य देता है । फायदा ना-

पहले द्विपर सलफर लकेसिम, बाद पीप पद जाने के, साईलेसिया, सलफर ।

**साईलेसिया** । उद्गलियों में जन्म होने से यह दवाई दी जाती है । धीमारी के शुरू में यह दवाई तीन तीन घटा बाद देना उचित है । अगर शुरू से ही यह दवाई दी जावे तो बिना पके भाराम हो जाता है ऐसा अक्सर देखने में आया है । इस के साथ तेज बुझार रहे तो एकोनाइट और सेबोसिया पारी पारी से देना चाहिये ।

**आरसिनिक** । फूले हुये स्याग का रंग काखा पन छिये हुए हो और बहुतअछन, व दुरगन्ध युक्त हो तो दिया जाता है फाले के ऊपर लाख रंग होनेसे लकेसिस देना चाहिये ।

**एकोनाइट और वेखोडोना** । ज्वर, प्रदाह, घकना आदि लक्षण रहने से इन दोनों दवाईयों में से चाहे एकोनाइट या वेखोडोना देना चाहिये ज्यादा ज्वर, रहने से एकोनाइट और शिरफा दर्द आंखजाल अथवा घकना यदि इन में से कोई लक्षण हो तो वेखोडोना देना चाहिये ।

**वहुत दर्द** ।— प्रदाह, स्याग का रंग लाख धरों लपक होना, प्यासबगना, बेधेगी, आदि लक्षण में यह दोनों दवाई पारी पारी से दी जा सकी है ।

**मरक्युरीयस** । इस रोग में अक्सर देखा जाता है कि रात में ज्यादा तकलीफ और धीरे धीरे पीष पैदा होने के लक्षण, में यह दवा मुफीब है ।

**द्विपरसलफर** । पीष पदजाने से यह दवाई अच्छी है ।

**फिलोरिकएसिड ।** निकम्मी हड्डी जखम के बन्धन रहने से यह दवाई देनेसे शराब हड्डी गिफ्त जाती है ।

**रोकनेके उपाय ।** येपिंग से भगर आराम न हो तो सख-फर देना चाहिये मारफूरिपस से भगर आराम न हो तो लकीसिस, देना चाहिये । पीध पैदा होने के पहले, नाइट्रिकएसिड पानी के साथमिला कर उंगलियों में लगाया जाये तो ये बीमारी जड़ से जानी रहती है । फलफोरिया कार्ब देन से घार घार होना बन्द आजाता है ।

**सहकारी उपाय ।** बीमारी पैदा होने से पहले उंगलियों को गर्म पानी में डुबाना चाहिये यथाय नीचे रखने के हाथ को ऊपर की तरफ रखना चाहिये दूध दूर करने के लिये गर्म पुषटिस पांथना चाहिये जरूरत होतो चीर दिया आवै परन्तु चीरने के बक्त बहुत होशयारी होना चाहिये जिमसे उंगलियों की छोटी छोटी नस न कट आवै । घाय होने पर, कैलैनकुला ओशन, से धोना चाहिये ।

### मस्ता ।

यह बीमारी फट देनेवाली नहीं है परन्तु देखनेमें जराब मालुम देती है यही सूख सूख मुंह क ऊपर हुर्र ता तमाम चेहरे की खूब सूखती बिगाह देती है भगर बहुत मस्से होने लगे तो उनको दवाई से दूर करना चाहिये ।

**इलाजथूजा ।** इस बीमारीकी उमदा दवाई है मस्से के ऊपर थूजाका मूल अमिष अर्क बिन में दोतीन घार लगा ना उचित है और साथ साथ थूजा द फल सेवन करना चाहिये एक दफता, अथवा दस दिन में फायदा अवश्य देता है । फायदा मा-

खून होने से और ज्यादा दिनतक व्यवहार करना चाहिये अगर इस से फायदा न हो तो रसटकस भी खाना चाहिये और खगना भी चाहिये बहुत से मस्से होने लगे तो सबकर ३० कम १ खुराक तीसरे दिन पीनी चाहिये। एक हफ्ता या दो हफ्ता पीने से फायदा मालूम होता है। मस्सा हमेशा हाथ लगाने से अथवा पकड़ कर खेंचने से जल्दी बढजाता है।

### आमलोहू यानी पेचिस ।

लक्षण ।—ये बीमारी बड़ी गयानक और सबत है। इस मकलीफ की असख पहिचान यह है कि आंतों में प्रदाह और घाय जल्द जल्द आम और लोहू के साथ दस्त आवे पाखाना फिरने के बख्त जोर देना पड़े और मरोह ज्यादा होती होंगे शुरु हालत में बुखार भी हो जाता हो गाभूखी बीमारी में खालीभांव गिरपडता है पर बीमारी सबत होने से भांव के साथ खून भी आता हो। केबल खून मखली के घोमन के माफिक कभी सखी घू के साथ दस्त हुआ करता है। अब रोग बढता है तो जल्दी जल्दी दस्त आते हैं मरीज बुबला और बठने बैठने की ताकत जाती रहती है, मखरि में भूखी भूखी घाँट कहता है, हुषकी आती है और ठंडा पसीना आता हो भाथा हिलता भादि खराब लक्षण बिखाई पडते हों यह बीमारी गई प्रघरेया में पूरी तौर से आराम न होनेपर पुरानी होजाती है। पुरानी होने पर जोर नहीं रहता परन्तु रोगी थक जाता है और मुशफिख से आराम होता है।

चिकित्सा । एकोनाइट बीमारी की पहली हांखत में अगर बुखार हो तो देना चाहिये एकोनाइट से फायदा न हो तो कैमो मिखा नफसमौमिका, मारफ्यूरियस, अथवा पखनाटिखा देना चाहिये।

**कालोसिंथ** । करीब करीब हरफिस्म के भाव छोड़ में यह दवा दी जाती है । पाखाने में खून मिखा हुआ भाव, नाभि के चारों तरफ धरदास्त न होने वाला दर्द, और साथ ही पेट का फूलना अथवा सूखता हो हाथ धीमार न रखन देता हो । धरदास्त दर्द होने के सबसे से रोगी झँझा होकर अथवा पेट के नीचे तकिया लगाकर सो रहता हो ।

**मारक्यूरियसकर**—। खून मिले हुए आमखोह के वास्ते ये खास दवा है । पाखानेके बाद जोर देवे या पेशाब में तकलीफ होती हो अथवा पेशाब घट हो जाता हो ।

**नक्सभोमिका** । चार चार थोड़ा वस्तु होता हो । वस्तु पतला और उसके साथ खून मिखा जाता हो वस्तु हो जाने पर प्याराम मालूम होता है ।

**इपिकाक** । जी मिचलाना या कै होना या जोर से काखना पेट में दर्द वस्तु में पहले भाव और फिर खून मिली हुई भाव ।

**सखफर** । बहुत ही खराब दाखत हो और दूसरी दवा जब काम न देती हो पेट में बहुत दर्द इस कदर हो कि हाथ न दिया जावे ।

वस्तु हो जाने पर भी बहुत देर तक वस्तु की दाखत रहती है धीमारी पुरानी होजाने से धीध धीध में, सखफर, और, नक्सभोमिका देना ठपकारी है ।

**रसटकस** । मच्छीके धोवन का सा वस्तु होता है और रात में बढ़जाता ही ।

**फासफरस** । बिना दर्द के भाव या खून गिरता हो पाखानेकी रस्ता सूखी रहे ।



लूम होने से और ज्यादा दिनतक उपग्रहण करना चाहिये—अगर इस से फायदा न हो तो रसटप्पस भी खाना चाहिये और लगाना भी चाहिये बहुत से गस्से होने लगे तो सबफर ३० क्रम १ घुराक तीसरे दिन पीनी चाहिये। एक हफ्ता या दो हफ्ता पीने से फायदा मालूम होता है। मस्सा हमेशा हाथ लगाने से अथवा पकड़ कर खेंचने से जल्दी बढजाता है।

## आमलोहू यानी पेचिस ।

लक्षण ।—ये बीमारी घडी भयानक और सस्त है। इस तकलीफ की असख पहिचान यह है कि आतों में प्रदाह, और घाय जल्द जल्द आम और खोहू के साथ दस्त आवे पाखाना फिरने के वस्त जोर देना पड़े और मरोह ज्यादा होती हाथे शुरु हालत में बुझार भी हो आता हो मामूली बीमारी में खाखीआंश गिरपडता है पर बीमारी सस्त होने से आंश के साथ खून भी आता हो। केवल खून, मछली के धोमन के, माफिक कमी सखी घू के साथ दस्त हुवा करती है। अब रोग घडता है तो जल्दी जल्दी दस्त आते हैं मरीज बुबला और उठने बैठने की ताकत जाती रहती है, मखीर में भूखी भूखी घाँते कहता है, हुचकी आती है और ठंडा पसीना आता हो मायां हिलना आवि सराव वसख दिखारि पडते हों यह बीमारी नई अघस्था में पूरी तौर से आराम न होनेपर पुरानी होजाती है। पुरानी होने पर जोर नहीं रहता परन्तु रीनी चक आता है और मुशफिस से आराम होता है।

चिकित्सा । एकोनाइट बीमारी की पहली हाखत में अगर बुझार हो तो देना चाहिये एकोनाइट से फायदा न हो तो कैमो मिळा नक्समौमिका, मारक्यूरियस, अथवा पखसाटिळा देगा चाहिये।

**इलाज** - इसके वास्ते, एपिस बहुत उपकारी दवा है। बहुत सूजन और सुई चुभने के सी हावत मासूम बेना जखन और खुजावट।

**एकोनाइट** - इसके साथ तेज बुखार रहने पर देते हैं।

**डलकामारा** - ठंड खगकर होने से। यह हजर्मी भयसा अतु शूल होने के वक्त पलमाटिला देते हैं। खाने पीने की बद्ध-परहेजी से भयसा पेट की पीडा रहने पर पेनटिम क्रूड उपकारी है।

**रसटकस** - काकडा भयसा भीगा मच्छी खाने पर गठिया के समान दर्द रहता हो तो रस टकस देते हैं।

**आर्टिका** - बहुतों की राय में यह अच्छी दवा है खासकर आमघात बैठने पर पेटकी बीमारियों में तथा कै होने की इच्छा रहती हो तो आर्टिका देना चाहिये।

यह बीमारी पुरानी होने से, कैसकेरियाकावं, और सबफर अच्छी वधाई है अगर रात्रि में खुजली पटजावे तो सबफर देना चाहिये।

**सहकारी उपाय** - ठंड या सर्दी खगने देना मना है गरम पानी से नहाया खाने के विशेष नियम रखना - बिना पखने घासी बीजों का परहेज रखना चाहिये।

### १० उदरामय ( पतला दस्त आना )

जम्दी जल्दी ज्यादा मिफहार में पतला और पानी के समान दस्त का आना उसके साथ कै करने की इच्छा या कै होती हो, पेट फूबता हो, पेट में सुम्भन होती हो घद्घुहार ड्यार भाठी हो, और बद्ध तरद की भयगत जाहर होती हो, पाखाता पानी पत-

**लार्डिकोपोडियम** । पुरानी पेचिस, पेटमें हवा का जमना कराहना मालूम हो कि अभी और दस्त होगा उस हासत में यह दवा देना चाहिये ।

**सेवनविधि** । नई और शुरू हासत में दवा हर घंटे पर देना चाहिये हल्की बीमारी में दो तीन घंटाबाद दवाई दी जाये । पुराना होने पर दिन में दो बार काफी है ।

**सहकारीउपाय** । पथ्य के ऊपर विशेष दृष्टि रखनी चाहिये जल्द पच और ताकत लाये ऐसी खुराक खाना चाहिये बीमारी की घटी हुई हासत में अरारोट अरुद्धा पथ्य है अगर पचे तो थोड़ा थोड़ा दूध भी दिया जा सका है । कच्चा घेख काट कर पानी में सौटाकर वह पानी बीमार को दिया जाये तो आहार और दवा दोनों होती हैं । जरूरत पडने पर गोस्त और मछली का शोरवा भी दे सके हैं पेट के दर्द बंद करनेके लिये पुखटिस बाध दिया जाये अथवा फुलाछेन से गर्म पानी से सेक बीमार को ठंडा पानी और खाना ठंडा कर के देना चाहिये पुरानी पेचिस में कच्चा घेख भाग में भरता कर दिया जाये वह बहुत फायदे मन्द है ।

### आमवात

**लक्षण** - बदन में खाल रंग के चकत्ते से होजाते हैं । और फूल उठता है उसमें खुजली होती है और जखन होती है । जैसे केच की फली खगने से हासत होती है खाने पीने की घदपरहेजी य ठंड खलने से और कभी कभी सुखार के साथ यह बीमारी होती है यह बीमारी पुरानी होने पर बहुत मुशकिल से माराम होती है जब तक कि इसका कारण निश्चय न हो तब तक यह माराम मदी होती ।

होगा और कमजोर न होंगे से ) मन की चिन्ता से, कैमोमिला (क्रोध, ) एगनासिया ( रज ) औपियम, भय )

दूधरे लघुण के होने से, इपीकाक, वेपचा दस्त होने से निकलने से, आरसिनिक, चायना, दस्त में खून आने से मरक्यूरियस, कर करोसीनस, कैपसीकम, इपीकाक, पिच उदरामय में पीडा फारखम, चायना, मरक्यूरियस, आयिरिस, पानी पीने के बाद उदरामय आरसिनिक, कि रोटन, पीडाफाइलम फोस फरिस भोजन करने के बाद उदरामय में आरसिनिक क्रोटन, चायना ।

फोस फरिस । सुष् के घृथ उदरामय में नैट्रम सल्फ, फौमफरिस, पोडोफाइलम सखफर, रात्री के समे उदरामय आरसिनिक, चायना, पोडो फाइलम पबसाटिळा धृख मनुष्य के उदरामय में आरसिनिक बैलौज फौसफरिस सिकेछी ।

वच्चोको । कैमोमिला, इपीकाक, मरक्यूरियस ।

दातनिकसने के समय । कैलक रिया कैमामिला खी का गगनवस्था में डखकामारा सीपिया कैमामिला चायना न अस सखफर ।

प्रभृतकी हास्त में । पेंटिमरूड डखकामारा ।

दस्तका रग देखकर । कभी कभी दवाई ठीक करना पड़ता है ।

जैसे दस्तके साथ खून जाना । मरक्यूरियस न अस सखफर ।

पीवके साथ दस्त आनेसे । फोस फरिस खफैसिस साशजिसि या मरक्यूरियस सखफर ।

क्षा और फभी पानीसा या फर्मा आमपित्त वा खून के साथ मकसर मामूखी उदरामय की तरफ खपाछ करके थोडा समझ लेने से यह सखत और घानक होजाताहै हैजे की बीमारी सी बढ़ जाती है। शुरू उदरामय की बीमारी खाने ओर इखाज की बुराइयों से पुरानी द्वाजत को पहुच जाती है। उससे मरीज का बदन आहिस्ते आहिस्ते कमजोर और दुबला होजाता है अपरिमित भोजन या न पचने वाली चीज खानेसे, मैला और खराब पानी पीने से, सर्दी और ठड, या ज्यादा गर्मी, लगने वगैरा कारणों से उदरामय की बीमारी हुमा करती है।

दूनरी दूनरी बीमारियों के लक्षण के साथ उदरामय, बीमारी हुमा करती है जैसे कि यक्ष्मा कास ज्वरातिसार, अतिसार विकारज्वर, आदि बीमारी के साथ उदरामय, बीमारी पैदा होती है

**चिकित्सा -** नई उदरामय की बीमारी में एकोनाइट, भार सिनिक क्यामिखा, उखकामारा पलसेटिखा नफस भोमिका, पडोफाईखस पुराना उदरामय में - कैलकेरिया, ग्रैफाईटिस, चाय ना, फौमफरिस, सखफर, गार्ड्रिकपलिटड, नपचने वाली चीज खाने से पलसाटिला, ग्रैगटिमकुड, नफसधोमिका, इपिका, शरदी, या भाष हवा बढ़ने से, कैमफर, ( जाडा मालूम देकर उदरामय ) एकोनाइट, ( पसीना बंद होने से ) ग्राइबोमिखा, ( गरमी के बाद सरदी से ) डखकामारा, ( भांगने से ) कखो-सिन्ध, ( पेटमें खुषन होने से )

गरमी के दिनों में जो उदरामय होता है उसमें, चायना, ( मामूखी उदरामय ) भरेटम ( हाथ पैर में घाईटे जाने से ) भाषरिस, ( बी पेट में जखन और सिर में दर्द रहने से ) आरस्तानिक ( बहुत प्यास और कमजारी में ) मैसिड फौस फरिफ, ( दस्त

घटे बाद भी को पानी से उदरामय और कथजीयत गर्भधती और  
 पच्यो को उदरामय । गरक्यूरियम खुा के साथ दस्त दस्त के  
 पहले पेट में दर्द पेशिम मे बहुत कराहना अथवा जोर देना  
 रात में घटजाना प्रायोमिया गरमी के घरगत में बीमारी होने स  
 या पफं खाने से अथवा शरीर के बहुत गर्मी हानेपर ठंडा पानी  
 पीने से मैखौज उदरामय पाखाने की हाजत न रोक सकना । सीना  
 पेट में कौड़ा अथवा कृमि रहने से और दस्त सफेद रंग का होना  
 से गाफ हर घण खुजाते रहना सफेद रंग का अथवा मैखा पेशाब  
 हाना सोते स चिल्ला उठना दांत फिट फिटाना ।

**एसिडफोस ।** बीमारी पुरानी अथवा बिना दर्द के भादि  
 लक्षण में ॥ कोबोसिथ दस्त का रंग हल्दी के समान और पनखा  
 पेट में बहुत ही वैश्वेगी के साथ दर्द अस की पन्थर से पीसाजाता  
 हो थोड़े खाने से घट जाना रपोकाफ हर रंग के दस्त औ मिश्र-  
 खाना अथवा कै होजागा और पेट फूलजाना नफसभोमिका का  
 ज्यादा खाना अथवा मन की बहुत चिन्ता करने से पीडा होना  
 कभी कथजीयत कभी उदरामय सखफर पुराना उदरामय मे सवे  
 रेविखीना से उठते ही पाखाने की हाजत होगा उसके साथ पेट  
 में मसोड होना और कराहना ।

**सहकारी उपाय ।** पेट की बीमारी में पच्य का धंदी-  
 यस्त जरूरी है शुरू हाखत में साधू खाना भरारोट घाखी बिलायती  
 जो का भाटा यही पच्य है भादिस्ते भादिस्ते दूध धूनेके पानी का  
 साथ खिखाते है पुरानी हाखत में पुराना चापल ताजी मछली का  
 शोरुषा तथा मछली न खाने वाले को कच्चा कैला भालू पर-  
 यल भादी तरकारी का रसा देना चाहिये पची का साग न खाने  
 ना चाहिये भरहर मटर और खना की दाल खाने से नुकसाग हो-  
 ता है अफसर गाव हवा बढखने से बहुत कापदा होता है उदरा-  
 मय वाले को दूध का खाना कूपच्य है ।

पित्तके दस्त आने के समय। नारंगरस चायना कै-  
मोमिजा गरक्यूरियस पोडो फाइलम ।

पीले रंग के दस्त आने से । डलफामारो इयकिक-  
चायना कैमोमिजा ।

हरे रंग के दस्त आने में । कैमोमिजा मरक्यूरिया  
सलफर पल्मटिला ।

अजीर्ण दस्त में । चायना कैलके रिया ।

वे मातृम दस्त होने से । फोस फरस सिकेडीपो-  
डोफ इलम ।

कैमफर । एका पकी नये उदरा मय में ठंड लगने से  
कपने से पाक जत्र और आंत में दर्द होने से हाथ पैर ठंड कैमफर  
की ५ ग्रंथ सफेद धूरे में मिलाकर घीस अथवा तीस मिण्ट के अंतर  
से भग वा हरएक दस्त के बाद देना चाहिये ।

पल्लसेटिला ।—तेल अथवा घी सेषम हुए गुरपाक बीज  
से जी मिचलाना डकार आना मुह में कड़वा सवाद  
रहना और रात्री के अन्त उदरामय में यह दवाई देना चाहिये ।

चायना । गरमी में जो उदरामय होता है । उस उदरा-  
मय में पतला पिछाई छिये हुए दस्त होना मूख न खगना मख के  
साथ अजाय्य बीज का निकलना कमजोरों दर्द न होना प्यास पे-  
टका फूलना ।

ऐन टिम क्रुड । पानी के समान उदरामय मूकफा न  
खगना क्रुड के समान सफेद जीमफा रंग रहना डकार और के

पुत्र से पर पुत्र तक में पैदा हो जाता है। पिता के दोष से बच्चा सारे बचन में गरमी का घाव लेकर पैदा होता है।

**चिकित्सा।** पहली अवस्था में मरफ्यूरियस सख, बहुत उमदा दवाई है। इसका ६ क्रम साधारण तौर पर दिया जाता है। बीमारी कठिन होजाने से अगर ६ ठे क्रम से कुछ फायदा न हो तो इस दवाई का तीसरा क्रम चूणोदिन में रदफे दिया जाता है। अगर इस से भी फायदा न हो तो मरफ्यूरियस कोरोसी सख ६ क्रम का देना चाहिये।

**एसिड नाइट्रिक।** पहले पारा ज्यादा इस्तैमाल कर लिया हो तो। येलेडोमा बद्द निकलने पर और बर्द होने पर देते हैं आरसिनिक आयोडाइड और सखफर पहली अवस्था में अच्छी दवाई है। जखम की अवस्था खराब होने पर आरसिनिक और पूरा आराम करने के लिये सखफर देना चाहिये।

द्वितीय अवस्था में एसिड नाइट्रिक फाली हाईड्रो मरफ्यूरियस आरसिनिक और उमदा दवाई है।

**तृतीय अवस्था में।** काली हाइड्रो औरम एसिड फौस फरिक्, फौस फरस आरसिनिक एसिड नाइट्रिक।

**काली हाइड्रो।** द्वितीय अवस्था विशेष कर तृतीय अवस्था की उमदा दवाई है हड्डियों में बर्द, सूजन, घाव, चर्म रोग आदि खस्य में जल्दी फायदा करती है नाक में पीप और खून मिखा हुआ बद्दूदार कफ आता होये तो देना चाहिये।

**औरम।** नाक से बद्दूदार पीप और खून मिखा हुआ कफ आता होये तो औरमूह और नाफ में घाव और गर्मी का जहर पारा इस्तैमाल करने का दोष युक्त बीमारी में देना चाहिये।



## उपदश अथवा गर्मी या आतशक ।

खराब-भौरतो के साथ असत् सहवास करने से पुरुष के लिंग में एक तरह का जहरीला घाव हो जाता है गर्मी का जहर वदन में बैठकर खून के साथ मिश्रकर शरीर में कई तरह की बीमारी पैदा करता है । गर्मी की ज्यादा ३ हाज़न देखने में आती है पहले जिस जगह घाव हो जाता है उस जगह का जहरीला स्थान और उस के आस पास की गाठों में बीमारी रहजाती है यही पहली अवस्था है । इस वक़्त में खुस्रार भी रहता है । खून बिगड़ने से मुँह और भीतरके यत्र कठ खमडा आदिस्थान पकड़ लेता है यही दूसरी अवस्था है इस अवस्थामें नाना प्रकारके चर्म रोग और हड्डीयाके भीतर घ जोड़की जगहमें दर्द मालूम होता है बहुत दिमघाव हड्डी मखा गुदा में पहुच ने से तीसरी हाज़त होती है इस अवस्था में मुँह के भीतर और गले में घाव और खमडा में घाय हडीगोस्त के भीतर आदि अस्थान में नाना प्रकार की पीडा देखी जाती है ।

यह बीमारी बहुत सख्त है पारा पे मुनासिब अथवा कच्चा-पारा खाने से ज्यादातर जीना कठन हो जाता है यह बीमारी साधारन है हर एक मनुष्य को देखने में आती है जहर असर करने की यानो अशुद्ध भोग करने की तीन दिन बाद ६ दिन के अन्दर लिंग के ऊपर एक साख दाग अथवा १ फुन्मी दिखाई देती है इस के बाद उस में खुजली चखती है और आस पास के स्थानपर सूजन हो और अखन होगे लगती है । धीरे धीरे फुन्सी बढ़कर बड़े गोख घाव की शकल में हा जाती है और उस में से पीघ निकलने लगती है । गर्मी का जहर शरीर में घुस जाने से अधिन पर्यन्त सुख जाता रहता है जिन्द्गी भरमें मनुष्य को कोई न कोई पीडा दुख देती रहती है ऐसी कोई बीमारी नहीं है जो गर्मी या जहर शरीर में घुसने से पैदा न हा सके । यह जहर पिता से पुत्र

रजस्रवा होने लगती है तब दर्द कम हो जाता है यह धीमारी सन्तान पैदा होने की प्रथम चिह्नकारी है ।

• चिकित्सा । कैमोमिला अगर दर्द वषा पैदा होने की तरह होता होवे या काखे रंग का छिछड़ा खून का गिरता हो । या घार घार पेशाब करने की हाजत होती होवे या ज्यादा थैथैनी होती होवे ।

सिमिसी फ्यूगा। प्रदाह के साथ ऋतु शूल में बहुत फायदा देती है । विशेषकर हाथ पाय में घांयटा और पीठ अथवा राग में दर्द और शिर में दर्द रहे तो और थोड़ा जमा हुआ खून अथवा बहुत रक्त गिरता हो फायदा देती है ।

नफसमोमिका—गाढे खून का आना, जी मिचलाना, कमज रहना, ये शुमार दर्द का होना, कमजोरी, और शिर घूमना, इस में फायदा देता है ।

पल्लसेटिखा—ठहर ठहर कर खून गिरता हो, पेट के भीतर पत्थर वषा हुआ मालूम देता हो, और गर्मी से बढ़ जाता हो ।

काफूलस—काटने का सा दर्द होता होवे काखा जमा हुआ खून बूद बूद करके गिरता हो और उस के साथ पेट फूलना, जी मिचलाना छाती में दर्द और तकलीफ मालूम देती हो ऋतुशूल के बाद वयासीर ऋतुषण्ड हो जाने से घांयटे आते हो

ग्लाटीना—हर एक ऋतु के समय घांयटा और चिह्याना कुछ काखा, कुछ पतला, कुछ जमा हुआ बहुत ज्यादा खून गिरता हो ।

• सीपिया—रोग की पुरानी हालत और कमजोर, अवस्था में आधे शिर में दर्द, ऋतु के समय दांत में दर्द, कतजियत खून अधिक पथ बहु काखतका कर्मी अल्प और थोड़े दिग् तरु ।

पिता से प्राप्त उपदन्श । मरकयुरियस, एमिड नाई-  
ट्रिक, और सलफर उत्तम है । पारा इस्तेमाल करने की खराबी से  
एसिड नाईट्रिक उपकारी है गर्मी का दोष मिटाने के लिये हीपर  
उपकारी है । गर्मी के कारण से दृष्टियों में दृढ़ होतो मरकयुरियस का  
ली, आयोडाइड, मिजेरियम । हड्डिन्सूज जानेसे फिब्रोसिक एसिड  
वेसिडफोस, स्टेफीसैप्रिया, सार्डलीशिया ।

हड्डियों का नाश हो जाने से सार्डलेसिया कैल्केरिया  
फोस फरस ।

**सहकारी उपाय ।** हरनरहके मन और जिस्म की मह-  
नत खोज देना तनबुरुस्त और पुष्ट करने वाली चीजें खाना हर  
तरह की गर्मी से परहेज नये की चीजें भी घुरी समझना चाहिये  
घदन और जखम की जगह हमेशा साफ रखना चाहिये गर्मी के  
मरीज से हर शयस को हमेशा दूर रहना चाहिये पारा भीतर खाना  
अथवा घाहर खगाना हर तरह से मना है एक जहर दूर करने के  
लिये दूसरे जहरका इस्तेमाल करना जरूरी नहीं है गर्मी के जहर  
के साथ पारा मिखने से बहुत नुकसान करता है नीम एकीर  
अथवा बिना सीखे हुए डाक्टर से इलाज कराना अथवा उसकी  
दवाखाना भजाय फायदे के नुकसान पहुंचाती है क्योंकि यह खोग  
जल्दी फायदा पहुंचने के लिये पारा अथवा पारे से बनी हुई दवा  
इस्तेमाल करते हैं ।

### ॥ ऋतुशूल ( मासिक समय की तकलीफ )

**लक्षण ।** यह बहुत तकलीफ देनेवाली बीमारी है मासिक के  
मजदीक ही अथवा मासिक के समय से शुमार दर्द और इसके  
साथ तकलीफ उपादा, कै, की उघकाई या दर्दसर, कुचकी  
आदि चदातरह की शिकायत कभी कभी देखने में आती हैं जब

२ हाखत—धीमारी की मखीर हाखत ॥ धीमारका सब तरह से कमजोर होजाना—भाँसै भीतर की तरफ घुस जावै पेशाब का रक जाना दस्त उखटी घण्ट होजाना मघघा पहखी मघस्या से कुछ कम हो जाना । घदन ठढा या पसीने से बिखकुलतर ।

३ हाखत—प्रति क्रिया की मघस्या—इससे पहले घताये हुये सब लक्षण हौले हौले कम होकर घदन गर्म होजाता है यहा तक कि ज्वर हो जाता है । इसके बाद धीमार हौले हौले मच्छा हो जाता है ।

**चिकित्सा।—**कैम्फर—उदरामय, जाडे के साथ पेट में बर्द, आवि हैजा के पहले सञ्चया जाहिर होने पर डाक्टर रुयीनिका स्पिरिट कैम्फर सफेद घरे के साथ [ पानी के साथ नहीं ] मिखाफर दम पाद्रह मिनट बाद देना चाहिये मात्रा जवान और पूरी उम्र के भादमी के खिये ५ दूद बच्चोंके ताई १—२ दूद यह दवाई पाँच या सात दफे देने पर अगर दस्त बाद न होकर आचल के भोषन के समान दस्त होवे तो दूसरी दवा तजधीज करनी चाहिये ।

पलसे टिखा—तेल मघघा घी की खीज खाने से यह धीमारी होवे तो मघघा खी मघघा ठडे मिजाज के भादमियों को उपकारी है ।

। मक्समोमिका—ज पचने वाला खाने खाने से मघघा रात्रि जागने से, या शराब पीने से मघघा मनकी चिन्ता पढुत करनेसे यह धीमारी पैदा होजावे तो यह दवा इस्तेमाख करनी चाहिये ।

खायना—फखफूख खाने से अगर धीमारी पैदा होवे तो ।

एफोनाइट—एक दमसे पतखा दस्त आने खगे उसके साथ माडे से गुस्कार उठ खगकर होने से ॥ प्यास का ज्यादा दोना येसै-

**सहकारी उपाय**—गर्म पानी से सेकने और गर्म पानी पीने से हमेशा उपकार देता है। दर्द के साथ श्रुत होने से पहले सखफर, और फैलकैरिया एक के घाव दूसरी इस्तेमाख करते हैं।

### अण्डकोपप्रदाह

**लक्षण**—साधारण अण्ड कोप के प्रदाह को ( एक कोप वृद्धि कहते हैं ) हर एक अमावस और पूर्ण मासी को एक तरफ का अण्डकोप फूल जाता है और उस में दर्द और ज्वन के साथ घुन्नार हो आता है।

**कारण**—खून का चखना फिरना रुक जाना ॥ अथवा प्रमेह रोग के अखीर में ॥ ठंड लगने अथवा चोट लगने से यह बीमारी पैदा होती है।

**चिकित्सा**—घोट लगकर होने से भारनिका देना चाहिये, प्रमेह के अखीर समय होने से पलसाटिका, मरफ्यूरियस सख, इस्तेमाख करना चाहिये, ठंड लगने से—रसटोफस, बहुत दर्द होने के कारण हेमामेखिस, पखसेटिखा, मावस और पूर्णमासी के बढ़ने से कैलकैरिया और साईखीशिया, और धिपय प्रमेह के रोग की दवाई में देखने से माखूम होगा।

### १४ । विसूचिका यानी हैजा

**लक्षण**।—यह बीमारी किसी जहर से, हमेशा पैदा हुआ करती है। इस बीमारी की हमेशा तीन तरह की हाखत देखने में आती है।

१ हाखत—इस बीमारी की उत्पत्ति या वृद्धि जैसे दस्त, गज्ज का कमजोर होजाना, हाथ पैर में घायटा का आना पेटमें घांघटे आना रोगी का कमजोर होजाना

**कूपम आरसिनिक**—कूपम और आरसिनिक होने के साथ-साथोंके लक्षण रहने से जैसे हाथ पैरों में बांधा-पेट के भीतर व्याधा सहन न करने वाला दर्द और दब के साथ थिछाना, बहुत कमजोरी, नाड़ी धीरे के समान महिन इस लक्षण में यह दवा देते हैं। ऐसी हालत में कूपम और आरसिनिक, घारी घारी से न लेकर कूपम आरसिनिक देना उपकारी है। इसका इ नम्बर का चूर्ण व्यवहार होता है।

मरक्यूरियस कर-खून मिले हुए दस्त आने पर देते हैं।

**कारवोभेजिटेविलिस** नाड़ी न मिलने से बेहरा मुरदे के भाफिक और सारा शरीर ठंडा, ऐसी हालत में देते हैं।

इस बीमारी की शिकायत-और मुश्तासिर इलाज—

कै की इच्छा, अपवा कै होना, घा दुधकी माना, इपिकाफ टेवेकम, नकसयोमीका, कारवो भेजिटे विलिस।

घाय आजाने से-मौपीयम, रस्तोफ्त, स्ट्रेमोनियम, पपिस,।

पेशायधद् होजाने से-आरसिनिक, विबोडोमा, कैगपरिस टैरीवियं।

पेट फूलने से-मौपीयम, नकसयोमीका, कारवो भेजिटेविलिस, पेट में कैशुमा होजाने से, भीमा।

यह बीमारी सख्त और मारडालने वाली है। थोड़े से बच्चे में जीना दुखम होजाता है। यह बीमारी आरम्भ होने से अच्छे डाक्टर या वैद्य को दिखाना चाहिये। इस बीमारी का पूरा हाल लिखना अपवा पूरी तरह से इलाज लिखना इस छोटीसी किताब में असम्भव है।

**सेवन विधि** - बीमारी की हालत देखकर दस्त, घास, तीस,

गी पेट में नाभी के नीचे बहुत दर्द, घटन गर्म तेज और पूरी नाडी यह दर्दाई पहली अवस्था में देनी चाहिये पतन अवस्था में जिस वक्त घटन ठढा हो। दिख की कमजोरी और नब्ज का न मिलना अगर मिछे भी तो इतनी सूक्ष्म जो मालूम न होवे वैचैनी मृत्यु का भय होना और चिन्ता होना आदि लक्षण में यह उपकारी है।

मूल अर्क ( पानी मद्धर टिञ्जर ) अथवा प्रथम द्शमिक क्रम पानी १ २ देना चाहिये ।

आरसिनिक-खूब पतला दस्त आना, पाखाने के मुख्यम पर जखन, पलंग पर घीमार बैचैन रहता हो, पानी पीने की स्वा-  
हिये ज्यादा, थोड़ी थोड़ी देर में कम पानी पीता हो, पानी पीने के साथ ही कै, फर देता हो घटन ठढा और पसीने से तर, अगर मरीज के देह के भीतर बेशुमार गर्मी और जखन मा-  
लूम देती हो बहुत कम कमजोर नब्ज खोई हुई ।

वेराट्रम पेखव-बहुत ज्यादा पतला दस्त, हाथ पांव में पापँठा हो, बहुत ज्यादा पानी पीना और कमजोरी ऐसी हा-  
खत में दीजाती है ।

रिसीनस-जिस हैजा में कै, ज्यादा होवे उस में ६ कम डाय-  
व्यूशन देना चाहिये ।

इपिकाक-बहुत जी मिचखाने अथवा कै होने से दस्त से कै ज्यादा रहना, और पेचिश की तरह किञ्चना और हरे रंग का पाखाना पाखाने में पास का आना ऐसी हाखत में देते हैं ।

फूमम-हाथ पैर और छातीका-खिचना-शाग नून्य, नाडी न मालूम देती हो, और जी मिचखाना यह दर्दाई अफसर मेराट्रम के साथ चारीयारी से दी जाती है ।

**कूपम आरसिनिक**—कूपम और आरसिनिक दोनो दवा-इयोंके लक्ष्य रहने से जैसे हाथ पैरमें घांघटा भाना-पेट के भीतर टपादा सहन न करने वाला दर्द और दब के साथ खिछाना, बहुत कमजोरी, नाडी छोरे के समान महिन इस लक्ष्य में यह दवा देते हैं। ऐसी हाखत में कूपम और आरसिनिक, घारी घारी से न देकर कूपम आरसिनिक देना उपकारी है। इसका द मम्बर का चूर्ण व्यवहार होता है।

मरफ्यूरियस फर-खून मिले हुये दस्त जाने पर देते हैं।

**कारबोभेजिटेविलिस** नाड़ी न मिलने से चेहरा मुरदे के माफिक और सारा शरीर ठंडा, ऐसी हाखत में देते है।

इस बीमारी की शिकायत-और मुश्तासिर इलाज—

कै की इच्छा, अथवा कै होना, वा हृषकी माना, इपिकाफ टेवेकम, नकसमोमीका, कारबो भेजिटे विलिस।

घाय भाजाने से-मोपीयम, रसटोक्स, स्ट्रेमोनियम, पपिस,।

पेशाबबंद होजाने से-आरसिनिक, विखोडौना, कैमपरिस टैरीविथं।

पेट फूलने से-मोपीयम, नकसमोमीका, कारबो भेजिटेविलिस, पेट में कैसुमा होजाने से, सीमा।

यह बीमारी सख्त और मारहाखने वाली है। थोड़े से घक्त में जीना दुखेम होजाता है। यह बीमारी आरम्भ होने से अच्छे डाक्टर या वैद्य को दिखाना चाहिये। इस बीमारी का पूरा हाख लिखना अथवा पूरी तरह से इलाज लिखना इस छोटीसी किताब में असम्भव है।

**सेवन विधि** - बीमारी की हाखत देखकर दस्त, घास, ठास,



मिनट अथवा एक घंटे के बाद दवा देना चाहिये रोग के-शुरू हालत में हर एक दस्त और कै के बाद दवा देना चाहिये ।

**सहकारी उपाय** - जिस बच्चे हैजा चारों तरफ फैल जाये उस बच्चे नीचे लिखे हुये नियम पाबन करना चाहिये ।

१ - कूपम, अथवा बेरेट्रम, १ थूँड़ पानी में मिखाकर उसकी चौथाई नित्य एक दफे सेवन करना चाहिये ।

२ - जल्द पचने वाली चीज खानी चाहिये वें कायदे और वे बच्चे खाना, रात में जगना, शराब पीना वगैर बना है ।

३ - नदी या ठाखाब का पानी साफ करके पीना चाहिये । पहले पानी गर्म करके तब कोयला और बाछू रेत से साफ करलेना उचित है ।

४ - हमेशा खूब साफ रहना चाहिये - कपडा धिछावन, और घर खूब साफ रखना मुनासिय है ।

५ - मकान में किसीके यह बीमारी हो तो रोगी का पाखाना अथवा पेशाब और कै को किसी दूसरे खरतन में रखकर मकान से बहुत दूर फेंक जाना चाहिये और कपडे धिछावन वगैर को जला टाकना चाहिये नदी या ठाखाब में बीमार के खराब कपडा न घौना चाहिये ।

६ - जिस घर में रोगी रहा हो उसको अच्छी तरह से साफ और शुद्ध करके काम में खाना चाहिये घर में कारखो धिक्खोशन छिड़क देना, गंधक जलघा देना, घाम में राख जलाना और उस घर को कुछ दिनों के घास्ते हर तरफ से खुला रखना चाहिये ताकि साफ दवाफी आमबरफ्त उसमें होती रहे ।

**१५ - खुजली । ( क्वाजन )**

**लक्षण** - चर्म में प्रदाह, रसका घटना, सूखी पपड़ी जगजाना,

खुजाबट चखना, विशेष कर रात्रि में घटजाता, भ्रकसर लडको के पैर में देखी जाती है ।

**चिकित्सा—रसटोक्स-खुजबी से पानी घहे खुजखाने पर जलम, मोटी पपडी, घराघर खुजबी चखती रहती हो - और सुर सुराता हो ।**

**सखफर—सिर और कान के पीछे, बधू के साथ फट कर खून भागा, ये घरदास्त खुजखाइत, रहने से यह दया दीजाती है सुबह और शाम में देना चाहिये ।**

**भारसिनिक-पुरानी धीमारी में खास कर रात दिन अखन रहती हो तो देना चाहिये ।**

**ढखकामारा- पासी के समान रस गिरता हो खुजखाने से खून गिरता हो जाडे और घरमात में घटजाता हो ।**

**फोटन-के और उदरामय रहने से ॥ मरफियूरियस और हीपर सखफर उमदा दधार है ।**

**सहकारी उपाय—खुजबी की जगह सायुन से खूय भोकर घराघर साफ रखनी चाहिये, साफ करके गर्म लेख खगना, जितना साफ रफखा जावेगा उतनी ही अन्दी धिमारी को भाराम होगा-ठड पासी से नधाना और घदन साफ रखा बहुत जरूरी है । धीमार को ज्यादा खुजखाने से रोकना । जखम का रस अच्छी जगह में न लगने पाये इस का ध्यान रकना बहुत जरूरी है । जहां रस खगता है वहां पर घाव हाजाता है ।**

### १६ कान में दुर्द होना

**लक्षणा—**वेह धीमारी सामय होन परभी तकलीफ बहुत होती है । भघामक दुर्द इतना घट जाता है कि जिम में बीमार

घकने लगता है। कान पर दर्द के मारे हाथ नहीं रखा जाता, कान के भीतर नागा प्रकार के अस्थानाधिक शब्द सुनाई देते हैं, कान के सुराख लाल होकर फूलजाना कोई प्रकार के प्रदाह न रहने परभी कान के भीतर बहुत दर्द होता है हमेशा ठंड लग कर और मुंह में मसूड़ा फूल जाने से कान में दर्द होने लगता है--कभी कभी कान के भीतर पानी जाने से अथवा जोर से ठंडी हवा जाने से या किसी चीज से कान खुजाने से और कान के भीतर फोड़ा होने पर दर्द होने लगता है।

**चिकित्सा ।** पेकोनाइट-ठंड लगकर नये प्रदाह में—

शिखेडौना-सीक गढाने या चीरने कासा दर्द, दर्द के मारे यकना, माघे में खून का जमा होजाना—

मरफ्यूरियससल—घबका चलते हो, गर्मी पहुंचने से अथवा विछौने पर सोये रहने से दर्द बढ़जाता हो कान फूल कर नास पास की गाँठें तक फूल जाती हैं। और दर्द कगपटी तक आजाता है और कान से पीप गिरने लगती है।

जलसीमिगम-ठहर ठहर कर दर्द होने से।

पलसटिला-ये परदाह दर्द होने से, किसी से कम न होने से, इस दवा के हस्तेमाख से तमाज्जुवकासा फूल होता है और ठंड खमने से अथवा एका एक पसीना बंद होखाने से कानमें दर्द होता हो। और कान के भीतर सुई चुवाने का सा दर्द होता हो वैचैनी ज्यादा रहती हो।

कैमोमिखा—कान के दर्द की उमदा दवाई है। कान का फूलना, उपादा दर्द का होना, गदाह होगा कान से ज्यादा पीप आना, अथवा बहरापग, बच्चों के कान में ज्यादा दर्द होने से अत्यस्त उपकारी है ऊपर लिखी हुई दवाओं से प्रदाह बंद होने पर पलसाटिखा देने से विशेष उपकार करता है।

**सहकारी उपाय**—फलाखन भयथा गैह की भुसी की पोटली बना कर गरम गरम सेंक देना चाहिये । पुखटिस से बहुत आराम माजूम देता है—ठंडी हवा कान के भीतर न जाने पाये इन लिये कान का छेद दर से बंद कर देना चाहिये ।

कान में घेघेगी होने पर बिना समझे हर एक दवाई देना उचित नहीं है । इस से दर्द बढ़ होने के बजाय बढ़ जाता है । जरूरत होय तो सरसों का गर्म तेल कान में गिरा जा सकता है ।

### १७ । कान का बहना

**इलाज**—साधारण तौर पर कान से पीप गिरने पर पख-साटिखा उम्रश दवाई है । असरा ( *measles* ) होने के बाद कान में दर्द हो तो पखसाटिखा दिया जाता है ।

कैलकेरिया और सलफर,—धीमारी बहुत दिनों की होने से और रोगी की प्रकृति कमजोर होने पर यह दोनों दवाएँ दी जाती हैं ।

कैलकेरिया नित्य प्रति दो बूके कर के १ हफ्ता तक देनी चाहिये । चार दिन बाद सलफर रोज एक बूके तीन चार दिन तक देना चाहिये ।

मरक्यूरीस—कान में घाव, बुरगन्ध, पीप, गाढ़े भयथा खून के साथ मिश्री हुई, कान के आस पास की गांठी में सूजन और दर्द, और माता निकलने के बाद कान बहता हो तो यह दिया जाता है ।

दीपर सलफर—पारा इस्तेमाल करने के सबब से कान बहता हो तो यह उपकारी है ।

आरसिनिक—जबन के साथ पीप का बहना जहाँ पीप कम पहा पर घाव हो आता और जो हमेशा घीमार रहते हैं ।

**सहकारी उपाय**—कान को हमेशा साफ रखना कान से पीप

निकलने समय बाहर न लगे उस का खयाल रक्षना, क्योंकि पीप का दूमरी जगह लगने से घाव का होना सम्भव है। हुशियारी के साथ कान में पिचकारी देने चाहिये क्योंकि गकसर पिचकारी देने के दौप से धीमारी आराम नहीं होने पाती। पांच औंस पानी में एक ड्राम कार्बोसिक एसिड और १ ड्राम ग्लेसरीन मिला कर कान में पिचकारी देने चाहिये धीमारी पुरानी होने से घदन की तन्वुरुस्ती के तरफ पूरा खयाल रक्षना चाहिये। दुर्बल के लिये कोदलीवर भोएल्ल पिछाना बहुत उपकारी है।

## १८। पीलिया

**लक्षण**—इस को पांडु रोग अर्थात् पीलिया कहते हैं इस धीमारी में आस्र अथवा मुह और शरीर के सब स्थान पीले हो जाते हैं। कपड़े में पसीना लगने से पीलेपन के दाग पड़ जाते हैं। बच्चों को यह धीमारी होने से कबजियत, अकसर उदर-गमय मुँह का स्वाद कड़वा, मिट्टी के समाग काखा दस्त, थोड़ा थोड़ा गाढ़ा खाल रंग का पेशाब, कपड़े में पेशाब लगने से पीले रंग के दाग हो जाता कभी कभी उस के साथ खुस्रार का रहना सार घदन में गुजली भावि लक्षणा रहते हैं।

पथरी छोकर पेशाब घन्ट हो जाने से बहुत दर्द रहता हो। औरठहर ठहर कर बहुत तकलीफ देने घाखा दर्द, कै, हुचकी भादि

**लक्षण**—मिलकर धीमार को बहुत कमजोर कर देते हैं।

**कारण**—अगर पित्त अच्छी तरह से पैदा न होयै अथवा पैदा होयै तो न निकलने से शूरा में मिलाकर सारे शरीर में फैल जाता हो। पथरी पैदा होने के पीछे पित्त निकलना घट हो जाये तो—जगर की क्रिया अच्छी तरह से न होने पर अथवा

जल वायु और खाना पीना बढ़परहेजों से और शराब आदि पीने-से यह बीमारी पैदा होती है ।

**चिकित्सा**—मरक्यूरियस-जिगरकी क्रिया ठीक न होने के कारण पीछिया होने से यह दवाई अच्छी है । ऐकोनाइट देने पर ज्वर और मदाह आराम होने के बाद मरक्यूरियस देना चाहिये दिन भर में तीन चार खुराक देना जरूरी है ।

**आमना**—जो मनुष्य भ्रैलोपैथिक दवाई के साथ पारा ज्यादा खा चुका हो उन के लिये और कमजोरी और पित्त के साथ उदरामय रहने से यह दवाई ज्यादा फायदा करती है ।

**कैमोमिखा** - यन्त्रों के ताँदे देना चाहिये ।

**नक्स भोमिका** - कबजियत जिगर के ऊपर दधाने से दर्द शराब पीना ज्यादा भोजन करना रात को ज्यादा देर तक जगना आदि कारण से पीछिया होने पर यह दवाई दी जाती है । मरक्यूरीयस के पीछे यह दवाई व्यवहार करने से अच्छा फल देखा गया है ।

**शैलीडोनियम**- पालिया उसके साथ जिगर और वृहों कषे पर दर्द, मुह का स्वाद फडुभा, गाढ़ा लाल रंग की जीभ का होना इन लक्षणों में यह दवा व्यवहार होती है ।

**सहकारी उपाय** - हठकी और जल पचने वाली चीज खाने को देनी चाहिये - मांस और मछली खाना ठीक नहीं है जिगर के ऊपर दर्द रहने से रोज दो तीन दफे गर्म पानी में फखायैग मिगोकर सेक देने से ज्यादा फायदा करती है । जिगर की क्रिया बिगड़ आने से रोग पैदा हो अथवा रोग पुराना पड़जाये तो प्रति दिन नियम से टहलना, कसरत करना, हलफा खाना, और जल पायू का बढ़ना यद्दुन जरूरी है ।

**लक्षणा** - फेंफड़े से होकर आवाज के साथ हवा बाहर जाती है उसी को खांसी कहते हैं। खांसी खास कोई बीमारी नहीं है बल्कि किसी बीमारी का लक्षण है। किसी बीमारी के साथ फेंफड़ा और खास नली में कफ जमने से उसको बाहर निकालना खांसी का काम है। यह अक्सर किसी कठिन बीमारी का पूर्व लक्षण है। इस लिये खांसी पर खास नजर रखकर इलाज करना चाहिये।

खांसी दो तरह की होती है। थलगम आने से गीली और थलगम न आने से सूखी कहलाती है।

### १ म सूखी खांसी

**चिकित्सा**- पेकोगार्ड-सूखी खांसी, अथवा गीली खांसी उसके साथ बेचैनी, मुह छाल, दर्दसर प्यास, गलेके भीतर खुशकी, और अलम, पेशाब थोड़ा, खांसी के साथ बुखार रहने से उपकारी, खास करके यह दवाई पहली हाथत में देते हैं।

**पैलेडोंगा** - सूखी घे रोक खास खास करने वाली खांसी गले में छुर छुरी देकर खांसी का आना जैसे गले के भीतर गर्दा पड़ा हो, दर्दसर, मुहलाख रंग और गर्म गंधे में खून जम गया हो, रात में बढ जाये मरीज सोने से जग उठता हो।

**भारसेनिक-सुबह** को पलंग से उठ कर खांसी, क्षीमे, और पेट में दर्द, थलगम के साथ जमा हुआ खून आना।

**गार्डमैनिषां-इस** से सूखी खांसी तर होती है खांसी के वक्त ऐसे माथूग होकि छाती और सिर फटा जाता है और छुई खुमाने का सा दर्द तर खांसी थलगात सफेद या पीलापन या खून मिखा हुआ।

नफसगोमीका-सूखी खासी गले में कफ का जम जाना और किसी तरह से गिरना खासी के घक में पाक जंत्र में दर्द सिर में दर्द और सिर फटा जाता हो ।

सुयह के घक और आगे के घाद खासी का बढ जाना और कथप्रियत रहना ।

फांसफरस-गला खस खस कर के वे रोक सूखी खासी, जोर से, बोखने से, इसमे से, और गाने से खासी का बढना । बलगम फैतसा, और छसदार, तमफीन, यदभू के साथ सूत मिखा हुआ ।

शाम के घक सूखी खासी में सबफर, हपिर सबफर, सीपिया, पेसिड फोस ।

प्रात कालमेंसूखीखासी-पेलूमोना, पेनटिमटटे, आरसिनिक, ।

रात के घक सूखीखासी-पखसाटिखा, नफसगोमीका, कैमो-मिखा, कैलकेरिया, मरक्यूरियस, वैकेडौना, ।

### तरखासी ।

चिकित्सा—पेगटी मोनियग टट-गले में घड घडाहट की आघाज होना, छाती कफ से मरा हुआ, मोजन के घाद खासते खांसते कै होजाना, बच्चों के दांठ निकखने के घक की खासी और घूदों को पुरानी खासी—

इपीकाक-सांघ रुकने और तकशीफ देने वाली खासी के घक मालूम देना कि कफ मरा हुआ है । परंतु निकखता नहीं बच्चा को खांसते खांसते सांस बद् होकर नीखापन होजावे जीमिखखाना और कै, का होना ।

मरक्यूरियस सल-पुरानी तरखासी, राशी और औमासे में घडजाती है गले से लेकर छाती तक जलन और दर्द का होना सरदी के सवव से शिर दूखना, जुफाग, उदरामय और बुखार



कफ निमकीन और सडा हुआ और लाख रग और पतला ।

भारसिनिक—चार चार पानी का पीना घेंचनी, हापना और सास लेने में तकलीफ का होना विशेष कर उच्चारण चढ़ाई पर । कफ का थोड़ा भाना लेकिनगिरने में ज्यादा का का होना

सखफर—हरे रग का मीठा कफ, घमं रोग, छाती में कफ के सवष से घड़ घड़ की आवाज होना और सुसू के घक्त खार्म का घड़ जाग, कमजोरी और बुखले आदमी के खिये उपकार है । खासी किसी से आराम न होती होवे और छाती पर योभं सा गालूम होवे । दिन में तर अथवा खासी कफ का रग सफेद या पीला परन्तु रात्री में सूखी खासी

पखसिटला—तर खासी शग के घक्त घड़जागा दिन में तर खासी परन्तु रात्री में सूखी ।

### ३—स्वर भग के साथ खासी ।

चिकित्सा—मरफ्युरियस सौख । थोड़े सरदी के कारण खासी और स्वर भग

फोम फरस—धीमारी सप्त होमे पर, ज्यादा खासी अथवा स्वरभंग के साथ छाती में दर्द ।

स्पनजिया—स्वर भग और उस के साथ खासी और शरदी, मरफ्युरियस से उपकार न होने से यह दिया जाता है ।

होकर सखफर—स्वर भग के साथ तर खासी की उत्तम चर्चा है । जोर के साथ डेखी की डेखी कफ बार्ना, ठंड लगने से घड़जागा, और पुरानी घदहजमी के साथ खासी ।

घड़हजमी के साथ खांसी—नफसघोमीका कारबोवैजीटेबि-  
व्रिस, ग्राइवौनिया ।

घब्रों को खांसी—कैमोमिखा पखसाटिखा, एमटिमटाटं, ।

कै के साथ खांसी—इपीकाक एनटिमटाटं, ड्रोसैरा, ।

छाती में दर्द के साथ खांसी—ग्राइवौनिया, सलफर  
फोसफरिस ।

खून के साथ खांसी—इपीकाक, गारनिका, फोसफरिस,  
सलफर, ।

पुरानी खांसी—जार्ड कोपोडियम, कैलीकार्थ स्पंजिया, विड्रो-  
होना, सलफर, फोस फरिस ।

**सहकारी उपाय**—मकसर बीमार कोशिश कर के  
खांसी रोक सकें हैं, इस लिये जहा तक होसके ऐसी कोशिश  
करना उचित है ।

जिम लोगो को सर्दा सररी और खांसी होती है उन लोगो  
को रोज ठंडे-पानी से छाती पीठ, गला, धौना गच्छा है । साफ  
अगह में रहना मुनासिब फसरत, साफ हवा, ठेगा चाहिये । गर्ब  
और घबड़ की अगह से परहेज करना जाजिम है - सूजी खांसी  
में मुह में सबा मिथी रखना गच्छा है । गले में सुर सुराइट  
कर बराबर खांसी भाबे तो सेकना घुरा गहीं है । अगर खांसी  
न गाराम होवे तो सीतेका इमूतहान गच्छे डाक्टर से करा कर  
राय लेना मुनासिब है ।

### ४-हूपिंगखांसी

**लक्षण**- हूपिंग खांसी सक्तामक और फैलगे वाली बीमारी है  
मकसर पधों के होती है । तगबुरस्त बच्चे को जितनी तकलीफ

नहीं होती परन्तु रोगीले और कमजोर बच्चों को ज्यादा तकलीफ देती है और कभी कभी जान लेने वाली भी होजाती। पहले थोड़ी सरखी स्वरभंग और खांसी होती है। यह खांसी ठहर ठहर के होती है।

कभी कभी खांसी इतने जोर से उठती है कि बच्चे का मुह, छाछ और नीखा होजाता है और ऐसा मालूम होता है कि दमघद होजायगा और एक तरह की भाषाज हुप करके होती है, इसी से इसको हूपिंग खांसी कहते हैं। दो तीन घंटा बाद खांसी उठती है और रात को घट जाती है।

**चिकित्सा-**रूपीकाक रोग की पहली हाखत में। सूखी खांसी जैसे कि दमघद होजाना मालूम पड़े। ज्यादा कफ गिरता हो। दो तीन घंटा बाद दवा देना चाहिये।

**ड्रोसेरा -** ज्यादा भाषाज से खांसी, स्वरभंग, बारबार खांसी, पसीना आना, आई हुई चीज की कै होजाना और कफका भागा हरएक खांसी के बाद एक २ खुराक देना चाहिये।

**फूमग -** साघातिक प्रकार अथवा जान लेने वाली हूपिंग खांसी। घायटा मौजूद रहगा, और सब शरीर कडा, मुह का खाखरंग होजाता है इस हाखत में गले में कफकी घट घट की भाषाज हो तो फूमग, के साथ पेनटिमट्राई, घारी घारीसे देना चाहिये।

**सीना -** पेट में कीटा रहने के साथ हूपिंग खांसी।

**फालीयार्कमीकम -** कफ गोंद फासा कडा, बहुत और गले में खगा रहना इसी लिये कै होजावे तो देना चाहिये।

**पिलोडौना -** रात में खांसी का घटजाना, गले में दर्द माथे में खून जम जाना, नाम से खून गिरना, साधारण हूपिंग खांसी में एकोगास्ट के बाद, पिलोडौना, उपकारी है।

**सहकारी उपाय** - जल्दी पचने वाला और ताकत देने वाला पचप मुनासिब मिफशर में देना चाहिये । इनके विपरीत करने से खानी बढ़ जाती है । इस लिये साधुवाना मधुषा धारणी का पानी अच्छा है । थोड़ी थोड़ी मिथी खाने को देना भी उपकारी है । जिससे बच्चा खुशी और खेल में रहे वह करना चाहिये ॥ क्रोध मधुषा और कोई फारण से उत्तेजित होने से खानी बढ़ जाती है । सरसों का तेल गर्म करके माखिश करना और गन्ना मिजोये रखना उपकारी है । अरुण होवे तो छाती और गले में गर्म पानी से सेक देना भी मुनासिब होता है ।

### ५ - घुगरी खासी

**लक्षण** - यह खासी बच्चों को होती है और बच्चे को मारहाखने वाली है पहले थोड़ी सर्दी मानूम देती है उसके साथ युष्कार स्वर संगता भावि लक्षण रहते हैं । ऐसी स्वर भगता सुगमे से घुग-राखी खासी का लक्षण है दो तीन घंटा रात्रि जाने के बाद बीमारी बढ़ जाती है । और खासी भी जोर करती है । बच्चा अपना माथा तकिये के पीछे की तरफ छटका देता है । सांस खेरे में सफलीफ होती है । और अच्छी तरह से सांस नहीं लेसकता इस से मुँह लाल रंग का होजाता है । दो बार दिन क याद् बीमारी सफ्त होजाती है और कमजोरी, सांस घद् मधुषा धाँधट भादि के समय से मरनी जाता है ।

**चिकित्सा** - पहले दाखत में एकोनाईट, के साथ पारिल स्पजिया दिया जाता है ।

घटने की दाखत में - कालीपार्कम, स्पजिया वेगटिमटाई हीपर सन्नकर ।

नहीं होती परन्तु रोगीखे और कमजोर बच्चों को ज्यादा तकलीफ देती है और कभी कभी जान लेने वाली भी होजाती। पहले थोड़ी सरदी स्वरभंग और खासी होती है। यह खासी ठहर ठहर के होती है।

कभी कभी खासी इतने जोर से उठती है कि बच्चे का मुह खाल और नीखा होजाता है और ऐसा मालूम होता है कि दमबंद होजायगा और एक तरह की आवाज हुप करके होती है इसी से इसको हूपिंग खासी कहते हैं। दो तीन घंटा बाद खासी उठती है और रात को बढ जाती है।

**चिकित्सा-**स्पीकाफ रोग की पहली हाजत में। सूखी खासी जैसे कि दमबंद होजाना मालूम पड़े। ज्यादा कफ गिरता हो। दो तीन घंटा बाद दवा देना चाहिये।

**ड्रोसेरा -** ज्यादा आवाज से खासी, स्वरभंग, घारघार खासी, पनीसा भाना, खाई हुई चीज की कै होजाना और कफका भाना हरएक खासी के बाद एक २ खुराक देना चाहिये।

**कूपम -** साधातिक प्रकार अथवा जान लेने वाली हूपिंग खासी। बांधटा मौजूद रहगा, और सब शरीर कडा, मुंह का साधरंग होजाता है इस हाजत में गले में कफकी घट घट की आवाज हो तो कूपम, के साथ पेनटिमार्टे, घारी घारीसे देना चाहिये।

**सीमा -** पेट में फीटा रहने के साथ हूपिंग खासी।

**फाल्जीवाइकमीकम -** कफ गोंद कासा कडा, बहुत और गले में खगा रहना इसी लिये कै होजावे तो देना चाहिये।

**पिछोडौमा -** रात में खासी का बढजाना, गले में दर्द माचे में खून जम जाना, नाक से खून गिरना, साधारन हूपिंग खासी में एकोगाइट के बाद, पिछोडौमा, उपकारी है।

**सहकारी उपाय** - जल्दी पचने वाला और ताकत देने वाला पच्य मुनासिब मिक्चर में देना चाहिये। इनके विपरीत करने से खात्री बढजाती है। इस लिये साधुदामा भयवा यारखी का पानी अच्छा है। थोड़ी थोड़ी मिथी खाने को देना भी उपकारी है। जिनसे बच्चा खुशी और खेळ म रहे वह करना चाहिये। क्रोध भयवा और कोई कारण से उत्तेजित होने से खात्री बढजाती है। सरसों का तेल गर्म करके माखिश करना और गन्ना मिजोये रखना उपकारी है। अकुरत होंगे तो छाती और गले में गर्म पानी से सेक देना भी मुनासिब होता है।

### ५ - घुगरी खात्री

**लक्षण** - यह खात्री बच्चों को होती है और बच्चे को मारहाखने वाली है पहले थोड़ी सर्दी मालूम देती है उसके साथ बुखार स्वर भगता आदि लक्षण रहते हैं। ऐसी स्वर भगता सुनने से घुगराखी खात्री का लक्षण है दो तीन घंटा रात्रि जाने के बाद धीमा हो बढजाती है। और खात्री भी जोर करती है। बच्चा अपना माथा तकिये के पीछे की तरफ खटका देता है। सांस खेले में तकलीफ होती है। और अच्छी तरह से सास नहीं लेसकता इस से मुंह लाल रंग का होजाता है। दो चार दिन के बाद धीमारी सखत होजाती है और कमजोरी, सास बद्द भयवा बांढे आदि के लक्षण से मरती जाता है।

**चिकित्सा** - पहले हाखत में एफोनाइंट, के साथ पारीस स्पर्जिया दिया जाता है।

बढने की हाखत में - काखीवाइफ्रम, स्पजिया पेनटिमटाट हीपर सबकर, ।

स्वरभग के साथ खांसी - हीपरसखफर, फोसफरस, कार्बो  
तैजी टेपिलिस, सखफर ।

हीपर सखफर - गले के भीतर कफ जम जाना, सांस बंद  
होने का डर होना ।

फाफ़ीघाई कोसीकम-कफ, मोढ़ के समान लसदार और कड़ा  
होने से यह दवाई हीपर सखफर से अच्छी है ।

स्पजिया—दिन रात घन घन करके खासीका आना और  
सांस खेने में तकलीफ होना,

पेनटिमटार्ट—गले में कफ घड़ घड़ करगा हो परन्तु निकल  
न सका हो—ठंडा और लाल रंग का मुह कमजोरी और ठंडा  
पसीना ।

सेवनविधि ।—धीमारी सखत होने से दस पन्द्रह मि  
मट घाढ़ और ज्यादा सखत न होने पर दो तीन घंटा घाढ़  
दवा देने चाहिये

सहकारी उपाय ।—जिस से रोगी को गुस्ता पैदा हो  
येसा काम न करना चाहिये—गले में फलाजैम बांध कर सेक देना  
अच्छा है । बहन गर्म रखना अच्छा है । धीमारी के घड़ने की हाथत  
में पानी एक मात्रपद्य है । कमी कमी साबूदाना और धा-  
रली का पानी देना उचित है । एका एक कमजोरी हो जाने से  
पद्य के ऊपर ध्यान रखना चाहिये । बच्चा भगर छाती का वृष  
विये तो उस की माता का परहेज रखना भी जरूरी है

२०।—कैचुआ अथवा पेट में कीड़ा पैदा ।

लक्षणा ।—भूख न लगना अथवा बहुत मूख लगता, और  
बार बार पेशाब लगना, पेशाब मैले रंग का मुह और आंख

रक्तहीन मालूम होती हो। नाक की फुलफ और गुदा में खुजावट। सोते में दांत फिट फिटाना और चिन्काना

**चिकित्सा ।—**कैबकेरिया कार्व—पुरानी धीमारी और शरीर में कमजोरी इस से चार चार कैबुप पड़ना बंद हो जाता है।

सीना—हमि अथवा कीड़े की अच्छी दवाई है—मुह से पानी आना जी मिचखाना पेट में फाटने का सा दर्द—नाक और गुदा द्वार का खुजखाना, और सफेद रंग का मैला पेशाब होना आदि लक्षण में यह दवा देना उचित है

इंग्लिशिया—गुदा द्वार में बहुत खुजावट, स्नायविक उत्तेजना मूछा इन लक्षणों में देना चाहिये।

टियुक्रियम—गुदा द्वार में बहुत खुजावट और छोटा छोटा कीड़ा,

मरफ्युरियस—कीड़े के कारण से उदरामय, पेट में दर्द, पाखाने के जाने के बलत जोर देना, कीड़े के कारण नाक से खून गिरना।

सखफर—और और दवाई इस्तेमाल करने के बाद यह दवाई दी जाती है जैसे कैबकेरिया चार चार कीड़ा पैदा करना बंद कर देता है वही गुदा सखफर में भी है।

**सहकारी उपाय ।—**निमक और पानी की पिचकारी देना अच्छा है।

सब तरह की मीठी चीज, और सखी चीज, देर में पचने वाली चीज, खाना मना है। बनार की अड का छीछका पानी में भोंटाकर पीने से कीड़ा मरजाते हैं।



स्वरभग के साथ खांसी - हीपरसलफर, फोसफरस, कार्बो  
तैजी डेबिलिस, सलफर ।

हीपर सलफर - गले के भीतर कफ जम जाना, सांस बंद  
होने का डर होना ।

काष्ठीवाइ कोमीकम-कफ, मोक्ष के समान बसदार और कड़ा  
होने से यह दवाई हीपर सलफर से अच्छी है ।

स्पजिया—दिन रात घन घन करके खांसीका आना और  
सांस खेने में तकलीफ होना,

पेनटिमार्ट—गले में कफ घड़ घड़ करना हो परन्तु निकल  
न सके हो—ठंडा और साख रग का मुह कमजोरी और ठंडा  
पसीना ।

सेवनविधि ।—धीमारी सन्न होने से दस पन्द्रह मि  
नट घाड़ और ज्यादा सन्न न होने पर दो तीस घंटा घाड़  
दवा देनी चाहिये

सहकारी उपाय ।—जिस से रोगी को गुस्ता पैदा हो  
पेसा काम न करना चाहिये—गले में फलाखिन बांध कर सेक देना  
अच्छा है । बदन गर्म रखना अच्छा है । धीमारी के बढने की हालत  
में पाणी एक मात्रपथ्य है । कभी कभी साखूदाना और वा-  
रकी का पानी देना उचित है । एक एक कमजोरी हो जाने से  
पथ्य के ऊपर ध्यान रखना चाहिये । बच्चा अगर छाती का दूध  
विये तो उस को माता का परहेज रखना भी जरूरी है

२०।—कैचुआ अथवा पेट में कीड़ा पैदा ।

लक्षणा ।—भूख न लगना अथवा बहुत भूख लगना, और  
बार बार पेशाब लगना, पेशाब मैले रग का मुह और आस

कौलिससोमिया—अगर पुरानी बवासीर हो तो देना चाहिये ।

हार्डेसटिस—बहुत उमदा दवा है वे मिलाया बकं अथवा पहला डायर्यदान इस्तेमाख करते हैं ।

पोडोफार्डिम—सयत सूखा और कडा दस्त जाने पर कुछमी न उतरे और पेट में दूद होता हो ।

## पुरानी बीमारी

पुरानी बीमारी में—नफसमोमिका और सलफर हफता में दो दफे नफसमोमिका और दो दफे सलफर लारी से देना चाहिये ।

हार्डेसटिस एक उमदा दवा है । इस दवासे फायदा न होवे तो कैबकेरिया फार्म, और प्रेफाइटिस देते हैं ।

सहकारी उपाय - कभी जुखाम न छे - मामूली कब्ज हो तो हरगिज जुखाम खेना उचित नहीं है । आज फख देखा जाता है कि कोई हफते में और कोई महीने में दो दफे जुखाम खेखिया करते हैं । यदि कोई चाहे कि इससे शिकायत बूर होजाये सो ऐसा नहीं है यदिक तकलीफ बढजाती है ।

इस तकलीफ में पानी एक दया है पडे सवेरे ठंडा पानी पीना और ठंडे पानी से नहाना उपकारी है । पेट में सुहा अथवा गांठ पढजाये या बहुत दिनों से कब्ज के सयष से तकलीफ होवे तो सायुन को गर्म पानी में मिलाकर पिचकारी देते हैं दर रोज मुफ-रेंर बक पर पाखामा जाना और पाखामे फिरने की हाजत होने से इस काम को तमाम करना, ठीक बक पर दहलना, और कसरत धीरे मामूली बातों पर ध्यान देना उचित है ।

पथके धारे में भी धूय ध्यान रखना चाहिये । दूध शरबत

## २१।—कवजियत

नियम के विरुद्ध खाना, सुस्ती, अकेले में रहना, और धार धार जुझाव लेने से जिगर की क्रिया बंद हो जाती है और आंत की कमजोरी से यह बीमारी पैदा होती है दवाई से आंत के पट्टों में ताकत पहुंचाने से और तेज करके असखी हाथत से आंतों से यह बीमारी जाती रहती है।

**चिकित्सा।**—नफ्स योमिका—नई पुरानी हर तरह की शिकायत में फायदा करती है और धार धार पाखाने जाने की हाजत होती हो परन्तु दस्त खुल के न आने से।

ज्यादा शराब, अथवा घूँघ्रपान करने के कारण से बीमारी होने से ये दवा फायदा करती है।

गर्भ घटी स्त्रियों को कवजियत में नफ्सयोमिका, ओपीयम, सीपिया,।

प्रसव की अवस्था में ब्राह्मयोगिया, ग्लाटीना,।

सवारी में घूमने से कवजियत में—ग्लाटीना, पेलोमीना,।

पाखाना की हाजत बिलकुल न होगे पर—नफ्सयोमिका ओपीयम।

मल बहुत कड़ा होने पर लकीसिस, पिचवम, सीपिया, सखफर, म्पम।

बकरी के समान मैंगनी सा दस्त होने पर, सखेसिया, लकीसिस,।

ब्राह्मयोगिया,—हाजत न होती हो, दईसर, जिगर के ऊपर दर्द, पाखाना सूखा सख्त।

ओपीयम—आंत के मल भिजावने की ताकत जाती रहे। घृदों के लिये खास फल मुफीद है।

सहकारी उपाय—गर्म पानी से फुलावने के जरिये सेक करना, गर्म तेल से पेट पर माखिस करना, पैर पर छड़के को पेट के पल सुना कर उस की पीठ बाहिस्ता बाहिस्ता सह खाना चादिये ।

३—ग्रन्थी सिफन्—मधवा गांठ फूलना ।

लक्षण—कितनेही कारण से घदन के हर एक जगह की गांठ फूल जाती हैं, दर्द, सूजन, कडापन, खालरग, और जलन सपक, घौरा भादि लक्षण दिखाई देती,—ठंड खग कर मधवा और कोई कारण से गला गदन, घगख, रग, घौरह में गांठ उठते देखा गया है ।

चिकित्सा—बेलोडौना—जखन के साथ सूजा, गर्मी और सपक

कैलकेरिया—गला, गर्दन, बगल पेडु भादि स्थान की गांठ सूज कर सपक होजाने से और नास कर उस के साथ फान का रहना, ऊरा सुना, भादि लक्षण में यह दवाई देना, अच्छा है । ये अकसर सलफर के बाद दिया जाता है ।

मरक्यूरियस—गर्मी की पीगारी के सधय होने से उपकारी है ।

रमटोफम—सागण्य गांठ की सूजन में अच्छा है ।

सलफर—पारे के खाने से, चर्म की पीगारी, कठमासा, भादि कारण से गांठ फूल जावे तो मधवा कड़ी होजावे या पकजावे तो दिया जाता है ।

हीपर सलफ—गांठ फूल कर पकजावे या पीप पडजावे तो इसे देना फायदे मन्द होगा ।

अगरा बुम्बार के बाद गांठ फूलजावे तो—मरक्यूरियस मायो-टाइड और कैलकेरियफ, खारफो पोडियम देना चादिये ।

घौर: पीने की चीज अधिक काम में लासके हैं। मास खाना अच्छा नहीं। पका फल जैसे पपीता आम, शरीफा घौरा उपकारी है। भूसी मिले हुये आटे की रोटी, दही, छाछ आदि कफ्र में फायदे मन्द् है।

## २—लडकों का रोना ।

बच्चे अफसर खूब जोर से चिल्ला कर रोते हैं। जब बच्चे रोवे तो भूख से रोत हैं वह दूध पिबाने सेही खुप होंगे यह बात नहीं है। और जब किसी तकलीफ से बच्चे रोवें तो उन को दूध पिबाना कर बच्चे करने की कोशिश फिजूल है।

जब लडके रोये तब समझना चाहिये कि इस को जरूर कुछ तकलीफ है इसलिये यिमांरी निश्चय कर लेना उचित है।

बैचैनी के साथ रोने से पेट की तरफ पैर उठा कर रोने से पेट में दर्द मुह में उगली देकर रोने से दांतों में दर्द दांत निकलने की तकलीफ और खांसते बच्चे रोवे तो सीने में दर्द समझना चाहिये।

**चिकित्सा—**बिलोडौना—काई बघार का कारण नहीं देखने से यह दवा धिजाती है।

देकोमाइट—बुखार रहने से बदन गर्म और नाडी तज और प्पास।

कैमोमिखा—बराबर पेट की तरफ पैर उठाकर रोवे, या पेट फूलता हो, पेट में दर्द, या हस्त पतला आता हो।

कैम्फर—कैमोमिखा देने से कुछ फायदा दिखाई न देता होतो और ऐसी समझ में आये कि बच्चे के बहुत दर्द है उस बच्चे को छोडी साफ चीनी में मिखा कर थोडा थोडा खिला देना चाहिये।

मार्योगिया—रोने के साथ कफ्र रहने से।

गरक्यूरियस भाव - बहुत दिन तक टहरगे वाला गलेगड और दवाई देने से भी बढ़ता हो। मेघग की तरफिय, स्पंजिया के ममान

केलकैरिया-पाठमाळा गेग की घट अच्छी दवा है। गलगड की सुरुमात हासे ही दवा करगी आदिये नहीं तो घट जाने से फिर आराम नहीं होता है।

## २५ गले में घाव ।

लक्षणा - गले के भीतर सूजन खाक रग निगलने में और खास खेने में तकलीफ और कभी कभी बुझार रहता हो। मामूली तरह पर घिमायी हो तो जल्द आराम होजाता है। अगर मरत घिमारी होवे तो गले में घाव होकर खास की गली तक पहुचता है। उस हालत में खास रुकजाता है और नाफ से घात निकलती है - शरदी, जोर से खोलता, गाने से, खेकनर देने से, पारा खाने से या गर्मी होने से गले में घाव होता है।

चिकित्सा- विखोर्झाना - गले के भीतर खासवर्ग निगलने में तकलीफ होती हो।

मरक्यूरियस - अगर ऐसा मालूम देता हो कि गले में कुछ अटका हुआ है। और रात में तकलीफ बढ़जाती हो। और कभी कभी अचिक्लार बहती हो।

सैकेसिस - गला सुरसुराता हो जिमसे जखदी जखदी खांसी आती हो और मालूम होता हो कि खान पच होगया है। गले में दूद और अलग होती हो।

आरसिनिक - ज्यादा कमजोरी रहने से और गले के भीतर मालूम देता हो कि सब गया है तो इसे देना आदिये।

येकोनाइट - गले के भीतर सूखकी, और गर्मी, आवास का

नई गाठ फूलने से—घिबोडौना, रमटोकस, हीपर सख  
फर, सैलीसिया, ।

पुरानी गाठ फूलने से—आयौडियम, मरकपुरियसमायोडाईड,  
फाल्सी आयोडाईड, फैलकेरिया, सखफर ।

**सहकारी उपाय** धुँ की जगह को फबालेन भादि कपडे  
से ढाके रहना - सरदी अथवा पानी से बचाव रखना चाहिये  
धुँ की जगह पर चूना लगाना उपकारी है । फलाजेनी गर्म पानी  
में भिंगोकर भेक देना भी उपकारी है ।

## २४ गलगड

फठ के ऊपर गाठ निकल कर फूल जाती है । गाठ बढ़ने  
से स्वास गली पर बधाव पडना है जिससे स्वास रुकने  
लगती है कोई कोई कहते हैं कि यनिसबत पुरुष के औरतों को  
उपादा होती है विशेष कर ज्यादा मेहनत करने वालों को यह  
रोग होता है गलगड स्पान और माघ हवा की सरायों से  
होना है ।

**चिकित्सा** - स्पजिया - शकसर यह दवा फायदे मन्व होती  
है । सुबह स्वास रोगों दफे ६ दिन तक खिलाकर १ हफ्ते तक  
बंध रखना चाहिये उसको फिर शुरू करके ६ दिन बाद बंध  
करे ।

**ध्यूजा** - जो नसे फूल जाया करती हैं और उसमें धुँ भी  
हो तो यह देना चाहिये ।

**आयौडीन** - स्पजिया से फायदा न होन पर यह दवा उमदा  
है गलगड फडा अगवा अनाध्य होने से और कोई विशेष लक्षण  
न रहने से यह देगा चाहिये ।

मरक्यूरियस भायड - बहुत दिन तक टहरने खाया गलगाह और दवाई देने से भी बढ़ता हो। सेवन की तरफिय, स्पजिया के समान

कैलफोरिया-कठमाखा रोग की यह अच्छी दवा है। गलगाह की सुरुआत होते ही दवा करनी चाहिये नहीं तो बढ़ जाने से फिर आराम नहीं होता है।

## २५ गले में घाव ।

**लक्षण** - गले के भीतर मूजम जाल रंग निगलने में और खास लेने में तकलीफ और कभी कभी बुझार रहता हो। मामूली तरह पर बिमारी हो तो जल्द आराम होजाता है। अगर बहुत बिमारी होवे तो गले में घाव होकर खास की गंधी तक पहुँचता है। उस हालत में खास रुकजाता है और नाक से घात निकलती है - शरबी, जोर से बोलना, गाने से, खेककर देने से, पारा खाने से या गर्मी होने से गले में घाव होता है।

**चिकित्सा**- बिखोटाईना - गले के भीतर खालधर्मा निगलने में तकलीफ होती हो।

मरक्यूरियस - अगर ऐसा मालूम देता हो कि गले में कुछ अटका हुआ है। और रात में तकलीफ बढ़जाती हो। और कभी कभी भयिकलार रहती हो।

लैकेसिस - गला सुरसुराता हो जिमसे जलदी जलदी खाँसी आती हो और मालूम होता हो कि खास बढ़ होगया है। गले में दूध और जलज होती हो।

आरसिनिक - ज्यादा कमजोरी रहने से और गले के भीतर मालूम देता हो कि सब गया है तो इसे देना चाहिये।

वेकोनाइट - गले के भीतर खुशकी, और गर्मी, भाषाज का



बैठ जाना, और उसके साथ बुखार रहने से—भगर सर्दी के साथ से हो तो पहली अवस्था में यह धवाई देनी चाहिये।

घैराइटाकार्य - थिलोडोना या मरफ्यूरियस, से कोई फायदा न दीखे तो अथवा टैटुओं के होने तक प्रदाह होने से विषा जाता है।

**सहकारी उपाय** - एक कपड़े के छोटे टुकड़े को ठंडे पानी में भिगोकर निचोड़कर गले के चारों तरफ छपेट दें और उसके ऊपर दो तीन, तै, फला जन छपेट देने से रात के बक्त इस तरीकीय के करने से गले का दर्द बहुत जल्द जाता रहता है। वेरिस्टर व्याख्यान देने वाले, ठपयसाय और गाने वाले जिनको खर यत्र के ऊपर जोर देने का काम पड़ता है उन्हें डाँटा रखा चाहिये।

## २६ — गर्भ अनस्था की पीडा

गर्भ की हालत में कुछ घातें देखने में आती है। इसी लिये उनके इलाज भलग लिये जाते हैं गर्भ के समय की जो तकलीफ है उन सबों के इलाज में होशयारी रखना जरूरी है जिन चिकित्सायतों से किसी तरह की दुर्गाई की उम्मेद न हो उनका इलाज करना जरूरी नहीं है।

## १ वमन ।

मुँह से पानी आना जी मिचछाना अथवा के, होना गर्भावस्था की शुरू हालत के खास लक्षण हैं। नकमर यह सुपह या भोजन के बाद अथवा भोजन से पहले होती है।

**चिकित्सा**।—इपीकाफ, हर बक्त जी मिचछाना, विस्त अथवा फफ के साथ वमन होना।

नकममोमिका—एक उम्मेद धवाई है।

मुद्-में ज्यादा पानी मारने से मरक्यूरियस दना चाहिये ।  
पलसेटिखा—शाम और रात्री के समय कै होंगे पर उम्दा  
दवाई दे ।

सहकारी ऊपाय ।—सुबह बिछने से उठते ही गरम  
दूध पीने से उपकार होता है ।

### २।—फवजियन

गर्भ अथस्या की पूरी हालत में यह लक्षण बहुत होना है  
इसे तकलीफ समझनी ठीक नहीं है । परन्तु जब फवज के स-  
वध फोड़ दूनरीदिफायत अरुचि अर्नाद्रा तथा अजीर्ण होयै तो  
दवा का इस्तेमाल करना जरूरी है ।

चिकित्सा ।—गफसभोगिका—उम्दा दवाई है । इस से फोड़  
फवज न होंगे भे प्राइयोमिया देना चाहिये । अगर और दवाओं  
से फायदा न पहुचे तो सीपिया देते हैं । किसी फिस्म का जु-  
खाव देना मना है । दूध पका हुआ मीठा फवज, ठंडा पानी पीना  
और ठंडे पानी से नहाना अच्छा है ।

### ३।—उदरामय—पेट की बीमारी

गर्भ की अथस्या में उदरामय होना बहुत खराब है इस से  
घटत कमजोर होकर गर्भ नष्ट हो सका है ।

चिकित्सा ।—कैमोमिखा उमदा दवाई है ।

पलसेटिखा—कैमोमिखा के बाद घेते हैं खास कर पाखाना,  
हरे रंग का होवै और पतला, पाखाना फिरने के पहले पेट में  
वर्द होवै ।

सबफर अगर और किसी दवा से फायदा न होवै तो इस  
घेते हैं ।

खाती में जलन होने से चायना देने हैं। और खाने की बद्द-  
रेहजी होने से परसेटिक्का देते हैं।

जीम का खाद्य स्रष्टा और कडवा होवे तो नक्सत घोमीका  
अथवा खायना के साथ पारी से दैना चाहिये खाने की तरफ  
ज्यादा ख्याल रखना चाहिये जिस से घीमारी जल्दीदूर होजावे  
उस पर ख्याल रखना चाहिये।

## ४—गर्भपात यानी हमल गिरना।

गर्भस्राव होना बहुत संघातिक है इस से खाली बच्चे कीही  
जान नहीं जाती घरेमें औरत की जिम्दगी भी खतरेमें पडजाती  
है। एक बच्चे गर्भ गिरने से दूसरी बच्चे फिर उसी बच्चे पर  
गर्भ गिरने का डर रहता है।

**लक्षण।** मासिक अथवा रजस्वला धर्म होने के पहले  
जैसी तथियत विगड जाती है गर्भ गिरने के पहले भी एसी ही-  
हालत होती है उस के बाद वे-परदास्त दर्द, थोडा अथवा ज्यादा  
खून गिरना उस के बाद पानी निकलने के साथ स्रया यानी बच्चा  
निकल आता है। कई तरह के घाहरले सधप से जैसे कि स्रोत  
लगना अथवा पैर किसलना बहुत भारी खीज उठाना रज और  
सकलीक आदि कारण से गर्भ गिर जाता है।

**चिकित्सा।** सिकेही—ज्यादा प्रसव का दर्द उस के  
साथ फाळे रग का जमा हुमा खून गिरना पूरे बच्चे के हगल  
गिरने में ज्यादा मुफीद है।

**सर्वाहना—**गर्भ स्राव, ज्यादा उज्जल लाल रंग के खून का  
गिरना अराय में गर्मी और दर्द, मालूम देता होवे या जिन को  
तीमरे महिने हगल गिर जाता हो उन को उपकारी है।

एकोनाइट—नएज पूरी और तेज खून तेज करने वाले लक्षण मोजूद रहें तो यह या इस के साथ दूसरी दवाई पारी से वैनी चाहिये गर्भ गिरने का डर या मरने का डर होये तो यह उपकारी है।

आर्निका-गिरना, घोट खगना ज्यादा, मिहनत, आदि कारण से गर्भ गिरने का डर हो तो दूसरी दवाई के साथ यह दवा देने से शास्त्रिय फल मिलता है। हमल गिरने के पहले जिस वक्त तथियत कुछ खराब हो उस समय यह दवा देने से गर्भ गिरने का डर नहीं रहता है।

सहकारी उपाय। मामूली खून देखतेही घीमारको आराम से रहना चाहिये जयतक कुछ मय मिटना जाये वसी तरह से रहना चाहिये। खासकर पैरों कोही स्थिर कर के न रखना चाहिये वक्तिक सारे शरीर को स्थिर रखना मुनासिब है। पुरप के संग भोग, ममकी चिन्ता, ज्यादा मेहनत, खराब चीज खाना, इन बातों से परहेज रखना चाहिये।

रोकने की तदधीर—जिनका एक बर्फे गर्भ गिर चुका हो उन को फिर गर्भ रहते ही खासकर ठीक उसी वक्त जिस वक्त पहिले गर्भ गिर चुका हो होशियारी से रहना चाहिये पहिले जिस वक्त गर्भ भष्ट हुमा हो उसके दो तीन महीने पहिले से दिन में एक बर्फे, या दो बर्फे सीकेली, या स्याईना इस्तेमाख करना चाहिये।

गर्भ पहले दो चार महीने में गिरने से स्याईना, और बकीर वक्त में सीकेली देना चाहिये।

बदन के ठनदुदस्त रखने को हर तरह की कोशिस करना जरूरी है।

## ५ - पैरफूलना ।

गर्भ की पुर्ण गद्यस्था में औरतों के पैर, और रान, यहाँ तक कि स्त्री जनने की इन्ट्री तक फूल जाती है ।

जरायू के भीतर यद्ये के द्वारा योक्त पडने से शरीर के निचले हिस्से में दौरान सूत में घाघा पड जाना ही इसका असल कारण है ।

**चिकित्सा**—मार्सनिक पैर ठण्डे, सूजन का घटजाना और कमजोरी, नाडी दुर्बल

एपिम—जल्दी २ पैर फूलजाना और पेशाब करने में तकलीफ ।

; चायना - उदरामय, पेधिस आदि कारण से कम जोरी होने पर ।

सखफर - पहिले चर्मरोग की बीमारी हों और गर्भ होने से जाती रहे तो यह उपकारी है ।

**सहकारी उपाय** - बैठने के समय पैर ऊंचे रखने । खडे रहने से बलगा फिरना अच्छा है । रात में सोने से पैर की सूजन उतर जाती हो ।

२७।—**चक्षु प्रदाह** ( अथवा आंख सूजना ) ।

**लक्षण** । आंख का सफेद हिस्सा खाल हो जाना आंखों में गर्मी और दर्द आंख में रेत गिरने के सामन सूजना, प्रकाश असज्ज, आंख सूखी मासूम होना अथवा आंख से पानी गिरना । इसके साथ साथ कभी कभी पुखार भी रहता है । आंखों में गर्मी घूमा, घूप, स्राव ठडी हुना तेज प्रकाश, लगने से यह बीमारी होती है ।

## १—नईं ब्रांख भात का दर्द

चिकित्सा एकोनाइट—हर किस्म की नईं ब्रांख भाते की और खासकर जिस धक्क ज्यादा दर्द हो रोशनी देखी न जावे तो इस दवा को देते हैं । नाडी जम्द, धदन का सूखापन, प्यास और ठंड लगकर बीमारी होने स ।

भारनिका—किसी प्रकार के चोट लगने के कारण से ब्रांख भावे तो यह दवाई देनी चाहिये ।

भारसिनिक—शर्दी लगकर कमजोर भावमी की ब्रांख भाते से ब्रांख में जलन दार कीचड मथवा मैल भाता भांखों में जलन और गरम माधूम होने से यह उपकारी है ।

विशौडोना—भांखों का छाछ रग ज्यादा तेज सहन न करना भांखों के चारों तरफ और भीतर काटन का सा दक्क मालुम वेचे तो देते हैं । यह दवाई कमी कभी एकोनाइट क साथ पारी से देते हैं ।

यूफ्रेसिया—ठंड लगकर ब्रांख भाता भांख से ज्यादा पानी गिरता हो भांख में रेत पडने कासा बढ़ा होता हो । माथे और नाक की अगह सरवी लगन कासा दर्द । ब्रांख से पानी गिरना खास खस्य है ।

मरक्यूरियस सौल—पहले पानी तिसके बाद कीचड और पीप गिरना भांखों के पखक बढ़ होजाते हैं । भांखों में पधुत दर्द और खुजली होना, यह मरकसर विशौडोना के बाद बीया जाता है ।

पखसटिल्खा—भांखों में सुइ खुमने कासा दर्द बाहर दवा में जाने से भांखों से बहुत पानी गिरना मथवा पखक फूट जाना—  
हृपिरसखफर—पीप के साथ भांखों में दक्क ।

## ५ - पैरफूलना ।

गर्भ की पुर्ण अवस्था में औरतों के पैर, और रात यहा तक कि खी जनने की इन्दी तक फूल जाती है ।

जरायू के भीतर बच्चे के द्वारा घोस पडने से शरीर के निचले हिस्से में दौरान खून में बाधा पड जाना ही इसका असल कारण है ।

**चिकित्सा**—मासिक पैर ठण्डे, सूजन का बढ़जाना और कमजोरी, नाडी दुर्बल

**एपिस**—अल्दी २ पैर फूलजाना और पेशाब करने में तकलीफ ।

**आयाग**—उदरामय, पेचिस आदि कारण से कम जोरी होने पर ।

**सखफर** - पहिले चर्मरोग की बीमारी हों और गर्भ होने से जाती रहे तो यह उपकारी है ।

**सहकारी उपाय** - बैठने के समय पैर ऊंचे रखने । खड़े रहने से चलना फिरना अच्छा है । रात में सोने से पैर की सूजन उतर जाती हो ।

२७।—**चक्षु, प्रदाह** ( अथवा आस, सूखना ) ।

**लक्षण** । -आस का सफेद हिस्सा खाल हो जाना आँसों में गर्मी और दृढ़ आस में रेत गिरने के सागन सूखना, प्रकाश असजय, आँस सूखी मालूम होना अथवा आँस से पानी गिरना । इसके साथ साथ कभी कभी सुझार भी रहता है । आँसों में गर्मी, घूसा, घूप, खराब ठंडी हवा तेज प्रकाश, लगने से यह बीमारी होता है ।

कीड़े रहते हैं ज़मी से यह बीमारी पैदा होती है। खुजली होना ही इसका आम लक्षण है। यह कीड़ा बकसूर पदम की मरम जगह में पैदा होता है छड़कों के खुर, और गान, पैर व हाथ, में बकसूर होता है छोटी छोटी फुगभी न सारे बदन में घाव दोगा-ते हैं। इसी का पका खाज कहते हैं।

**चिकित्सा—सलफर—**खुजली और पका खाज दोनों बीमारियों की अच्छी दवाई है दिन में दो तीन बफे दिया जाता है। वे शुमार खुजापट, जैसे चमटा फाड़ डालन की इच्छा हो रात के समय खुजली पटजावे। खुजापट के बाद जलन होना चाहिए सलफर के लक्षण हैं।

इसके सिवाय बगैर पीप, अथवा खून की सूखी खुजली में जब तक कि भाराम के लक्षण दिखाए न दें तब तक मरक्यूरियम, और सलफर तीन बार दिन बाद चारी चारी से देना चाहिये अगर इससे फायदा न हो तो भारमिनिफ कारथो वैजीटोविलिस हीपरसल देना चाहिये। पकाखाज में सलफर, और साइफोपोडियम, चारी से तीन बार दिन बाद देना चाहिये। खाज सूजने की हालत पर आने से कारथोवेजि टाबिलिन, और मरक्यूरियस देना चाहिये। सलफर और, और साइकोपोडियम से कोई फायदा न होवे तो रोज एक खुराक कौस-टिकम देना चाहिये। अगर इस से भी फायदा न होवे तो एक दिन बाद एक दिन एक खुराक मरक्यूरियस देना चाहिये।

**सहकारी उपाय—**गंधक की मरहम लगान से उपादा फायदा होता है। गर्म पानी और साबन से अच्छी तरह धोकर मरहम लगाना चाहिये जो खाज खाज की बीमारी



भारजन्तमनाइंटीकम—यद्यो का पीप के साथ भाखों में रई के सह उमदा बघाई है ।

**सहकारी उपाय**—भाख को तेज करने वाली चीजों से बचना चाहिये। और रोगी को पूरी या भाधी भयेरी कोठरी में बंद करके रखना चाहिये । घीब घीब में छोटे गर्म पानी में अथवा दूध में पानी मिखा कर भांख धोना अच्छा है । भांख आने के साथ अगर बुखार रहे तो खाने पीने का परहेज जरूरी है । जब तक भाख को पूरी तरह से आराम न होवे तब तक भूप, रोशनी, अथवा गरदा में बाहर निकलना नहीं चाहिये । भाखों को रोशनी और गरदा से बचाने के लिये नीले रंग अथवा हरे रंग का चस्मा लगाना चाहिये ।

## २--पुरातन चक्षू प्रदाह ।

**लक्षणा**—अक्सर नई भाख आने के समय ध्यान न देने अथवा इलाज न कराने से पुरानी हालत में होजाती है । तरण अवस्था में पूरी तरह आराम न होने पर काम के लिये बाहर आने से, यह बीमारी आराम न होकर पुरानी होजाती है ।

**चिकित्सा**—सबफर पदार्थ काम में लाया जाता है ।

**कैबकेरियाकर्व**—सबफर के बाइ दिया जाता है ।

**हीपर सबफर**—यदि पीछा के आराम होने में देर लगे तो यह दनी चाहिये थिळीडोना, और मरक्यूरिअस, के बाइ उमदा बघाई है ।

## २८--खुजली और पक्षाखान

यह एक तरह का छूत का रोग है । अमडे के नीचे छोटे छाने

कीड़े रहते हैं ज़मी से यह बीमारी पैदा होती है। खुजली होना ही इसका शान लक्षण है। यह कीड़ा अक्सर बदन की गरम जगहों में पैदा होता है बच्चों के खुर, और गं, पैर व हाथ, में अक्सर होता है छोटी छोटी फुनपी से सारे बदन में घाव होजाते हैं। इसी का पका खाज कहते हैं।

**चिकित्सा—सलफर—खुजली और पका खाज दोनों बीमारियों की अच्छी दवाई है दिन में दो तीन बफे दिया जाता है। वे शुमार खुजाबट, जैसे चमटा फाट डालन की रूखा हो रात के समय खुजली बढजावे। खुजाबट के बाद जलम होना भादि सलफर के लक्षण हैं।**

इसके सिवाय 'वगैर पीप, अथवा खून की सूखी खुजली में जब तक कि आराम के लक्षण दिखाई न दें तब तक मरक्यूरियस, और सलफर तीन चार दिन बाद चारी चारी से देना चाहिये अगर इससे फायदा न हो तो आरमिनिफ कारथो वैजीटेबिलिस हीपरसख देना चाहिये। पकाखाज में सलफर, और लाइकोपोडियम, चारी से तीन चार दिन बाद दया चाहिये। खाज सूजने की हालत पर आमे से कारथोवेजि टेबिलिस, और मरक्यूरियस देना चाहिये। सलफर और, और लाइकोपोडियम, से कोई फायदा न होवे तो रोज एक खुराक कौसटिकम देना चाहिये। अगर इस से भी फायदा न होवे तो एक दिन बाद एक दिन एक खुराक मरक्यूरियस देना चाहिये।

**सहकारी उपाय--** गंधक की मरहम लगान से उपादा फायदा होता है। गर्म पानी और साबन से अच्छी तरह धोकर मरहम लगाना चाहिये जो आग खाज की बीमारी

में मुषनिष्ठा है उन की धोती अथवा अगोष्ठा दूसरे को न इस्तेमाख करना चाहिये । धीमारी आराम हो जाने पर भी धोती धौर धोवी से बिना धुलाये काम में न लेना चाहिये । क्योंकि उन कपड़ों में इन धीमारी के कीड़े रह जाते हैं । और वह कीड़ा फिर शरीर में घुस कर धीमारी पैदा करते हैं ।

दवाई खगाने अथवा खाने से साफ सुथरा रहना अच्छी दवाई है । धीमारी की तकलीफ में हर एक मरहम खगाना उचित नहीं है ।

## २६।— ज्वर ( बुखार )

ज्वर अथवा बुखार की बहुत किस्में हैं । इस के भीतर धार्दी बुखार सामान्य बुखार, हर एक बना रहने वाला बुखार सयिराम और मेलेरिया ज्वर, सन्निपातिक ज्वर, अग्निमार बिकार ज्वर प्रधान हैं ॥ अक्षीर खिसे हुए दोनों किस्म के बुखार सयत और मार डालने वाले हैं । अक्सर हर एक धीमारी के साथ बुखार रहता है । अथवा अक्षीर हालत में बुखार आ जाता है उस समय केवल बुखार का इलाज न करके उस धीमारी का इलाज करना खाजिम है । ज्वर किस को कहते हैं इसे हरएक आदमी जानता है । बुखार के समय शरीर के हर एक हिस्से में अक्सर गलत गलत लक्षण दिखाई देते हैं । परन्तु बुखार के जो खास थोड़े लक्षण हैं उनमें से थोड़े नीचे लिखे जाते हैं ।

१।— शरीर का गर्म रहना बुखार का एक खास लक्षण है । गरमी ताप देखने के लिये तापमान ( थर्मामीटर ) यंत्र

इस्तेमाख करते हैं। तापमान यत्र की ६८ डैसीमल ४ ( करीब साढ़े अष्टमघे ) डिग्री स्वाभाविक उत्ताप होता है। १०१ हो जाने से सामान्य बुखार १०३ होने से मध्यम १०५ अथवा १०६ होने से बहुत तेज बुखार कहलाया जाता है इस यन्त्र द्वारा बुखार की परीक्षा करना बहुत सहज है। जो शकश मग्ज देखना नहीं जानते उन को यह यन्त्र रखना जरूरी है। तापमान यत्र फांच या घनता है इसे दृष्टिगोचरी से इस्तेमाख न करने से बहुत जल्दी टूट जाता है।

२।—दोयम खून के ठीक न चखने से मग्ज जल्दी २ चखती है। मग्ज का जोर से चखना बुखार फा, सब से बढके एक खास लक्षण है पेसा कमी हो नहीं सका कि नाडी जोर से चखती हो और और बुखार न हो नाडी बुखार होने से ही तेज चखती है। बहुत थोडा बुखार भी मग्ज द्वारा मालूम हो सका है। मग्ज देखना भादत और अभिज्ञता का काम है।

३।—पसीना निकलना बंद-बदन का सुखना, पसीना नभाना फवजियत, मुह का सूख जाना, पेशाब का लाख रंग और थोडा होना।

४।—खास क्रिया का ये ठीक होना—मग्जुस्त हाखतसे ज्यादा खांस चखती है।

५।—स्नायु यन्त्र का ये ठीक होना। कपना, यकापट, सिर में बंद, शरीर में बंद घेखनी, चफना, भाबि स्नायु विकार के लक्षण हैं।

६।—साधारण लक्षण—खाई हुई चीज का ठीक तौर पर शोष न होने से शरीर दुखना, कमजोर, मांसपेशी, मेवा, खून भादि सूख जाते हैं बुखार बहुत दिन का हो जाने से श-

## २—सामान्य ज्वर ।

ठंड लगकर अथवा मींगी धोती रहने से, पानी में मींगले से, बहुत शारीरिक और मानसिक श्रम खाने के अनियम आदि कारणों से यह बुखार होजाता है । पहले जाड़ा अथवा कप बेकर बुखार आता है । धदन सूखा और गरम, शरीर में दर्द, प्यास, माघे में दर्द, नाड़ी तेज, और अल्प अल्प श्वास, भूक कम, थोड़ा पेटसाव आदि लक्षण मौजूद होते हैं इस बुखार के साथ अंगर भीतर के कोई बंत्र का प्रवाह न रह तो जल्दी आराम होजाता है ।

**चिकित्सा**—पेकोनाइट बहुत बमदा दवाई है । इसका इकम एक एक बूद दो तीन घंटा बाद देने से पसीना निकलकर शरीर की गरमी कम होजाती है और बुखार जाता रहता है ।

**घिखोड़ीना**—घकना बेहोशी आंख की पुतली का घट जाना सिर में दर्द रहना यह पेकोनाइट, के साथ धारीसे दियाजाता है ।

**घ्राइयोनिया**—माघे में दर्द खासी श्वास लेने और निक्काखने में तकलीफ, जीव के ऊपर पीछापन मैला, कब्ज, शरीर में दर्द, पानी पीने के बाद पित्त और कै होना बहुत प्यास, मुह काक रंग का होना ।

**अहसमीनम**—बुखार का हर वक्त घना रहना, प्यास न खगना छोटी नसों की कमजोरी, नाडी मुखायम, आदि लक्षण में यह दिया जाता है ।

पेट की शिकायत रहने से मक्सधोमिका, इपीकाफ, पखस-दिला, देना चाहिये ।

पित्त का लक्षण ज्यादा रहने से—पेकोनाइट घ्राइयोनिया मक्सधोमिका देना चाहिये ।

कीड़ाका जोर रहने से सिफ्यूटा सीगा, मरफ्यूरियस, स्फार्-  
जिखिया देना चाहिये ।

बदहजमी से बुखार आवे तो - इपिकाक, पदसटिल्ला, पेन्टी-  
भोनिपम, नक्सघोमीका, सखफर देना चाहिये ।

**सहकारी उपाय** - धामार का मकान बिना बादमी, ठंडा,  
धुंधादार, बिसतर साफ, रोगी की इच्छा के माफिक, बिलौना  
की चादर हमेशा बदलकर पानी में धो डालनी चाहिये प्यास  
मिटाने के लिये बार बार ठंडा पानी अथवा घरफ मिला हुआ पानी  
थोड़ा थोड़ा करके देना चाहिये । पच्य, साधूवाना धारखी, अरा-  
रोट, बुखार आराम होने के साथ दूसरा पच्य तजवीज करना  
चाहिये ।

### ३ - अविराम ज्वर ।

बुखार हर एक बगैर रह अथवा सुबह को घबन को ताप कुछ  
कम हो फिर शाम को बुखार बढ आवे ता उसको अविराम  
ज्वर बाधवा खरपविराम ज्वर ( Remittent Fever ) कहते हैं ।  
यहले जाडा देकर फिर शरीर की गरमी बढजाना - शरीर में  
अलन, प्यास, घबन सूजा, फज्ज, कै, पेट में दब, सिर में दर्द  
आदि लक्षण हाते हैं धामारी मरुत नहो ता वो ऐक हफ्ते  
के अन्दर आराम हाजाता है । कभी २ यह बुखार मारने  
धाखी हाजत पर पदुब जाता है । सहज में आराम न हा  
कर अगर पीडा बहुत बढजावे तो शरीर में गरमाइ बढ  
जाती है और ज्वर धीरे धीरे बढ कर १०५ अथवा १०६ तक हो  
जाता है । रोगी कमजोर होजाता है और नाडी धीगा और जन् २  
बघती है और बकना आदि लक्षण दिगाई देन हैं बालकों की

अविराम ज्वर में अक्सर यह हाथत देखने में आती है।

**चिकित्सा**—मैफोनाइट उमदा दवाई है सरदी के सबब से  
बुखार शरीर में दर्द आदि लक्षण में यह उपकारी है।

**घिब्रोडोना**—[ माथे का लक्षण ] जैसे सिर में दर्द बकना  
मुह, का छाजरण, नींद न आना, व्यास घेंघनी, आदि रहने से  
यह दवाई देनी चाहिये।

**घेरेट्रम घिरिट्टि**—कपाल में बहुत दर्द और कै, करने के  
इच्छा, और कमजोरी, ।

**जखसीमीतम**—अविराम ज्वर की एक उमदा दवाई है विशेष  
कर जहा स्नायु विकार के लक्षण रहें।

**सहकारी उपाय**—अविराम ज्वर में देखो

४—सन्निपात और अतिसार विकृत ज्वर ॥

डॉक्टरों मत के अनुसार सन्निपात विकार अथवा  
मस्तिष्क विकार ज्वर को टाईफाइड फीवर कहते हैं। और  
अतिसारविकृत अथवा आंत्रिक विकार ज्वर को टाईफोइड फी-  
वर कहते हैं।

अविराम ज्वर धीरे धीरे आराम न होकर, पाच, छै,  
सात, अथवा नवें दिन के भीतर बीमार के शरीर में एक प्र-  
कारकी फुन्सी निकलने से अथवा धीरे धीरे बकना आदि मस्तिष्क  
लक्षण होने से ऊपर लिखे बुखार का सन्देह होता है। मस्तिष्क  
के बुखार में अक्सर अतिसार नहीं रहता। आंत्रिक बुखार में  
अतिसार रहता है। इस लिये इन दोनों बुखारों का फरक  
निश्चय करना बहुत मुशकिल है। यह दोनों बीमारी बहुत सां-  
घानिक हैं, इस लिये इन-के इलाज का योफ़ अच्छे डाक्टर  
को देना चाहिये।

## १। — साविराम ज्वर— (बुखार का छोटा २ करमाना।)

यह बुखार दूग खोंगों के देश में ज्यादातर देखा जाता है। मैखेरिया जहर के साथ मिल कर और भी भयावह होजाता है। आज कल मैखेरिया का हरजगह में प्रभाव देखा जाता है। इनके ऊपर फुईनेन, का वेमुनासिब व्यवहार से और भी दुना नुकसान दीयता है ॥ यह बुखार छोटा २ कर होता है। इनमें तीन भयस्या भलग २ देखी जाती है। प्रथम— ठंड भयया जाड़े की भयस्या —दूसरे गर्मी की भयस्या तीसरे पसीना की भयस्या पहिले कपकपी भयवा आटा देकर बुखार आता है इसके साथ साथ माये में वर्द, प्यास, यदग में वर्द आदि रहना है। साथ घटा से लेकर तीन बार घंटा घाट गरमी की भयस्या शुरू होती है इस भयस्या में श्वस का चमडा सूश्क पडत गरमी प्यास, नाडी पूरग और जल्द, बेचैनी आदि रहती है। इस के कई घट के बाद पसीना की भयस्या आजाती है पसीना आने स धीमार को आराम माजूम देता है। और और फट वूर हो जाते हैं। बुखार बुखार आने के समय तक रोगी आराम में रहता है, इसको विराम समय कहते हैं

यह बुखार तीन तरह का होता है—(१) रोज बुखार यामी २४ घंटे के बाद बुखारका आना (२) एक दिन बाद बुखार भयवा ४८ घंटा के बाद बुखार आना ॥ (३) दो दिन मार्ग देकर यामी ७२ घंटा के बाद बुखार आना, इस बुखार के साथ यह लक्षण रहते हैं—भूक कम होना, खून का कम हा जाना, तिल्ली और जिगर का बढ जाना, अखीर में शोथ ( सूजन ) करण, उदरामय तथा मुंह में श्वाह होजाते हैं।



चिचित्सा—चायना—बुखार आने-के पहले जी मिचबान  
 सिर में दर्द, भूक न लगना,—जाड़े के पहिले और गर्म  
 अवस्था में प्यास, हर दफे पानी पीने के बाद जाड़ा मारूम  
 देना तब के समय अथवा कपडा से घदन टांफने पर  
 चतुरा पसीना आजाना बुखार उतरने के वक्त बहुत कम-  
 जोरी फांग में भी, भी, की भाषाज होना सिर घूमना, खासने  
 में अथवा अगाड़ी झुकने से तिछी और जिगर में दर्द मा-  
 जुम होना । जाड़ा ज्यादा देर तक रहना पसीना ज्यादा आना  
 भूक न लगना, और पानी अच्छा न लगना, । मैकेरिया फैली  
 हुई जगह में यह दवाई ज्यादा फायदे मंद है । कुनैन इस  
 बीमारी की उमदा दवा है परन्तु य मुनासिब इस्तेमाल से  
 बचाव नतीजा पैदा करती है ।

५-आरसिनिक -पुराना जाड़े का बुखार जिस वक्त तीनों  
 हासत साफ साफ जाहर न देती हों, अलग के साथ गरमी,  
 तथियत न, भरने वाली प्यास, धार धार थोड़ा थोड़ा पानी  
 पीना, पानी पीने के बाद कै,होना ज्यादा कमजोरी, पसीना  
 गकसर न रहना तिच्छी और जिगर में दर्द, पाकजंत्र में दर्द,  
 मुह का रंग पीला, और सूजन, दिन में १ घंटे से दो घंटे  
 के भीतर अथवा रात में बारह घंटे से, दो घंटे के भीतर  
 बुखार, आता है, । कुनैन के मुनासिब के इस्तेमाल से  
 बुखार, पारी बुखार, दो दिन तागा से बुखार, तीग दिन तागा से  
 बुखार अथवा दो तीग दफे बिन रात में बुखार आने से यह दवा  
 फायदा करती है ।

नकसधोमीका - अकसर रात में अथवा सुबह के वक्त  
 बुखार आना, पेटकी दासत बराब होजाना, कब्ज, जीम सफेद

अथवा पीछापन, जाड़ा बहुत तेज और देर तक रहने वाळा, यदन में गरमी ज्यादा और गरमी रहने पर भी धीमार की तथि-  
यत भौढने को चाहती हो जाड़े के वक्त सिर में दर्द, बुखार के  
समय सिरमें दर्द, सिर घूमना, मुंह खाल रंग, छाती में दर्द,  
और कै होना ।

इपीकाक - जाड़ा कम, परन्तु गरमी ज्यादा, जसाईं अथवा  
घट्टन दूटकर और मुंह में पानी आकर बुखार का भागा, बाहर से  
गरमी पहुंचाने से जाड़े का घटजाना, जाड़े के वक्त प्यास न  
रहना अथवा गरमी के वक्त में प्यास रहना । ज्यादा कै की  
इच्छा अथवा कै, होना, विराम अवस्था में पेट में गडबड  
रहना, कुइनेन के वेमुतासिध इस्तेमाळ से पैदा हुए ज्वर में  
यह दवा बहुत फायदेमद है ।

पबसटिळा - ३ यजे शाम से ५ यजे तक बुखार आना, एक  
ही वक्त में जाड़ा और गरमी, वगैर प्यास शून्य बुखार, अथवा  
गरमी की अवस्था में सामान्य प्यास, मुंह का स्वाद सिगड  
जाना, जीम का रंग मैला, उदरामय, बुखार के लक्षण हर वक्त  
घटखना, दो दिन का बुखार कमी ठीक नहीं होता ।

विरेट्टम - बुखार के समय ज्यादा दस्त, धीमार को कमजोरी  
जाड़ा ज्यादा देर तक ठहरता हो ज्यादा और देर तक ठहग्ने  
वाळा पस्तीना, जाड़ा अथवा गरमी की अवस्था में प्यास, एक  
दफे में ज्यादा पानी पीना ।

माइयोमिया - जाड़े का ज्यादा देर तक ठहरना, हर एक  
अवस्था में प्यास सूखी खासी, और छाती में सुई चुभने कासा दर्द  
वैसा ही दर्द जिगर और तिल्ली में, पाखाना सख्त, और पक्क ।

सहकारी उपमय - अच्छी भाव हवा की जगह जाकर

रहना चाहिये इससे बहुत जल्द फायदा होता है। मैकेरिया फैले हुए स्थान में बहुत सुबह और शाम को ज्यादा दूध में ठहराना ठीक नहीं है। यनिसवत गीचे के घर से दूसरी मनाजिख के मकान में सोना अच्छा है। ज्यादा महनत, यिन्न नियम भोजन, रात्री का जागना आदि त्याग करना उचित है।

पथ्य - नई हालत में साधू दाना पानी में बना कर और ऐसे ही धारखी आदि हलका पथ्य बुझार न रहने के वक्त देना चाहिये। बुझार के समय कुछ खाने को नहीं देना चाहिये। पुरानी अवस्था में पेट की कोई शिकायत न रहने पर सुबह के वक्त में पुराने गेहूँ की हलकी पतली रोटी, दूध, आछू के साग का रसा, और शाम के वक्त दूध साबूदाना दिया जासका है। रात्री के समय भोजन निषेध है यानी ओ कुछ खाना हो इयाम से पहले खालेना चाहिये। माघस और पूनो में होइयारी से रहना चाहिये। दूध पानी अथवा माघस पूनो में एक वक्त खाकर रहना चाहिये।

मुँहमें भाव, अिल्व का पीछारग, तापतिछी में ज्यादा दर्द, उदरामय, पेबिस, आदि लक्षण जाहिर होने पर धीमारी सख्त जानना चाहिये, पेटकी गड्ड बड रहने से पथ्य की वाधत विशेष साधधानता का रखना उचित है। इगान भोजन के वाधत ज्यादा ब्याख न रखने से बुझार धार धार छोट कर जाता है।

### ३०।—दहू ( दाद )

यह धीमारी छूत की है। रोग की जगह के हर एक कर्मा के छेद के नीचे एक तरह का कौन्दा पैदा होता है और यह जगह खुजलाती है और जखन थ रस टपकता है। अक्सर असाध्य हो जाता है परन्तु पहली अवस्था में दवाई देना चा-

हिये जिस से खून का विगड़ना सुधर कर कीड़ा पैदा न होने पाये इसी कारण दवाई दी जाती है।

**चिकित्सा**—कैल्केरिया फावें उमड़ा दवाई है।

**सीपिया**—पहले इस्तेमाल करने से बीमारी नहीं बढ़ती औरतों को ज्यादा तर फायदा करती है।

**कैल्कम**—गर्दन की तरफ का दाद, बहुत खुजावट, विशेष कर शाम के बक, पुरानी बीमारी में देते हैं।

**मरक्यूरियस**—बांह में दाद होने से विशेष उपकारी है। दाद पकजाता है और भास पाल की जगह में सपक होती है।

**सखफर**—बीमारी असाध्य होने से और वे घरदास्त खुशली व अखन रहने से दिया जाता है।

**सहकारी उपाय**—हमेशा साफ रहना चाहिये।

**कारबोविक**—सायन व्यवहार करना चाहिये। ऐसे बीमार का धोती अंगोछा आदि दूसरे का काम में न खाना चाहिये। गोआपाउडर, पैसेटिक पेमिड, टिअर आयोडीन, आदि दवाई बाहर लगाने से अकसर फायदा होता देखा गया है परन्तु अड़ से आराम नहीं होता इधर उधर की दवाई बाहर नहीं लगानी चाहिये।

### ३१।—दांतों में दर्द

यह बीमारी बहुत आम और तकलीफ देने वाली है दांत का दर्द कभी कभी एक दांत में और कभी कभी कई दांतों में होता है और इस के सबब से मुँह, कान, गला, और सिर तक में दर्द होता है। दांत दिखने से, सर्द लगने से काँटा

रहना चाहिये इससे बहुत जल्द फायदा होता है। मैलेरिया फेले हुए स्थान में बहुत सुबह और शाम को ज्यादा हवा में ठहरना ठीक नहीं है। बतिसबत नीचे के घर से दूसरी मनाजिल के मकान में सोना अच्छा है। ज्यादा महनत, बिन्दु नियम भोजन, रात्री का जागना आदि त्याग करना उचित है।

पथ्य - नई हालत में साबू दाना पानी में बना कर और ऐसे ही धारखी आदि हलका पथ्य बुखार न रहने के तक देना चाहिये। बुखार के समय कुछ खाने को नहीं देना चाहिये। पुरानी अवस्था में पेट की कोई शिकायत न रहने पर सुबह के तक में पुराने गेहूँ की हलकी पतली रोटी, दूध, आरू के साम का रसा, और शाम के तक दूध साबूदाना दिया जासका है। रात्री के समय भोजन निषेध है यानी जो कुछ खाना हो श्याम से पहले खाकेना चाहिये। माघस और पूनो में होश्यारी से रहना चाहिये। दूध पानी अथवा माघस पूनो में एक घण्टा खाकर रहना चाहिये।

मुँहमें घाव, जिल्द का पीखारग, तापतिछी में ज्यादा दर्द, उदरामय, पेचिस, आदि लक्षण आहिर होने पर घीमारी सप्त आमना चाहिये, पेटकी गड बढ रहने से पथ्य की घाघत विशेष साधभागता का रखना उचित है। स्नान भोजन के घाघत ज्यादा ब्याख न रहने से बुखार धार धार छोट कर जाता है।

### ३०।—दद्रू ( दाद )

यह घीमारी छूत की है। रोग की जगह के हर एक कर्मा के छेद के नीचे एक तरह का कीड़ा पैदा होता है और यह जगह खुजलाती है और जलन य रस टपकता है। बक्सर असाध्य हो जाता है परन्तु पहली अवस्था में दवाई देना चा-

दर्द सोने से अथवा ठंड खगने से घट जावे। सदराने से गरमी पहुँचने से आराम मालूम देता हो। दाँत हिचका हो और खम्बा मालूम देता हो दर्द कान तक पहुँचता हो, येबैनी रहनी हो, बीमारी आराम होकर फिर छोट कर न आये इस से थोड़े दिन दवा का इस्तेमाल रखना जरूरी है।

स्टाफीसैप्रिया-दन्तद्वय दाँतकाष्ठा होजाना भोजन अथवा ठंडा पानी पीने से, मसूँडे में दर्द कीड़े से खाये हुए गंदे दाँत में दर्द, ।

विब्रोडोला-दाँत में डंक मारने का अथवा खपक से दर्द होना बहुत से दाँतों में एक दम दर्द होना, इसलिये कौन से दाँतों में दर्द है ठीक मालूम न होना, दर्द डोलता फिरता हो। ठंड और गरमी दोनों से बढ़जाँता हो, माथे में खून का अधिक होना सिर में दर्द।

प्राइयोनिया-गरमी से दर्द का घटना और ठंडे पानी से थोड़ी देर को आराम मालूम देता हो। बाहर दवा में घूमने से दर्द में कुछ कमी मालूम हो। जिस तरफ दर्द हो उस तरफ छेदने से दर्द कम मालूम हो।

गफसथोमिका-चपका मारने का सा दर्द खाँके बाद हाट में दर्द, साँस छैने से और गरमी पहुँचाने से आराम मालूम देता हो, परन्तु मनकी चिन्ता करने से बढ़ जाता हो।

टंड खगकर दाँत में दर्द होने से पकोनाइट विलाडोला, कैमो-मिखा, मरफ्यूरियस देना चाहिये।

हाट में कीडा खगने से दर्द-क्रियोजोट, स्टैफीसप्रिया, मरफ्यूरियस, ।

घदहजमी से दर्द-प्राइयोनिया, गफसथोमिका, पलसटिखा ।

लगने से कभी कभी पचने की ताकत में धराधी आने से दात में दर्द हो जाता है।

**चिकित्सा**—एकोनाइट—सर्दी लगने से दात में दर्द दात में अथवा, बुखार मालूम देना ठंडे पानी से थोड़ी देर को आराम मालूम देना ज्यादा घेचैनी,

**कृथोजोट**—कीड़े लगने के समय से दात में दर्द हो तो यह अच्छी दवाई है इसी हालत में मरक्यूरियस, फायदे मन्द है यह कीड़ा लगने के दर्द को ही फायदा नहीं करती बल्कि कीड़ा लगना रोक देता है।

**केमोमिला**—ठंडी हवा लगकर अथवा पसीना बंद होकर दर्द होने से फायदा करती है। बहुत बंद रात में बिछोना पर खेटने से बढ़ता हो गरम खाना खाने से तकलीफ, मसूड़े और गाल फूले, कभी कभी सिर के एक तरफ दर्द, घब्रों के दात निकलने के एक विशेष कर उस के साथ उदरामय रहने से बहुत उपकारी है।

**मरक्यूरियस** सख-दात में कीड़ा लगने से मुँह के एक तरफ फान, घ गांठ, और फगपटी तक इफर्षारगी दर्द होता हो अथवा दर्द के साथ बार टपकती हो ठंडे पानी से थोड़ी देर को आराम मालूम देना खाने से तथा रात के एक घण्टा खाना गर्म की अथवा में दात में बड़े हो तो फायदा करता है।

**पलसटिना**—मुँह में कोई चीज देने से दर्द और शाम के एक और रात में गरमी से बढ जाये दात के दर्द के साथ फान में दर्द, और माथे में दर्द, खुली अगह पर आने से दर्द कम हो जाये, और गरम फोडली में बढ जाये

**भारसिनिफा**—दर्द की जगह में हाथ रखने से दर्द की त-

रफ़ी सोने से अथवा ठंड खगने से बढ जाये । सहराने से गरमी पहुँचने से आराम मालूम देता हो । दात हिलता हो और खम्बा मालूम देता हो एवं कान तक पहुँचता हो, घेंबैली रहती हो, घीमारी आराम होकर फिर छोट कर न आवे इस से थोड़े दिन दया का इस्तेमाख रखना जरूरी है ।

स्टाफीसैप्रिया-इतजय दातकाष्ठा होजाना भोजन अथवा ठंडा पानी पीने से, मसूखे में दर्द कीडे से खाये हुये गठु के दांत में दर्द, ।

बिलोडौना-दांत में डक मारने का अथवा खपफ से दर्द होगा बहुत से दातो में ऐक दम दर्द होना, इसलिये कौन से दांतों में दर्द है ठीक मालूम न होना, दर्द डोलता फिरता हो । ठंड और गरमी दोनों से बढजांता हो, माघे में खून का अधिक होना सिर में दर्द ।

ब्राइयोनिया-गरमी से दर्द का बढना और ठंडे पानी से थोड़ी देर को आराम मालूम देता हो । बाहर दया में घूमने से दर्द म कुछ कमी मालूम हो । जिस तरफ दर्द हो उस तरफ छेदने से दर्द कम मालूम हो ।

गफ्सघोमिका-खपका मारने का सा दर्द खान के पाए ढाढ में दर्द, सांस खेने से और गरमी पहुँचाने से आराम मालूम देता हो, परन्तु मनकी चिन्ता करने से बढ जाता हो ।

ठंड खगकर दात में दर्द होने से एकोनाइट बिलोडौना, कैमो-मिखा, मरफ्युरियस देना चाहिये ।

ढाढ में कीडा खगने से दर्द-क्रियोजोट, स्टेफीसप्रिया, मारफ्युरियस, ।

बढजमी से दर्द-ब्राइयोनिया, गफ्सघोमिका, गछसटिखा ।



स्नायविक दूद में-घिलौडोना, कैमोगिन्ना, मक्सधोमीका  
प्रारसिनिक, ।

गर्भ अवस्था म-सीपीया मरफ्यूरियस, ।

**सहकारी उपाय**—प्रात दिन सुयह को और खाने पीने के  
बाद दात अच्छी तरह से ठंडे पानी से धोने चाहिये । जिन लोगों  
के दात से खून गिरता हो उन को दातून करना उपकारी है ।  
बहुत गरम या बर्फ के समान ठंडी चीज दांतों से खगलने  
कराय है धनुनेरे भावमियों का यह ब्याख है कि तमाखू या चुरट  
के इस्तेमाख से मसूडा फडा होता है परंतु यह ब्याख गलत है ।  
तमाखू पीने या चुरट से उखटा नुकसान होता है । प्रतिदिन रात्रि  
के सोने के एक से पहले मुह अच्छी तरह से धोकर सोना चाहिये  
अगर दांत की जह जखमी होजावे तो निकाख डालना चाहिये ।  
निकालने के पहले दवाई से रखाज कर उस को घसाने की  
कोशिस करना चाहिये ।

### ३२।—दन्तो उद्गम दात निकलना ।

**लक्षण**—दात निकलना यद्यपि स्वाभाविक क्रिया है । तथापि  
समय २ पर बहुत तकलीफ होती है । यहां तक कि कमजोरी,  
और बुखले बच्चों के लिये वाज बक्त सामातिक होजाती है और  
इस के साथ खासी, उदरामय, घेशेगी, अगिन्ना, भाक्षेप, मुह से  
खार गिरना, आदि हर एक प्रकार की शिकायत होती है ।

पाक अन्न अकसर बिगड जाता है । इस लिये कै, मूख  
का कम होना, उदरागय, अथवा कबजियत और इस से सूखं  
चायटा आदि लक्षण कभी कभी देखे जाते हैं इस बिमारी  
की मामूली दवाई कैमामिन्ना है, युखार ४ एहसे से यह दिन  
में तीन बार बके दिया जाता है ।

## कवजीयत ।

**इत्ताजि—**ब्राह्मयोनिया । दम्न सूम्ना मयत और पाशानि जाने में तकलीफ । गोजन करणे के बाद कै, का हौना ।

**मक्षधोमीका -** यार धार, पाशाने की हाजत होनी हो परंतु दस्त न होता हो । मान की क्रिया कम होजाना, पाशाने के घक हाजत न हो भूक का ग लगना, और यक्षा हरषक रोता रहता हो ।

**ओपियम -** इकाइक बहुत कष्ट का होजागा - श्वासकी क्रिया धंद वेग शून्य ।

### २।—वायटा और मूर्च्छा

[ घबों का घायटा और मुञ्जा का घया देखो ]

### ३।—उदरामय, यानी पेट चलना ।

**चिकित्सा -** कैमोमिखा उगदा दवाई है । पतखा हरेपायदष्ट-जिये हुये दस्त, यक्षा हर घक रोता हो मक्षी खानी, सोते सोत चमक उठना, जागने से उसको हरषक गोर्दी में लेकर घमा पडता हो । कै, में खटा दूध माठा हो, अनिद्रा,

**इपीकाक -** बहुत ज्यादा खाकर उदरामय और उसके साथ कै, दस्त भाग के समतुल्य । हर तरह के रग भयवा घास के स रंग का दस्त होमा ।

**मरफ्यूरियस—**सख मुंह से बहुत नार गिरना, दस्त के वण बहुत जोर देना पेथिस जीब, गळा, य मसूडे में घाय, पट में कडाप ग और फूल आवा प्रादि मरफ्यूरियस का लक्षण है ।

पक्षसटिजा - यह हजमी के सवध से उदरामय, भूक  
खगना, रात्री में दस्त ज्यादा होना ।

पोडोफार्ईखम - जो दात निकल चुका है वह किंड किं  
कगता हो । उदरामय हरे मधवा सादा रग का पाखाना अजीर्ण  
मल, बहुत भूख परन्तु खाने के साथ दस्त होजाता हो ।

## ४ - ज्वर

चिकित्सा - ऐकोनाइट - सब से पहले यह देना चाहिये  
विशेष कर वे चैनी, प्यास, मसूडा फूलना और उसमें दर्द - और  
प्रदाह, सिर गरम आवि जलना रहने से ।

कैमोमिखा - ऐकोनाइट के बाद जिस समय घषा हमेशा  
दिख रहता हो और गोदी में लेकर टहलना पडता हो ।

जैखसीमिनम - अनिद्रा, थिल्लाकर रोना करघट खेना ।

ग्राहपौनिया - यदन में दर्द - खांसी खास खेने में । तकलीफ  
कयजीयत, जो चीज खाता हो उसी को कै कर देता हो ।

बेलेडोना - माथे से ज्यादा खून आजागा उसके साथ मुह  
और भाख का जाल रग, हाथ पैर में घायटा और मधखुली आंखों  
से सोंगा, ऊधमी घषा ।

बुखार की हालत में बहुत कम मिक्दार में खाना  
चाहिये दूध यह करके थोडा थोडा पारली का पानी देना  
चाहिये ।

## अनिद्रा और वेचैनी

चिकित्सा - बिखोडोना - सोने को तयियत चाहती हो, परंतु  
भीष्ट न माली हो । घमककर और रोकर जग उठता हो ।

वैकोनाइट खुलार रहने से ।

कैमोमिडा - पेट की शिकायत—पेट फूलना अथवा खाने का नियम ठीक न रहने से । कभी कभी कौफिया, व प्रोपियम से, फायदा होता है । और कोई शिकायत न रहने से कौफिया अर्निद्रा की उमदा इवाई है ।

सहकारी उपाय - बच्चों का मित्रा भ्राने के समय अंधेरे घर में घुप चाप सुझाकर माथे पर हाथ हौखे हौखे ठोकना अथवा कहांगी या धारता करना इन सब बातों के करने से बच्चा जल्दी सोता है ।

## ६ - देरी से दांत निकलना

चिकित्सा- कैबकेरियाफर्न - देर से दांत निकलना, उदर-मय, और सफेद रंग का पाखाना, शरीर का सूख जाना, और बुबुखापन, सोने के बल शरीर की अपेक्षा स्तिर में विशेष पसीना होना, और पेट बड़ा होजाना, गरम की गाठ फूल जाना ।

साइलीशिया - कीड़ों की शिकायत रहनी, छारकाज्यावा गिरना, यथा मसूडे में हाथ देकर खींचता हो रात के समय थोडा थोडा घुलार मात्रा हो माथा गरम होता हो शाम के बल माथे से बहुत निकदार में खटा बधूदार पसीना निकलता हो ।

सहकारी उपाय - अफसर थोड़ी काररवाई में जैसे कि कही चीज खाने के खिये 'वेगे से उपकार मिलता है । दांत निकलने में बहुत तकलीफ हो तो चप्कू से थोडासा मसूडे में खीरा लगाने से बहुत जल्दी दांत निकलकर सब तकलीफ रफे होजती है ।

## ३३ - दूध उलट देना ।

बच्चों को यह बीमारी घटो तकलीफ देने वाली और कमजोर कर देने वाली है । खाई हुई चीज बच्चा उलट देता है फर्मी पित्त भी निकल आते हैं और साथ साथ पेट चलने लगता है ।

**चिकित्सा—पचसटिला—**पाफ यन्त्र की कमजोरी अथवा न पचने वाला खाना खाने से कै और पेट चलना बगैर

**इथूजा—**जमा हुआ दूध अथवा जैसे दूध पिया हो वैसे ही गिरा देना—दूध गेर कर सो जाना, जैसे जामे वैसे ही छाती दूध का पीना, दूध बिलकुल घरदास्त नहीं होता हो

**फेमोमिखा—**उमड़ा बवाइ है १ घूद दिन मर मे तीन चार दफे देना चाहिये ।

**इपीका—**खाने को तबियत न करना फफ के साथ कै, होना । छाती का दूध हजम न होना पीने के साथ गेर देना ।

**रयिम—**फेमोमिखा से फायदा न होने पर इसे बेंते हैं वस्त और कै, में खटाई की घास आगा इस का खास ख क्षण हैं ।

**मफसयोमिका—**खाना खाने को तबियत न करना हरे पित्त की कै, और फवजियत

**सहकारी उपाय—**खाने की चीज बख कर और मिफ-दार फम करके देना चाहिये । गाव का दूध घरदास्त न हो तो उस में पानी मिलाकर देना अथवा गधी का दूध देना चाहिये । कै के खाई १ घटा या दो घंटो तक कोई चीज खाने का न देना चाहिये बच्चे को

झाती से दूध बहुत नहीं पिलाना चाहिये । और दूध पीने के बाद उस को बहुत हिलाना झुलाना नहीं चाहिये । अगर परदाह्त होवे तो ठंडे पानी से रोज स्नान फय वैना चा-  
दिये ।

### ३४ ।- धनुष्टंकार

**लक्षण** —कभी खून पिगड़ जाने से अथवा स्नायविकों  
कारण से, कभी चोट लगने से, यह बीमारी हो जाती है ।  
पैर में फांटा लग जाने से कोंच से फट जाने से यहाँ तक कि  
लडकियों के फाग छेद होने से भी यह बीमारी देखी गई है ।  
मुँह के पट्टों का पड़ा हो जाना अथवा सुकड़ जाना, गरदन कभी  
हो जागा आयड़ा अटक जाना, कोई चीज खींच नहीं सकना  
मुँह देखने से मालूम हो कि घड़ी तकलीफ है इत्यादि इस  
क लक्षण हैं बीमारी घटनेके साथ सब शरीर के पट्टे सुकड़  
जाते हैं शरीर सामने अथवा पीछे की तरफ धनुष के माफिक  
टेढ़ा हो जाता है रोगी बेहोस नहीं होता है । परन्तु बाँधड़ा  
अथवा तकलीफ के समय से साँस बढ़ होकर सुरुय होती  
है । बाँधटे के वक्त में रोग का चहरा भयानक माछूम  
देता है ।

**चिकित्सा**—एकानाइट ठंड खगकर होने से, आसडे दोनों तरफ  
को पद होजाना, गरदन रुड़ा, शरीर पीछे की तरफ टेढ़ा होजाती  
है, गाड़ी कठिन, पूया, और जब्ब मुँह एक वक्के गुलाबी और  
एक दफे रक्त पूर्ण मालूम होता है ।

**कैमोमिखा**—अथवा सीमा—कीड़े की वजह से देते हैं ।

भारनिका—घोट लग कर होने से—बाहर भीतर दोनों तरह इस्तेमाल करना चाहिये

नक्सबेमिका—साँस से तकलीफ हाथ पैर छकड़ी के समान कड़े पाकाशय में घायटे के समतुल्य दर्द और कवजियत घायटे के बक्त पूरा होस रहने से यह दवा अच्छी है। जो लोग नियम के खिलाफ चलते हैं उनके बिये बहुत उपकारी है

चिलेडॉना—घहुत घबैनी सोते बक्त एकदम चिल्लागा अथवा हाथ पैर हिलाना जाबडे का बंद होना, और किसी तौर से कोई चीज भीतर को निगली न जाती हो वेहोसी के साथ दस्त और पेशाब होना, पानी पीने से घायटा हो जाता हो और पीठ कसी हो जाती हो।

धोपीयम—एक निगाह से देखना आस की पुतली चौड़ी हो गयी हो प्रकाश न माजूम देता हो पेशाब बंद और कवजियत घायटा

इगमेसिया—रोगी का मन दुखी रहता हो, हाथ से झूने से गधवा हिलने से रोग बढ़ता हो।

यह बीमारी बहुत सरत है इस बिये इसका इलाज कोई अच्छे ज्ञायक डाक्टर से कराना चाहिये।

सहकारी उपाय - क्याइ जल्दी जल्दी देना चाहिये। मेरू दंड ( गोख हड्डी जो गरदन से निराय तक ) उनके ऊपर बरफ लगाने से फायदा होता है। रोगी को इफेली कोठरी में जिस ओर आदमी न हो रखना चाहिये और घीमार को किसी तरह दिक् न करना चाहिये। आगम्य उच्छेजित दोनों से, घायटा माता है, रोगी का सुप चाप सोते रहना।

## ३५ - नाक से खून गिरना ।

अक्सर ये सामान्य बीमारी है । मामूली हालत में इलाज पढ़ाने की जरूरत नहीं है, बहुत गिराव में खून गिरना, अथवा बहुत देर ठहरने वाली अथवा धार धार खून गिरने से और इसके साथ शरीर की कमजोरी होने से इलाज करना चाहिये । यद्यपि ये बीमारी सामान्य है तथापि जिस वक्त खून गिरना बंद करना चाहिये और किस वक्त न चाहिये इसका निश्चय करना बहुत विचार और होशियारी का काम है ।

### १ - माथे में खून ज्यादा जमा होने से

चिकित्सा - बैकोनाइट—बहुत गरमी बढ़ने से, अधिक खून वाली धातु, बुखार, नाड़ी पूर्ण, और ज्वर । खून गिरने के वक्त पंद्रह बीस मिनट बाह बाह देनी चाहिये ।

बिखेडौना - मुह का जाल रंग, माथे में ज्यादा खून जमना, कमी कमी बैकोनाइट और बिखेडौना पारी से दिया जाता है ।

सहकारी उपाय - मुह को ठंडे पानी में डुबाये रखना नाक में ठंडे पानी की पिचकारी देना, माथा गूँदा और पीठ पर थपक खगाना, सिर ऊँचा रखना, राफपर खून गिरने से माथे में खून जमे हुए को आराम होता है । हुशियारी से इलाज करना चाहिये । ( सिर झूमना और सिर में ज्यादा खून आने का अर्थ देखो ) ।

### २ - चोट लगने से ।

चिकित्सा - मारतिका - ज्यादा शरीर की महत्त करने से अथवा चोट लगने से, देना चाहिये ।



रसटकस - शरीर की महजत से, भारनिकाके.. याद अथव कोई मारी चीज उठाने से होवें तो यह दिया जाता है। सि नीचा करने से और रात में बढजाना ।

सहकारी उपाय - माघे में खून जियादा आने पर खून क घ्यान देखो । इसके अलावा ३० या ४० धूँव् भारनिका पावम पानी म मिलाकर घह पानी नाक में देना चाहिये ।

### ३।—मासिक बढ होजाने से

मासिक बढ होजाने से औरतों की कमी कमी नाक से खू गिरन लगता है ।

चिकित्सा - इस बीमारी में पञ्चसटिका, सीपीवा माई योमिया उमदा दवाई हैं । मासिक बढ होजाना देखो ।

### ४ - कमजोरी से

खून कम होजाने पर कमी कमी नाक से खून गिरता है । इसी खिये पुरानी तिब्बती यावे रोगी का अखीर अवस्था में नाक से खून गिरने लगता है । खून की बढही अवस्था को सुधार बेना ही इलाज का मतलब है ।

चिकित्सा - चापना—इससे बहुत फायदा होता है । बार बार बहुत देर तकखून गिरना, काम के भीतर भौं भौं की आवाज सुनाई देना, मुँह की हाकत खून न रहने याखी बिसाई देना, " सीकेली " चापना से फायदा न होने के याद इसे देते हैं ।

कारबोवैजीडोविलिस - बार बार खून गिरना, हमेशा दो पहर के पढ़वे अथवा दस्त के खिये जोर दग पर खून गिरता हो ।

हमें नखिल - यथों के खून गिरना । आस का धूर धूर काधे रंग का ।

फेरम - धरन में खून कम होने पर नाक से खून गिरना ।

सहकारी उपाय - ताकत पैदा करने वाला खाना खाना चाहिये और तेज करने वाला खाना छोड़ देना चाहिये । मसखन [ धराब गरम मसखला खरस गादि ] हमेशां भाष दवा परखना अच्छा है ।

### ५ - कीड़े के सबब से खून गिरना ।

चिकित्सा - सीता गधवा मरफ्पूरियस सौख, देना चाहिये:

( कीड़े का वयान देखो )

६ - बार बार खून गिरना ।

चिकित्सा - फेखकेरियाकायं, और मखफर से फापदा पदु खता है सप्ताह में दो तीन बफे देना चाहिये ।

सहकारी उपाय—जिन की नाक से हमेशा खून गिरता हो उन को नियम से भोजन और निदमत करना चाहिये । और हर एक तरह की उत्तेजक चीज छोड़ देना और सोझ ठंडे पानी से नद्दाना आदिये गरम भाषि तेज करने वाली खाने पीने की चीज और नद्दाना निदमत करना छोड़ देना चाहिये ।

### ३६ ।—गच्छाघात ( लकवा )

खत्तण—मस्तिष्क गधवा नेरु दण्ड की शीमारी म-पवा ओट बगने में मामूम करने की ताकत और खदने

फिरने की ताकत जाने रहने को पचापान कहते हैं । इस बीमारी में कभी आधा शरीर रहना अथवा धाया, कभी शरीर के ऊपर का हिस्सा कभी नीचे का हिस्सा ( कमर से पैर तक ) कभी मुँह का एक हिस्सा रह जाना देखा जाता है इस बीमारी में जो स्थान रह जाता है उस स्थान को मांस पेशी, दीछा, सूखा, सुकड़ जाना अथवा कोई चीज के छुमने से या चुटके लेने से मालूम न देना और ताकत जानी रहती हो

**चिकित्सा** पेकोनाइट—ठंड खगकर अथवा खून ज्यादा होने पर हाथ पैर अथवा और कोई खास जगह सुन्न होजाने की उमदा है दवाई शरीर के एक तरफ के रह जाने से दिया जाता है ।

**फोसफरस** मेरु पद अथवा मस्तिष्क की कमजोरी से रह जाना बहुत खी से संग करणा अथवा छय करने वाली बीमारी से उत्पन्न बीमारी की यह अच्छी दवा है  
**नक्सबोमिका**—बहुत नसे की चीज इस्तेमाल करने से खी से सगत करने से अथवा बहुत मन की शिन्ता के कारण से बीमारी, उम के साथ भुल्ल का कम लगना के करने की इच्छा कथजियत रहने से यह उमदा दवाई है मुँह का और हाथ पैर का एक हिस्सा रहना ।

**रसटफस**—गर्दिया से भंग का रह जाना, दाहिने तरफ का रह जाना और मूत्र द्वार व मखद्वार का रह जाना,

**ओपीयम**—मांस के पलक जीव, हाथ पैर का रह जाना कथजियत, पेशाब बंद देहोसी, भिद्रा आखे भध खुली ।

**जदसमनियम**—घब्रों के शरीर रह जाना बधा थयल फिर सका हो, भाँसों के पशक रह जाना,

इगनेसिया—ज्यादा मन की चिन्ता बीमार के पास रात्री में अगने से घीमारी, घीमार का मग बहुत बुधी

मूह के रह जाने में वरेटाकार्थ, कौसटिकम, बिलेडोना, 1 सारे यदन के रह जाने में। रसटफस, फोसफरस, वरेटाकार्थ ( बुद्धे को ) कैकूखस, अलसिमीनियम ।

जीव का रह जाना—कौसटीकम, कौकूखस, बकेसिस, अलसिमीनियम

शरीर के ऊपर का हिस्सा रह जाने में—नक्सवोमिका मारनिका ( बांया भंग ) सखफर, कौसटीकम, रसटफस ।

गोचे के शरीर का रह जाना,—कौकूखस, नक्सवोमिका, कौसफरस, पुषम

मूत्राधार रह जाना—बिलेडोना, बकेसिस, लाइफोपोडि-पम, मोपियम अलसिमीनियम,

सहकारी उपाय—( १ ) चिजखी का तेज देगा इस बि-  
षय में अच्छे डाक्टर की मदद और सलाह लेना अच्छा है

( २ ) हर रोज ठंडे पानी से नाहना, पीठ, माथा, और नेक दह में ठंडे पानी की धार देने से बहुत फायदा होता है ।

( ३ ) नहाने के बाद सारा यदन विशेष कर जो हिस्सा रह गया हो वह जोर से रगड़ना चाहिये ।

( ४ ) रोज नियम से कसरत और हाथ पैर का बखाना बहुत ही जरूरी है ।

### ३७ । खसरा (Chicken pox)

लक्षण यह छूत की घीमारी है परन्तु मारने वाली

गर्ही है इस में भी माता के समान दागे निकलते हैं । परन्तु गिन्ती में उस से बहुत कम होते हैं । और थोड़े दिन में आराम हो जाता है पहले वस्त का छुत्कार होकर उस के २४ घंटे के बाद गोल दाना निकल आता है चार या पांच दिन में मिट जाता है घड़े माता के समान इस के दागे के भीतर गूहा अथवा बद्दू नहीं होती है जैसे घड़ी माता घनघोर से निकलती है वैसी ही छीकी होती है । परन्तु छोटी वैसी नहीं होती

छोटी माता का दाना मच्छट के फाटने के समान छाल रंग का होता है उस में धीरे धीरे पानी पड जाता है और आखिर को छाला सा होजाता है इस का दाना पहले पीठ पर निकलता है ।

**चिकित्सा** रस्टकस—उमदा द्वाइ है

एफोनाइट-सुत्कार तेज रहने से ।

विषोडै ना—गले में द्रव, चकना सिर में द्रव रहने पर इस द्रव का इस्तेमाल करना चाहिये ।

मरफ्यूरियस—बहुत खुजली और झुजली पकने से ।

पलसटिखा—अथवा रोनाटिमटाट अगर दानानिकलने में देरी हो अथवा पित की शिकायत पेट की बीमारी रहे तो देना चाहिये पेशाब में तफखीफ रहे तो कैथरिस-या मरफ्यूरिस देना चाहिये ।

**सहकारी उपाय**—जत तक सुत्कार है तब तक रोगी को जन शुन्ध और हवादार ठंडी फोठरी में रहना चाहिये थोड़े गरम पानी में कपडा भिगो कर बदन पोंछ दिया जा सका है । पच्य पहले हलका और पीछे ताकत खाने काही थीज देना

चाहिये। शरीर में तेज खगाम से थोड़ी बहुत खुजावट जाती रहती है। वरुणा व्यादा न खुजावे इस की हुदयारी रखनी चाहिये।

## ३८-शाहुरोग

( पीलिया का वयान देखो )

३६।-पेट का दर्द

( बच्चों का रोना देखो )

४०।-पेट फूलना ।

**लक्षणा**-बद्धजमी का यह एक विकार है पेट फूलना कहने से पेट में भारीपन, बद्धजमी की डकार और हवा निकलना, जी मिचलाना, और भूख का न खगना, पेट फूलना कहने से इतनी शिकायत समझी जाती है।

**चिकित्सा**-कारबोघैजोटेबिखिल बहुत कम मिफवार में खाने से भी पेट फूल जाता है। और पेट में भावाज होती है खड़ी और बद्धवार डकार आती है बद्धवार घायउसरता है। पेट फूलने के साथ उदरामय होने से यह दवार अच्छी है।

**घायना**-बहुत पेट फूलना, फूल भयवा न पखगे वादा गादा खाने से पेट फूलना, भोजन के बाद कडवी डकार, आने परभी भाराम न मालूम हो और पेट में दद।

**बाइकोपोटियम**-पेट फूलना परंतु उदरामय का न रटना,

पेट में हमेशा आवाज होगा वायु रुकजाने से पेट में हर प्रकार का दर्द होगा ।

**नकसवोमिका** - पेट में बहुत हवा, खाने के बाद बंद आना, कब्जियत, बारबार हाजत होती हो परन्तु दस्त न होता हो।

**पक्षसाटिल्ला** - उमदा दवाई है विशेष कर न पचने वाली चीज और घी अथवा तेल का पका हुआ सामान खाने से । पेट के फूलने से और रात्री के पक दर्द होना ।

**इग्नेसिया**—कब्जियत के साथ पेट फूलना ।

**सहकारी उपाय**—बहजमी के खान में देखो ।

## ४१ - प्रमेह ( सुजाक )

इस बीमारी का प्रधान लक्षण स्त्री अथवा पुरुष के इन्दी में प्रदाह और उससे पीप निकलना यह बीमारी जून की है और हमेशा अराय सगत से होती है । पहले मूत्र नखी में भीतर सुजा घट इसके बाद जखन और प्रदाह और इसके साथ सुखार भी रहता है । पहले जखन के समान पीछे सफेद अथवा पीछा पीप निकलता है ।

प्रमेह के होने के बाद जो जो शिकायत पैदा होती हैं वह बहुत तकलीफ देने वाली हैं और बहुत मुशकिल से आराम होता है अन्धानक बढ़ होजाने से दोनों अठकोप फूल जाते हैं उसमें प्रदाह और कडे होजाने हैं । पुराने प्रमेह में कमी कमी मूत्र नखी बंद होजाती है इससे रोगी पेशाब नहीं करसका है प्रमेह के बाद अस्थि में प्रदाह, गठिया, गाढ़ि रोग भी होजाते हैं । प्रमेह होने के वा कमी कमी इन्दी और इन्दी का समझा फूलकर मुद

के ऊपर चक्कर सा घग जाता है उससे ज्यादा तकलीफ होती है कमी इन्दी कड़ी होकर टेढ़ी पड़जाती है रात को सोते वक्त यह शिकायत बकसर होती है ।

**चिकित्सा** - ऐफोनाइट - पहली हाथत पर अब प्रदाह के खच्चय रहें और पेशाब करने में अखन और तकलीफ होती हो तो देते हैं ।

**कैनिथिससटाइना**—मूत्र नली में दर्द, आलस, फूजना, पीप का निकलना और पेशाब करने में तकलीफ ।

**कैन्थारिस**—रूनी सग की इच्छा होती है और इन्दी सख्त हो जाती है, बार बार पेशाब करने की इच्छा, पेशाब में अखन, पीछे रंग की पीप और खून गिरना हो ।

**मरक्यूरियस सल**—पीप पतखा अख के समाग याद गाढा, पीला रंग भयवा खून मिळी हुआ । इन्दी का चमटा फूज जाकर मुह पर चक्करसा हो जाने पर यह दया बहुत फायदे मन्द है ।

**हीपर सलफर**—मरक्यूरियस के घाव दिया जाता है, सादे रंग की पीप और अखन कम हो जान पर यह दिया जाता है ।

**पलमेटिखा**—मूत्र की नली बन्द हो जाने से, पतखी बार से पेशाब आना पीप निकलना यन्द हो जाने से, और ब्रंड-कोप प्रदाह युक्त हो जाने से यह फायदा करती है ।

**कैपसीकम**—गाढी पीछे रंग की पीप निकलना, पेशाब निकलने के मुह पर बहुत अखन और गरमी मालूम देना ।

**सहकारी उपाय** - लेज करने वाले मसखग शराब धौर



पेट में हमेशा आवाज होगा वायु रुकजाने से पेट में हर एक प्रकार का दर्द होगा ।

**नकसबोमिका** - पेट में बहुत एवा; जाने के बाद पच जाता, कचजियत, बारबार हाजत होती हो परन्तु बस्त न होता है

**पक्षसाटिल्ला** - उमदा दवाई है विशेष कर न पचने वाला चीज और घी अथवा तेल का पका हुआ सामान खाने से । पेट के फूलने से और रात्रो के घक्त दर्द होगा ।

इग्नेसिया—कचजीयत के साथ पेट फूलना ।

**सहकारी उपाय**—यदहजमी के घयान में देखो ।

## ४१ - प्रमेह ( सुजाक )

इस बीमारी का प्रधान लक्षण स्त्री अथवा पुरुष के इन्ट्री में प्रदाह और उससे पीप निकलना यह बीमारी छूत की है और हमेशां अराय सगत से होती है । पहले मूत्र नछी में भीतर खुजा घट इसके बाद जखम और प्रदाह और इसके साथ बुखार भी रहता है । पहले जखम के समान पीछे सफेद अथवा पीछा पीप निकलता है ।

प्रमेह के होने के बाद जी जी शिकायत पैदा होती हैं यह बहुत तकलीफ देने वाली हैं और बहुत मुशकिल से आराम होता है अचानक बंद होजाने से दोनों अंडकोष फूल जाते हैं उसमें प्रदाह और कडे होजाते हैं । पुराने प्रमेह में कमी कमी मूत्र नहीं बंद होजाती है इससे रोगी पेशाब नहीं करसक्ता है प्रमेह के बाद अस्थि में प्रदाह, गठिया, गाधि रोग भी होजाते हैं । प्रमेह होने के वा कमी कमी इन्ट्री और इन्ट्री का खगड़ा फूलकर मुद

के ऊपर चक्कर सा यग जाता है उससे ज्यादा तकलीफ होती है कभी इन्फ्री कडी होकर टेढ़ी पडजाती है रात को सोते वक्त यह शिकायत बकसर होती है ।

1. चिकित्सा - ऐफोनाइट - पतली हाडत पर जब प्रदाह के लक्षण रहे और पेशाब करने में जखन और तकलीफ होती हो तो देते हैं ।

कैन्थिससटाइया—मूत्र नली में दर्द, खालरग, फूबना, पीप का निकलना और पेशाब करने में तकलीफ ।

कैन्थारिस—खी सग की इच्छा होती है और इन्फ्री सस्त हो जाती है, बार बार पेशाब करने की इच्छा, पेशाब में जखन, पीछे रंग की पीप और खून गिरता हो ।

मरफ्यूरियस सल—पीप पतखा जख के समाग बाद गाढा, पीला रंग भवषा खून मिखी हुमा । इन्फ्री का चमडा फूल जाकर मुंह पर चक्करसा हो जाने पर यह दवा बहुत फायदे मन्द है ।

हीपर सलफर—मरफ्यूरियस के बाद दिया जाता है, सादे रंग की पीप और जखन कम हो जान पर यह दिया जाता है ।

पलमेटिखा—मूत्र की नली बन्द हो जाने से, पतली धार से पेशाब आना पीप निकलना घन्द हो जाने से, और ब्रंड-फोप प्रदाह शुरू हो जाने से यह फायदा करती है ।

कैपसीकग—गाढी पीछे रंग की पीप निकलना, पेशाब निखले के मुंह पर बहुत जखन और गरमी मानूम देगा ।

सहकारी उपाय - तेज करने वाले मसखन शराब धार

की मुगानियत है। घांभारी की बढ़ती हाखत में ज्यादा मेहनत और धूमना नुकसान देता है।

खलने की जरूरत हो तो लंगोटा अथवा जागिया घाघ घेना अरूरी है। घांभारी की जगह हमेशा साधन से धोकर साफ रखनी चाहिये। रोज सुबह को स्नान और मिथ्री का सरघत पीना और शरीर सदा ठंडा रखना चाहिये।

## प्रमेह पीडा के पीछे की शिकायत ।

### १ - पुराने प्रमेह में ।

यह रोग अकसर विशेष कर अच्छा इलाज न होने पर पु होजाता है। पुराना प्रमेह अकसर असाध्य होजाता है। नीचे कुछ दवाईं लिखी जाती है।

**चिकित्सा।**—सीपिया, नेट्रम म्यूरियेटिकम, नाइट्रिक-सिल्ल सखफर, थ्यूजा उमदा दवाई हैं।

### २ - इन्द्री का सरुत होना और टेढा होजाना ।

प्रमेह के बाद कभी कभी इन्द्री नीचे की तरफ अथवा आस पास में टेढा होजाती और इस षक में बहुत कड़ी और फूल जाती है, भीतर बहुत दर्द माछूम देता है।

**चिकित्सा** - इन्द्री के ऊपर टिअरआयोडीन थोडा पानी में मिलाकर लगाने से अकसर फायदा होता है।

पीप गाढा पीले रंग का निकलता हो और इन्द्रिय टेढी होजाने से कैप सीकम, इस खलण के साथ पेशाब में तबखीक अथवा मूग के साथ पेशाब आने से कैपयिरिल। प्रमेह इकायक पद होजाणे से परसखिला फायदे गद है।

## ३ खून का पेशाव ।

**चिकित्सा** - अंकोनाइट—तेज प्रवाह ज्वर, प्यास, इन्ट्री का सखन होना और बहुत गरम मालूम दंगे से ।

**मारमेंटमनाइट्रिकम** - उमड़ा दवाई है । पेशाव में तकलीफ, खून का पेशाव, पीप निकलना, भयवा खून के साथ पेशाव हाने से कैथेडरिस उपकारी है । गठकोप प्रवाह रहने से पक्षसटिखा ।

## ४—इन्ट्री के मुह पर खाल का चक्कर

### पढजाने से

**लक्षण** - इन्ट्री के अगले हिस्से का अगड़ा जिसे घूंगट भी कहते हैं बहुत ही फूल जाता है और उसमें प्रवाह होकर इन्ट्री का मुह बंद होजाता है इस लिये उससे पीप नहीं निकलने पाती और घूंगट भी खुलता मुबता नहीं है ।

**चिकित्सा**—अगले हिस्से के अगड़े में बहुत सूजन और उसमें जखम, और फाटने कासा दर्द, खाल रंग और फटने से, मरफ्यूरियम । अगड़ा और इन्ट्री के माये में बहुत सूजन रहने से एमटाक्स भयवा पेंपिस । सबकार इस बीमारी की अच्छी दवाई है ।

पहले दवाई बेकर देखना चाहिये इससे कायदा न होने तो अख चिकित्सा अर्थात् औजार से काम करना चाहिये ।

## ५ - अठकोप का फूल जाना ।

**चिकित्सा** - पक्षसटिखा, मरफ्यूरियस, औरम, ह्यीमेटिम आदि उमड़ा दवाई हैं । इस हालत में खगोटा पाचना अच्छा है ।

## ६ - गठिया ।

प्रमेह होने के कारण गठिया होने से फक्षिमिटिस, पलसेटिखा सारसा, ध्यूजा, सलफर देना चाहिये ।

### ४२ ।—प्रसव

जिम की जिन्दगी जिस कदर अमायिक होती है उ की जिसमी फाररवाई उतनी ही सहज होती है और अमायिक तरह से पूरी हुमा करती है । जैसे जगत्ती और अमश्यप लोग प्रसव यानी लडका जगने को एक मामूली बात समझते हैं, उन लोगों की स्त्रियों के राह में पहाड पर अथवा गली कूचों में धरणा जन पडता है । विपरीत इस के रईस और सुखिया लोगों के गजदोक लडका जनना एक बडा भारी काम है । क्योंकि स्त्रियों की कमी कमी जान जाने की गोषत पशुच जाती है । जब तक खास तकलीफ देने वाली हासत वैधा न हो जावे उस तक तक धवाई देना मुनासिब नहीं है ।

**चिकित्सा—जलसिमीनियम—जरायु** अथवा अथवा दानी, का फटा मुह रहने से इन दवाई से नरम होती हैं ।

द्वंद कभी तरफ पीठ के तरफ अथवा छाती का तरफ जाता हो ।

**कैमोमिखा—**यै घरदास्त द्वंद अनाम कर जो लोग निहायत नाजुक हो । रोगी का चिहाना दोनों पैर में द्वंद बंधे दानी का मुह कडा ।

**पलसेटिखा—**द्वंद ठहर, ठहर कर होता हो और प्रसव देरी से हो, द्वंद कमी ज्यादा कमी कम, द्वंद धीरे धीरे कम होता जाता हो और केमर में ज्यादा द्वंद । जरायु की ताकत कम होने से यह धवाई उपाधा फायदा करती है ।

सिफेखी—कमजोर स्त्री, दर्द का माळूम देता हो कि थोड़ी देर में रुक जायेगा ।

विखेडोगा—दर्द ज्यादा, स्त्रामाधिक परन्तु जरायू का मुद्कडा, किसी तरह से खुबता न हो, मुंह का खाल रग, सिर में दर्द, और हाथ में घायठा, दर्द अचानक होता हो, और म-चानक चखा जाता हो । प्रकाश और आधाज का न सहना, ।

सहकारी उपाय—नाधाकिक दार्द के हाथ में प्रसव

यामी जानने का काम न देना चाहिये । अकसर मूर्ख दार्द के दोष से अन्धा को बहुत तकलीफ होगी है । जिस घर में आपा हो उस घर को बहुत साफ और सूखा रखना चाहिये । किसी तरह का शोर अन्धा के पास न होना चाहिये । रोगी और रोगी के घर बाखों को धीरज धरना चाहिये । पेट के ऊपर लेख और पानी मिलाकर माखिस करने से फायदा होता है । घन्धा होने के रास्ते के आम पास की जगह गिरी के लेख से गीखा रखना बहुत जरूरी है । प्रसव के बाद दो एक खुराक आरानिका देने से घन्ध का दर्द और पेट का दर्द ( जो कि घन्धा होने के कारण होता है ) इस से घन्द हो जाता है । प्रसव हम खोगों के देश में जैसा खराब है वैसा बुनिया के भीतर कोई सभ्य देश में नहीं है । एक तो आपे का घर अंधेरा, छोटा, अमीन सीखदार और खराब होती है, इस के ऊपर आपे का घर बहुतसी औरतों में गर जाने से उस की हवा जहर के समान हो जाती है । इसी लिये मुग्लत पैदा हुमा घन्धा इस यमपुरी के समान घर में रह कर बीमार पड जाता है और इसी लिये हम खोगों के देश में घन्धा की मृत्यु सख्या आपे के घर में इतनी ज्यादा देखी जाती है ।

१।—प्रसव होने के पीछे का दर्द

यह दर्द बहुत तरह से स्वाभाविक है। गर्भ अवस्था में जरायू बहुत बढ़ जाती है। प्रसव के बाद वह जगू फेर छोटी होगी लगती है, उसी समय से पेट में दर्द होता है। जिन स्त्रियों के अधिक सन्तान हुए है उन के यह दर्द ज्यादा होता है।

**चिकित्सा—मारनिका—**सारे शरीर में खिचावट का दर्द, मूत्राधार के ऊपर मारीपन और पेशाब का रुकना मालूम होता है। प्रसव होने के एक और प्रसव होने के बाद एक एक खुराक देना चाहिये, इस से प्रसव की तकलीफ दूर हो जाती है।

**विषेदोगा -**अचानक दर्द होता हो और अचानक बढ़ हो जाता हो।। ऐसा मालूम होगा हो कि जरायू भावि प्रसव द्वार से निकल जायेगी, गरम मैल निकलना और पेट में खिचावट का दर्द होता हो।

**कौखोफाश्म -**पेट के नीचे के हिस्सा में ठहर ठहर के दर्द, ज्यादा ठहरने वाले प्रसव के दर्द में तकलीफ पाने के बाद यह दवा उपकारी है।

**कैमोमिळा -**बे परदास्त दर्द और घीमार साफ हुआ चाहती हो और बढ़ने वाली खीज गाढी और काले रंग की और बहुत बे चनी रहती हो।

**अखसीमीनम -**बहुत तकलीफ, बहुत ठहरने वाला दर्द और नींद न आती हो।

**नफसयोगीका—**पेट में डक मारने का सा दर्द, जरायू का

जोर से सिगटने का दर्द और उसके साथ दस्त की सी हाजत मालूम होना ।

सिकेली — जरायु का बहुत जोर से सिगटना, बुखली और पतली ली, मध्या जिन स्त्रियों के ज्यादा सतान हो चुकी हो उन स्त्रियों को फायदा मग्न है ।

## २।—प्रसव के बाद खून गिरना ।

स्वामाधिक प्रसव में ज्यादा खून नहीं गिरता है । वधा पैदा होने के थोड़ी ही देर बाद खून गिरता है ।

चिकित्सा ।—बिछेड़ना—गरम, ज्यादा, साफ बाल रग का खून गिरना, मालूम देता हो कि पेशाब के साथ जरायु आदि निकल पड़ेगा, प्रसव के बाद दर्द क साथ धीच धीच में ज्यादा खून गिरना । उच्छेदन के छषण जैसे मुह और आख का बाख रग, घमनी आदि नस क जोर से फसकना, नाड़ी जल्द और पूर्यं, जरायु के ऊपर दधाने से जी मिचलाना, पीठ में दर्द, बधूतार खून का गिरना ।

फैमासिखा—काफे रग का गाढा गाढा रग, ठहर ठहर के एक एक बफे बाख रग का खून गिरना, उस के साथ दोनों पैर में चीरने का सा दर्द और जरायु के भीतर प्रसव के समान दर्द, जी मिचलाना यहोस होजाना, बीमार ठडी हवा चाहती हो । अनुमघ शक्ती का ज्यादा बध जाना,

फैरम—ज्यादा खून गिरना, खून कुछ पनखा और काखा और जमा हुमा, कगजोर शरीर, सिर में दर्द, और सिर का घूमना, कथजियत ।

झाटीना—ज्यादा काखा और गाढा ( परन्तु जमा हुमा



नहीं) खून गिरना । मान्द्रुम देता हो जिससे शरीर चारों तरफ से बढ जाता है ।

सर्वाहता—ज्यादा खून गिरना, सास कर खून, का साफ, छाछ रंग, कभी कभी थोड़ा फाल्सा रंग, घाढ हिखने स खून का ज्यादा गिरना, प्रसव के बाद ही बिना दर्द के खून गिरना । मोटी स्त्री और जिन के मासिक के बक्त बहुत खून गिरता हो उनके लिये बहुत उपकारी है ।

इपीकाक—प्रसव के बाद, नार गिरने के पीछे भय गिरने के बाद खून गिरना, और नाभी के पास चीरने दर्द—सास लेने के बक्त हापती हो । जी मिचलाना, कै, १ कै के बाद ज्यादा खून गिरना ( ज्यादा खून गिर ययान देखो ) ।

### ३ ।—नार का न गिरना

कभी कभी बच्चा पैदा होने के बाद नार गिरने में देरी होती है । नार को कभी जार से खींचना नहीं चाहिये । इस से ज्यादा खून गिरने के लक्ष्य से स्त्री मरती आ सकती है ।

चिकित्सा—बिलेडौना—मुह का छाछ रंग और दोनों मांख खून से मरी हुई, गरम ज्यादा खून गिरना, जरायु के मुह का सुफडना ।

इपीकाक—सदा जी मिचलाना, नाभि के चारों तरफ चीरने का सा दर्द, खून का गिरना और नार का न गिरना ।

पलसेटिखा—जरायु के सुफडने की ताकत न रहना, बच्चा घायठे के समान सुफडने के कारण नार का बटक रहना, ठहर ठहर के खून गिरना, और नै चैगी ।

सैधाइना-तार गटक रहने पर भी यहन दहं उस के साथ पतला और जमा हुआ खूंग गिरना ।

४।-प्रसव के समय अथवा प्रसव के बाद आक्षेप ।

यह बीमारी यही सांघतिक है । प्रसव के समय यह बीमारी होने से जन्मा और बच्चा दोनों के प्राण नष्ट होने की सम्भावना रहती है । प्रसव के बाद आक्षेप होगा भी बड़ा भयानक है ।

त्रिकिरना-बिलेडौगा-थोड़ा छाछ रंग का मुह, हाथ पाव में धायठा, जीभ की दाँद तरफ का मारा जाया ( पचाघात, ) घोखने की ताकत और निगलने की ताकत जाती रहता । हर एक दह के घल्ल घायटे आजाना, घायटे बाद सा जाना और बेहोश हो जाता ।

कृम-घायटे क साथ कै, हर एक घायटे के समय पीठ का धनुष आकार हो जाना, मुह फाड के रहता, ।

हापोसीयमस्त-प्रसव क बाद घायठा, चिल्लाना, छाती में तकधीफ माज्म हाता, बेहोशी हो जाना, मुह का नीखा रंग हो जाना, शरीर क सय पट्टों का घटकना, बकना, हर एक घायटे के समय हाथ पैर का टेढ़ा हो जाना, सारे शरीर का बिलौने से ऊंचा होकर उठना ।

भोपीयस-हर समय क सयष स घोगारी या होना । नईफ का माना, गख म प्रख घड क साथ म्बोम या ब-जना, शरीर के ऊपर गधापन हो जाना, मुह का छाछ रंग, गरम और सूजन आदि रहता ।

स्ट्रेमोनियम-बेहोशी, शरीर का लुप्त हो जाना, हर मा-लून होगा, हसना, मान, भागने की आशिश करना, समक

घर चीज देखने से घायटा माना, तोतला होना, मगधा घोड़ने की ताकत जाती रहना ।

## ५ ।--लोकिया यानी प्रसव के बाद मैलका गिरना ॥

प्रसव के बाद थोड़े दिन तक एक प्रकार का मैल गिरता है। पहले उस का साख रंग होता है, फिर धीरे धीरे सफेद होकर घट हो जाता है। मखानक इस का गिरना बढ़ हो जाने से—नाना प्रकार की धीमारी हो जाती है।

**चिकित्सा**—एकोनाइस-घर के भीतर इधर उधर चलने फिरने से मैल का गिरना, साख रंग का बहुत मैल गिरना । कम उमर की स्त्री और एक प्रभाग स्त्रियों के लिये यह उपयोगी है ।

**पखसटिखा**—भाचारण धीमारी में, विशेष कर कम साध होने से, और छाती का दुःख मखानक घट्ट होजाने से उपकारी है । मखानक साध घट्ट होजाने के कारण बिना व्यास का दुखार ।

**कैलकैरिया**—दूध के समान सादा लोकिया, बहुत दिन ठहर ने वाली । एकहीन ढीले शरीर की स्त्रियों के लिये यह उपयोगी है ।

**सिकेडी**—काले रङ्ग की चट्टदार साध निकलना । पतली और दुबली स्त्रियों के लिये यह उपकारी है ।

**कैमोमिखा**—लोकिया घट्ट होजागा और उसके बाद बदरामप, पेट में और दाँतो में दर्द, ।

माईपौनिया— खोकिया बन्द होने के साथ सिर में दर्द होजाना, और गर्म खाब रङ्ग का थोड़ा थोड़ा झाब निकलने से उपकारी है । इसके साथ पेकोनार्डेट, भयथा विखेडाना धारी से दिया जाता है ।

६। — प्रसव के बाद पेशाब का बन्द होजाना ।

प्रसव के बाद कभी २ पेशाब बन्द होजाता है । इससे जबा को बहुत तकलीफ होती है ।

चिकित्सा - थिखेडौना - बारबार पेशाब की हाजत होना बूढ़ बूढ़ करके पेशाब आना, खेकित पेशाब करते वक्त तकलीफ न होगा और मूत्र धार में खपका मारने कासा बन्द ।

भारनिका - तकलीफ होकर प्रसव के बाद भयथा प्रसव के समय जोर भयथा थोट खगकर पेशाब बन्द होजाना । कमर में थोट खगने कासा बन्द । मासूम होना ।

कैतपरिस - पेशाब की बहुत हाजत, पेशाब के रास्ते में जलन के साथ काटने कासा बन्द, पेशाब का बन्द होजाना भयथा बूढ़ बूढ़ करके गिरना ।

हायोसायमस - मूत्रधार के पच्चाघात में ।

नक्क्सयोमिका - जलन और चीरने कासा बन्द, पेशाब की हाजत होने पर भी पेशाब न होना, पेशाब बन्द होजाना, और इसके साथ बारबार पाखामे की हाजत होना ।

ओपियम - पेशाब और इस्त थिखकुख बन्द, किसी की हाजत न होना ।

### ७—प्रसव के बाद कवजियत ।

प्रसव के बाद कब्ज होना, कुछ गैर वाजिब नहीं है । तीक बार दिन बराबर दस्त साफ न होने पर पेट में दर्द और

सिर भारी गादि हालते जाहिर होती हैं तो ब्राईचैनिया देना चाहिये । इसके बाद जरूरत लोये तो नक्सबोमिका, और सलफर घारी से दिया जाता है ।

## ८ - उदरामय ।

प्रसव के बाद यह बीमारी बहुत घातक होजाती है, इस लिये यह बीमारी हान के साथ इसका इलाज ध्यान देकर करना चाहिये ।

**चिकित्सा**—पखसटिला रान को दूध होता हो अथवा तैल की चीज खाने से उदरामय हाने पर यह उपकारी है ।

चायना—बहुत कमजोरी रहने से ।

**सहकारी उपाय**—प्रसव के बाद सोचर म रहने के समय खाने पीने की छद् परहेजी से यह बीमारी होजाती है । जम्हा को अधिक बी मसाखा भादि न पखने याखी चीज खाने को देने की पुरानी रिवाज जब तक खद् न होगी तब तक यह बीमारी खद् होना मुशकिल है, गह्वरी खाने याखी औरतों के लिये मछली का शोरवा, मान, जरूरत के माफिक साबूदाना, और दूध उमवा खाने की चीज है ( ज्यादा देखने की जरूरत होगी उदरामय का ख्यान देखो ) ।

## ९ - दूधका बुखार

प्रसव होने के बाद स्तन में दूध, स्तन फटा होजाता है, और उपरांत ज्वर होना है । बुखार के बाद स्तन में दूध आजाता है । इसीलिये इसको दूध का बुखार कहते हैं ।

**चिकित्सा** - ब्रायौनिया-उमदा दवार है । नाडी जल्द और धूर्ण, सिर में दद और व्यास रहने से पेफोगास्ट, दिया जाता

है । मकमर पेकोनाइट के साथ पिछेडोगा वैन से भी उपकार होता है ।

## १० - छाती में दूध का सूख जाना ।

दूध कम होंगे से, दूध होने में देरी होने से, अथवा दूध सूख जाने से नीचे लिखी हुई बधाई देनी चाहिये ।

**चिकित्सा - पल्लमेटिजा -** दूध पैदा होने में देर होने से अथवा अचानक दूध सूख जाने से यह उमदा बधाई है ।

**कैलकेरिया -** स्तन की पूर्णता और वृद्धि होने परमी दूध कम होताहो । पल्लमेटिजा के बाद यह बधाई दी जाती है ।

**कैमोगिखा -** स्तन कड़ा, और ब्याने से बंध, मालूम होता हो, गुस्ता क समय से दूध का सूख जाना ॥

**इगनेसिया -** ( रज के समय ), डबका मारा - ( ठंडककर )

## ११ । - स्तन में बहुत दूध होना -

स्तन में बहुत दूध होने से तकलीफ होती है ॥ यह तकलीफ रकै करने के लिये कोशिश करनी चाहिये ।

**चिकित्सा -** माइयोमिया - स्तन में इतना दूध जम जाये कि जिमसे स्तन फूल जाये और चपका कासा बर्ब होता हा ।

**कैलकटिया -** बहुत ज्यादा दूध का पैदा होना और धरावर गहता रहगा ।

**घाहना -** ज्यादा दूध निकल जाने के समय से कम जोरि हो जाना ।

## १२ - बच्चा की होशपारी रखना ।

प्रसव के बाद बच्चा की होशपारी करना जरुरी है । प्रसव के

दर्द के समय सघका ध्यान जघ्वा के ऊपर रहता है । और प्रसव के बाद यघ्वा के ऊपर ध्यान रहता है । प्रसव होने के बाद यघ्वा का नाल तीन चार अंगुल लम्बा रखकर इसके दोनों तरफ गाँठ लगाकर बीच में बड़ी होशयारी से गाँठ काट दिया जावे । इसके लिये तेज कैंची होनी जरूरी है ।

नाल काटने के बाद यघ्वा के नारियल का लेख लगाकर थोड़े गरम पानी से स्नान कराने के बाद साफ बिछौना पर सुला देना चाहिये यघ्वा का कपड़ा साफ होना चाहिये । साफ धुला हुआ कपड़ा गरीब के घर में भी मिल सकता है । साफ धुला हुआ कपड़ा नारियल के लेख में भिगों कर नारी के धारों तरफ लपेट देना चाहिये अगर यघ्वा सोता हो तो अगाकर किसी को दिखाना नहीं चाहिये ।

जब तक यह अपनी खुशी से नरोवे या न जागे तब तक उसके अच्छी तरह से सोने देना चाहिये अगर यघ्वा बहुत देर तक सोता रहे तो यह ख्याल करके न जगाना चाहिये कि इसको सोये हुए देर हुई है । घनिसघत खाने के यघ्वा को सोना बहुत जरूरी है । जागने पर जब तक मा के स्तन में दूध न हो तो गायका ताजी दूध गरम करके पिछागा चाहिये ।

यघ्वा के इस्तेमाल किये हुए मैले कपड़ा प्रति दिन साबुन से धोकर यघ्वा और कोई उपाय से साफ करके सुखा लेना चाहिये जामा, बिछौना, हवा, मकान, आदि हर एक तरह से साफ सुथरा होना यघ्वा के जीवन का मूख है इसमें किसी बात का फरक माने से यघ्वा जल्दी बीमार पड़ सकता है ।

प्रति दिन कम से कम एकवार नाभि का कपड़ा बदल देना चाहिये । दीपक के ऊपर उंगली गरम करके यघ्वा की नाभि को सेक देगा हम खोगों के देश में धराय रिवाज है । क्योंकि सेकने से कुछ फायदा हो या न हो लेकिन दिये का काजल लगने से

पक्क तरह का मैल इकट्ठा होजाता है। ऐसा करने से नाभि पक्क फर घबे को बढा हुआ देती है। प्रथम तो यह जानना चाहिये, कि नाभि में सेकने की कोई जरूरत ही नहीं है।

तेख में कपड़ा भिगोकर नाभि पर रखने से यह अपने आप ही सूखकर गिरपड़ता है। गिर पड़ने के बाद सिधाय नारियलका तेख खगाने के सेकने की कोई जरूरत नहीं है।

दूसरे - अगर सेक देने की ही जरूरत होंतो ऐसी तरह से सेकें कि नाभि के ऊपर स्याही और मैल न पड़े।

घबे के आहार का परिमाण और समय ठीक रहना चाहिये जब घबे रोवे तो भूख के खिये रोता है ऐसा ब्याख करणा गलत है अर्थात् रोने से ही घबे को दूध पान कराना नहीं चाहिये। दूध पिखाना हो अथवा स्तन पान कराना हो तो ठीक समय पर होना चाहिये। खाने के दोप से बच्चों को उदरामय अथवा दूध उखट देने की धीमारी होजाया करती है खाने के ऊपर ही दही रखना बद्दहजमी की खाल ब्याह है।

हम खोगों के देश में जाये के घर में घबे का प्रचलन रोग ऊपरी हवा का लगजाना ( यानी भूत मेह खगजाना ) ऊपरी हवा का रोग और कुछ नहीं है बच्चों को धनुषकार रोग है।

मैखे घर में रहना खराब हवा का खैला, खाने का दोप नाभि में पीप पड जाना आवि यही रोग के कारण हैं। हम खोगों के देश में जथा के घर में यह सब दोप देखने में आते हैं। इसी खिय हम खोगों के देश में ऊपरखी हवा की धीमारी इतमी दूखी जाती हैं।

विधायत आवि सऊप देश में यह धीमारी बहुत कम देखने में आती हैं। और घबों की बकाब मृत्यु भी बहुत कम होती है एना ब्याख कर कि ऊपरखी हवा लग



गई है स्थाने को धुलाकर इलाज कराते हैं यह बिल्कुल भ्रम है। जापे का घर और उसके साथ भूमि प्रेत आदि का जो संपादन हम लोगो में है वह भी बिल्कुल गलत है। यह सब गलत बातें हमारे देस की औरतों के जी में से जितनी जल्दी निकल जाय उतना ही अच्छा है। ऊपरकी दवा के के रोग के शुरु होने से पहले ही यथा रोगे लगता है इस के बाद जाघडा घग् हो जाना ही खास खतरा है। यथा मुह फाड फर रो नहीं सका और गाका स्तन पान प्रथवा वृष पान नहीं कर सका है। धीरे धीरे बांधटा आ जाता है। और थोड़ी थोड़ी देर में देसा होता है यथा हाथ पांघ सखने करलेता है और मुह जोर से घग् करके एक प्रकार का शब्द करने लगता है। मगाम शरीर बडा हो जाता है। मुह से भाग निकलने लगते हैं। इसी प्रकार का घायटा थोड़ी देर रह कर बंध हो जाना है। घग् हो आने के बाद यथा थोड़ी देर आराम से रहता है। इसी तरह बहुत देरी से कभी कभी तीन चार दिन के बाद इसी तरह रोग के साथ खडाई करते करते घग् का प्राण निकलजाना है। यह बीमारी जैसी कुछ साध्य है देखने में भी वैसी ही घुरी गालूम होती है। यह बीमारी पूरी तरह से आदिर हाने के बाद आराम होना मुशकिल है। जब कि बीमारी शुरु हो वैसीही समझली जावे और गच्छी तरह से दवाई फीजावे तो आराम हाता समभव है। बिलोड्याग, सिक्कूटा, नकमघोमिका, मोपियुग हाइयोसामस, आदि दवाई खक्षयके अनुसार देना चाहिये।

### ४४।—तापतिह्री

तापतिह्री कहने से ही यह गतलघु समझा जाता है कि

तापतिह्नी बढ़ गई है तापतिह्नी हो गई है इसका मत-  
 लब्ध यह नहीं है कि पहले तापतिह्नी नहीं थी । और गि-  
 ल्टियों की तरह शरीर में यह भी एक स्वाभाविक  
 गिल्टी है पुराने ज्वर मैलेरिया ज्वर इत्यादि ज्वरों में ताप  
 तिह्नी बड़ा भयानक रूप धारण करती है, यदा तक कि  
 करीब करीब पेट के सब स्थानों पर अधिकार कर लेती  
 है । तापतिह्नी के बढ़ने के साथ ही और बहुत तरह की शि-  
 कायों उपस्थित हो जाती हैं, सबन इस का यह है कि ताप-  
 तिह्नी बढ़ने से खून क्षुणित हो जाता है ॥ अक्सर ज्वर होने  
 की वजह से तापतिह्नी बढ़ती है, इसी सबब से अक्सर ता-  
 पतिह्नी के साथ ज्वर बना रहता है ॥ नीचे लिखी हुई  
 दवाइयों में जिस दवाई के लक्षण के साथ पुस्तारके लक्षण  
 मिलते हों उस दवाई का ३० क्रम देना चाहिये । दवाई सुबह  
 और शाम एक एक मात्रा सात दिन तक देकर पांच सात  
 दिन बढ़ कर देना चाहिये । इसी तरह से धीरे धीरे में  
 बन्द करके दवाईयां इस्तेमाल करनी चाहियें ।

**चिकित्सा**—तापतिह्नी बढ़ने पर आरसेनिक—फार्मिने-  
 जिटेथिलिस—सीमानोचस, आयोडियन नेशुग मिडरे, सबफर—  
 और मकुरिमस आयोड—बहुत फायदे मन्दा है ।

तापतिह्नी के बढ़े में—सीमानोचस—चायना—पलसेटिखा  
 उपयोगी है ।

तापतिह्नी और पुराने उदरामय में—आपना—इग्नेमिया  
 पखसटिखा—रसटकस—और सबफर उपयोगी है । यदि ज्वर  
 न रहे और तापतिह्नी बढ़ जाय और कड़ी होजाय तो सि

किसी यंत्राारी में फ्लू का सन्देह होने से योग्य चिकित्सक से इलाज कराना चाहिये ।

**फ्लू से बचने के उपाय** - चारों तरफ फ्लू होने से नीचे लिखे नियम पालन करना चाहिये ।

( १ ) हमेशा साफ कपड़े पहनने चाहियें, घर में अथवा घर के पास कोई तरह का मैला इकट्ठा न होने देना चाहिये, रहने के घर में हवा की गाम्हरफत का पूरा पूरा प्रबन्ध होना चाहिये, और एक घर में बहुत से आदमियों को कभी न रहना चाहिये, फ्लू के रोगी अथवा उसके कपड़े या उसके बिछोने इत्यादि का स्पर्श बिल्कुल वर्जित है, नीचे के घर की मपेचा ऊपर के घर में रहना अच्छा है सुनह व शाम तमाम धर में राख गंधक इत्यादि सुगन्धित वस्तुओं की धूनी देना अच्छा है ।

( २ ) अनियमिति और अपरमित भोजन करना, रात्रि जागरण तथा पान इत्यादि वर्जित हैं ।

( ३ ) हर तरह की अट्टी चीज का इस्तेमाल करना फायदे मद् है, इस लिये हर रोज जियादा नीबू का रस डालकर शरबत पीना चाहिये ।

( ४ ) जो लोग तेज का कारवार करते हैं उन लोगों में यह रोग कम देखा गया है, इस लिये बहुत से डाक्टरों की राय है कि सत्र शरीर में विशेष कर मुँह और हाथ पैरों में प्रति दिन नियमानुसार अच्छी तरह तेज मखने से यह रोग बिल्कुल नहीं होता है ।

( ५ ) सन् १८३६ ई०रूसके कोन्स्टेंटीनोपिल शहर में जब फ्लू

गयानक रूप से फैली थी उस समय डाक्टर हैनिंग वर्जरेमे सब से पहले यह देखा था कि उस शहर के रहने वालोंमें से जिन्होंने इगनेशिया विन बाधा था उसमें से किसी को प्लेग नहीं हुआ, इस के उपरांत उन्होंने प्लेग रोग में इगनेशिया की परीक्षा करके बहुत सफलता प्राप्त की। इसी समय से डाक्टर महेंद्रबाबू सरकार ने यह निश्चय किया है कि इगनेशिया विन बाधा में बाधा ने से प्लेग को विशेष कर रोकता है। डाक्टर सरकार के मत से प्लेग रोग के आरम्भ में इगनेशिया ३० क्रम देने से बहुत फायदा होता है।

( ६ ) प्लेग रोग रोकने वाली एक और दवाई प्यूवानीमम डमदा दवाई है। १२ व ३० क्रम की रोज मात्रा सेवन करने से अक्सर प्लेग को रोकता है।

( ७ ) घर में अगर किसी को प्लेग होता रोगी को घर के एक तरफ एक निज्जग कमरे में रखना चाहिये, और हवा की आसानी का पूरा पूरा बन्दोबस्त करना चाहिये, रोगी के मलमूत्र इत्यादि को किसी बर्तन में लेकर अलग दूर फेंकना चाहिये। और रोगी के कपड़े धिलोता भी अलग जगह देना चाहिये।

( ८ ) रोगी के व्यवहार किये हुए घर को अच्छी तरह से साफ और शुद्ध करके काम में लाना चाहिये। घर में कार्बोलिक एसिड छिड़कना चाहिये, गंधक आदि की धूनी देकर कुछ दिन तक उस घर के सब दरवाजे, खिड़की खोलकर साफ हवाको आने जाने दें।

## ४६ वहरापन ।

**लक्षण** - वहरापन कई तरह से उत्पन्न होजाता है, जैसे काग का दर्द, बहुत ठंड लगना, गिल्टी का बढ़ना, अथवा काग का पुराना दर्द इत्यादि, अचानक कोई जोर का शब्द सुनने से

कान की भिल्ली का घड़ होजाना । कभी २ कान में मैल होने से भी घहरापन होजाता है ।

**चिकित्सा** - दुर्बलता अथवा कोई आघातक पीटा होने से फोमफरस देना चाहिये । यह बुद्धे आदमियों के लिये बहुत फायदे मदा है ।

ठह लगकर घहरापन होने से एकोनाइट, वैल्लोडोगा, मरक्यू-रियस, कैलकैरिया, पल्लसटिला देना चाहिये ।

बुझार के पीछे घहरापन होने से, पल्लसटिला [ चेषक के पीछे ], फोम फरस [ चिकार के पीछे ], मार्लेशिया [ माथे के दुर्ब के पीछे ], माथे में घाँट लगने से आर्निका ॥

**कैलकैरिया** - घहरापन, कानके भीतर गुन गुनिया सा अथवा गाने कान्सा शब्द तरह २ सुनाई देना । कान से पाष का निकलना, कुनेन खाकर ज्वर घड़ करने से रोग की उत्पत्ति होता । देना चाहिये ।

**प्राफाइटिन्** - कानके भीतर खुश्की लिये हुए घहरापन होना, अपनी घात या अपने पैर की भाषाज की गूज कान में जानी हो, गाँडी में बैठने से घहरापन कम मालूम होता हो, कान के पीछे घाव होता यह दवा देनी चाहिये ।

**पैट्रालियम** - बुद्धे आदमियों के घहरापन में यह दवा देनी चाहिये ।

**फासफोरस** - घहरापन की एक ग्नाम औषधि है । कान में किसी जोर के शब्द म सन्नाहट होगया होतो मरक्यूरियस या पल्लसटिला देना चाहिये ।

**सूखेन औषल** - घहरापन की एक गई दवा है । हरगेज सुगह जोर शान एक २ घूर कान म डालने में जल्दी आगम होता है ।

कोनायाम - कान में मैल होने की वजह से बहरापन होने के लिये यह दवा फायदे मद् है। जलसीमीनम - थोड़ी देर के लिये अचानक कम सुनाई देना होजाने पर यह व्धारि दनी चाहिये।

**सहकारी उपाय** — स्नान के पीछे कान में पानी रहना अच्छा नहीं है। सूखे कपड़े से पानी पोंछ साधना चाहिये। पख कपड़ा अथवा निमका काग में डालना बहुत बुरा अज्ञान है। बाखकों के कान के ऊपर थप्पड़ या धूना कभी न मारना चाहिये। बहरापन में भयकर शब्द सुनने से अफसर बाखक बहरे होजातेहैं।

## ४७ - उलटी होना

**कारण**—अजीर्ण, न पचने वाली चीजों का खाना, मस्तिष्क विकार पाकस्थली में घाव होना, कोष्ठ बन्द, पेट में कीड़ों का होना, गर्भावस्था तथा गाड़ी या नाव में बैठने इत्यादि का कारण से उलटी होन लगती है।

मस्तिष्क विकार में उबफारि और उलटी का होना बुरा है। गर्भावस्था और मृगी रोग में उलटी अमाध्य नहीं होती है। यदि उलटी होने से भारम मालूम होता है, तो यह अशुभ लक्षण नहीं है, लेकिन जो रोग कमती होकर पढजाय तो फठिन जानना चाहिये।

**चिकित्सा** काखी उलटी होनेसे -**मासिक**— चायना — उपीका - गाड़ी अथवा नाव में बैठने से उलटी होना काफूस हापो साथेमन और सबफर देना चाहिये।

गर्भवतीयों को बगन होतो-इपीका-नक्स-क्रियोजोट। कीडों की वजह से उलटी होतो— सीना देना चाहिये। बिचकी उन्टी अथवा हरी और कडवी हातो केमोमिखा नक्स देना चाहिये।

नमकीन उखटी होती पलसटिखा देना चाहिये । खटी उखटी होती पलसटिखा और सखफर देना चाहिये ।

इपीका— साधारण उखटी में, विशेष कर एक दफे में जियादा उखटी होने से और उसके साथ घराघर उबकाइ होवे से फायदेमन्द है । खाई हुई चीज का उखटी करना, कडवापिच अथवा गोंद क समान उखटी होने से और पाकाशय में भारी दर्द होने से ।

पटमिोनियम—उबकाइ और जियादा भयन्कर उखटी हाने से, जीम मोटी और सफइ रङ्ग की होने से, डकार भाने से और भूख न लगने से यह दवाई देनी चाहिये ।

आर्सिानक—पाकस्थली और गले में अजन मालूम होती हो, दस्त आते हों, हाथ पैर ठंडे हों फाल्सी २ उखटी हो; पीने वा खाने के पोछे अफसर पानी पीने के पीछे उखटी बढती हो, तो यह दवाई देनी चाहिये ।

नक्सघोमीका—उखटी होती हो, मुंह सूखा बुभा, नींद न आना, कब्ज, शराब पीना, जियादा और अनियम से भोजन करना इत्यादि दोषों से उखटी हो तो यह दवाई देना चाहिये । सूखी कै और हिचकियों में भी यह दवा दी जाती है, खडकों की खाई हुई चीज की उखटी कर देने से कैमेमिला बेटे हैं । गाड़ी वा गाध में बैठने से उखटी होता कौकलस बेटे हैं ।

सहकारी उपाय - बार २ उखटी होना वा जी मिचकाने से घरफ-मुह में रखना चाहिये, ऐसे समय साष्टदाना वा हलका भोजन इत्यादि खाना उचित है ॥ कभी २ उखटी घद करने के लिये सोडा वाटर और आहार के लिये दूध में सोडा वाटर मिखाकर देने से खाम दायक होता है ।

## ४८ - वसंत ( माता या चेचक )

यह रूग्ण की बीमारी है। पहले मर्दाना या कपकपी लगने दुखारता है और यद्यक उत्ताप १०४ से लेकर १०६ डिगरी तक जाता है। इसके साथ साथ शरीर जासकर पीठ और कगार में होता है। तिर दुखना है, मुह खाद्य रग का होजाता है, उबफाई र उब्डी आने लगती हैं, पेट में दग्द इत्यादि बातें उपस्थित जानी हैं, और कगीर यकता और घे चेनी बांयट्टे इत्यादि रगाय क खस्य गी दीख पडते हैं। तीमरे वा चौथे रोज छोटे २ घाने रीर में निकलते हैं। यह पहले मुह पर विशेष करके माधे निकलते हैं और दो एक दिन में ही साथ शरीर में निकलने हैं। इस वक्त में बुखार कमनी होकर शरीर का उताप फरीब १०५ स्वाभाविक होजाता है। यह घाने पहले पहल स्वच्छ खाद्य के दिखाने देते हैं और तीसरे वा चौथे दिन कमश घटे होने हैं। दागों को दवागे से छरे के समाग कडा पथापसा मालूम पा है, फिर इनमें धीरे २ पीघ उत्पन्न होती है भाठये, दिन दाने कर फूट जाते हैं, और पीघ निकल जाता है, और जो दागे मर्दाना से हैं तो योंही सूख जाते हैं। जिसवक्त पीघ पडती है तो दुखार दुखा दीखता है, पहले ठंड वा कपकपी लगती है, पीछे माडी होनी है, व्यास यहुन लगती है, जीभ और मुह सूखा सूजा जाता है इत्यादि इस बुखार के लक्षण दीखने हैं और उत्ताप १०५ डिगरी तक पड जाता है। इस रोग में बहुत बुखार १०५, सक्त कमजोरी, कस से द्यास भासा, रूग्ण की दूषित ममरुपा, ज्ञान, इत्यादि उपस्थित होने से मृत्यु होती है। इसके सिवाय डा, वायु नली, फेफडा को टकने वाली फिट्ठी और भाग में प्रदाह उदरामय, तरल २ के रघानी मडाह और घाब



घनैर पेशाब की जगह से और मुह से खून गिरना और मांस में घाब इत्यादि शिकायतें इसके साथ २ होती हैं। साथ रहने वाली शिकायतों के कमती जियादा होने से रोग सामान्य अथवा सांघातिक आकार प्राप्त करता है। दाने सूख जाने पर ११वें वा १४वें दिन खुरट उचलजाते हैं और उसके नीचे का दाग ७ या ८ सप्ताह तक रहता है जो खास उडजावे तो उनके नीचे दाने के स्थान में छोटा गट्टे कासा दाग रहजाता है। यह रोग एकवार होने से और दूसरे बार नहीं दिखाई देता है।

**चिकित्सा** - पीडा के आरम्भ में उबर होने के समय - एकोनाइट, बेलेडोना, कैप्टीशिया, गैरट्राम - थिरिड ॥

दाने फूटने की अवस्था में - पेन्टीमनीटाट, गुला, सखफर ।

पीस पड़ने की अवस्था में - एन्टीमनीटाट, मरक्यूरियससौल, एपीस, कैफेसिस ॥ दाना बैठने पर - केम्फर, सखफर, ।

फेंफडे के प्रदाह इत्यादि शिकायतों की हालत में - फासफरस, एन्टीमनीटाट। फेंफडे में खून जियादा होने पर-एकोनाइट, प्रायोनिया ।

वांगुली में प्रदाह होने पर - प्रायोनिया, काजीयाई क्रम ।

पीठ में ज्यादा दर्द होने पर - रसटकस ।

गिल्डियों में सूजन होने पर - मारक्यूरियस ॥ शोष, मांसमिष जाने पर और गले के भीतर सूजन होना पर—एपिस । बफने पर थिबेडोना, हायोसायमस, स्टेमैनीनम, गैरट्राम थिरिड,

एकोनाइट-रोग के आरम्भ में प्रदाह के समय बहुत उच्च दवा है। सिर में दर्द, चक्का इत्यादि रहने पर बेलेडोना के साथ घारी से दिया जाता है।

**इन्टीमोनियम टार्ट**—यह ज्वरक की बहुत अच्छी दवा है।  
दाने अगर देर से निकलें और उबकाई, उल्टी और आर्नित्रा  
या दाने बैठ आय तो यह दवाई दी जाती है। स्वाम के रस्ते  
में गले के भीतर और पाकाशय आदि स्थानों में दाने नि-  
कलें तो दिया जाता है।

**बेलेडॉना**—एकोनाइट के लक्षण देखिये।

**स्ट्रेमोनियम**—इन्टीमोनियम के घाद अथवा उस के साथ  
धारीर से दाने निकलने की दखलत म बिया जाता है।

**मरक्यूरियस**—गले का घाव, ज्वारगिरना, आमाशय अथवा  
सहरामय, और भीम पूजने की दखलत में दिया जाता है।  
रोग की अस्खीरी दखलत में जब दाग पड़ने लगते हैं, उस स  
मय यह दवा आमाशयक है। दानेपकने पर और उज-  
की बजह से बुखार आने पर काम में लानी चाहिये।

**वैरीफोन्डीनम**—यह दवाई ज्वरक को रोकती भी है और  
आराम भी करती है यह हर दखलत में दी जा सकती है।

**आरमेनिक**—यह कमजोरी, नाडी कमजोर, बहुत प्यास  
शरीर में ज्वर, और घेंबेनी की हालत में यह दवाई दी  
आती है। यह बहुत फटिन और साधानिक रोग है, इस  
लिये इस के रोगी के इलाज को अच्छे चिकित्सक क हाथ  
में देना चाहिये।

**सहकारी उपाय**—जिस मकाम में रोगी रहे, उस को ठंढा  
साफ हवादार और अंधेरा कर के रखना चाहिये। घर की  
यास गिटाने के लिये फारमोविक एसिड को ( १ ग्राम कार-  
बोविक एसिड में ४० ग्राम पाणी मिलाने म कार्बोविक  
सोशम तयार होता है ) घर में छिडक कर अथवा घूनी दे-

फर दुर्गंध रहित रखना चाहिये घर के भीतर पैसा धन्दो-  
 वस्तु रखना चाहिये कि बीच बीच में साफ हुआ आ सके  
 रोगी के शरीर पर बहुत कपड़े पहनने की जरूरत नहीं है।

भ्रौंठों का कपड़ा सदा बदल देना चाहिये, प्यास मिटाने के  
 लिये, ठण्डा पानी, निम्बू के रसके साथ मिसरी का शर्बत  
 पीने को दिया जाता है। ज्वर की पहली भयस्या में हलफा पथ्य  
 जैसा कि सायूदाना, धारखी, अन्त में मास भयथा मछली का  
 शोरया, नारगा, येदाना, भादि पका हुआ अम्ल मधुर फल खाते  
 के लिये दिया जासकता है। शीतला के दाग मिटाने के लिये  
 गिळीसिरीग मथवा स्टार्च देकर ढक देना चाहिये।

रोकने का उपाय—टीका लगाना ही इस का प्रधान उ-  
 पाय है वधे के डाढ़ दांत निकलने से पहले ही टीका लगाना  
 ही उचित है। धीमार होने पर टीका लगाना उचित नहीं  
 है बहुत से आक्षय के कारण टीका देने में देरी कर देते  
 हैं, यह बड़ा अन्याय है। चेचक पूरे तौर से जब फैल जाय  
 तो वैफ्लीगिन या वैरीयोलिन ३० फ्रम सप्ताह में १ या दो  
 बार दो से इस के आक्रमण से रक्षा मिलती है।

## ४६ वंद

बध्ना—सुजाक या उपदश ( गर्मी ) के दौर से राज की  
 गांठ फूट जाती है, इसी को बध कहते हैं, गिलटी फूली हुए  
 लाल रगत की उत्तम और वेदना युक्त होकर कड़ी पड़ जाती  
 है। क्रमशः इस में रास पड़ कर यह पक्क उठती है। इसी स-  
 धय में ज ठंड लगकर बुखार होता है अक्सर करके बध प-  
 कती ही है।

**चिकित्सा**—बेखेदोंगा-पहली मरक्या में जब बहुत तक-  
 छीफ और चपका हो और गाठ छाब रगत की हो,  
 और उस में प्रदाह होता हो दिया जाता है। मरक्यूरियस  
 आयोड-जब यद् बहुत फडी हो तब देना चाहिये। हीपरसबफर  
 यद् पफ उठने पर और पारे का र्शप रहने पर। भारसेनिक  
 आयोड जब गाठ कडी, बहुत सूजग, और पफने पर आजाता है  
 तब देना चाहिये इस दगाई से यद् पैठ भी आती है हीपर और  
 साइलेशिया घाब होने पर भी दिये जाते हैं सर पड जाने के  
 उपक्रम होने पर साइलेशिया १२ क्रम बहुत लाभ पहुचाता है।

**कारपनीमैक्सिस**—गाठ फडी रहने से यह देनी चाहिये।

**संहकारी उपाय**—यद् होने पर शुरू से ही एकाग्र  
 स्थान और विराम बहुत आवश्यक है, पेसी मरक्या में थोडा  
 घूमना भी बडा नुकसान करता है। यद् जब बढने लगे तब  
 धराधर गर्म पुल्टिल खगाते रहना चाहिये। यद् मक्सर ही  
 पकती है बैठती नहीं पफ उठने पर मक्सर मे मवाद नि-  
 फलवा देना बहुत आवश्यक है। जब तक घाब पूरे तौर  
 से न सूख जाय तब तक चारपाई स न उठना चाहिये।  
 थोडार घाब रहने पर पैदल चखने से ही माली हो जाती  
 है ( सर पड जाती है )। माली होने से रोग बहुत कुछ  
 दुःसाध्य हो जाते हैं।

## ५० वात ( गठिया )

**लक्षण**—गांठर में दर्द, पीडित स्थान बहुत कडा और कु-  
 फामे में बहुत दर्द पैदा हो इस के साथ ठंड या कपकपी  
 के साथ खुषार आता हो, शरीर का उच्चाप बहुत ज्यादा हो

जाता है, तकलीफ की जगह में काटने और सुई चुमाने का सा दर्द मालूम होता है, परिपाक यंत्र की खराबी, शरीर के पसीने में खटाई की सी घास, बहुत प्यास, थोड़ा पेशाब इत्यादि घात के लक्षण हैं। मेंह में बहुत भीगने से तथा गीबे कपड़े इत्यादि ज्यादा देर तक पहनने से अक्सर ही यह रोग उत्पन्न हो जाता है। घाम रोग होने पर हृतपियड की यानी दिल की पीड़ा उत्पन्न हो सकती है, ऐसा होने से रोग सा घातिक हो जाता है, इसलिये बीमारी की हालत में हमेशा दिख (Heart) की परीक्षा करना उचित है।

(१) नई गठिया

**चिकित्सा—एकौनाइट—**बीमारी की शुरू की अवस्था में दी जाती है, बहुत खुन्नार चक्का मारने की तकलीफ रात में बड़े जियादा होना, जोड़ों पर सूजन, और खाल रंग हो जाना, तकलीफ से रोगी चिछावे, रोवे, और बेचैन हो, बहुत प्यास लगे, बहुत डर और मन की चिन्ता होने की हालत में दी जाती है।

**बेलेडोना—**मस्तिष्क में खून का ज्यादा होना, मुह और भाखे खाल रंग, तकलीफ की जगह बहुत सूजी हुई और लाल रंग की, नींव का न भाना, इत्यादि हालत में दिया जाता है। **घ्राइयोनिया—**छुरी से काटने या सुई चुमाने का सा दर्द पेटों में होना, सूजाहुआ स्थान अमकदार हो, जरा सुकाने से तकलीफ का बहुत घट जाना, खकित दर्द रहने पर भी कमीर बेचैनी के साथ सुकाना पडना है। शाम को दर्द का घटना और पेट में गडबड इत्यादि हालत में दिया जाता है।

मरक्यूरियससख - जब किसी बड़े जोड़ में दर्द हो बहुत पसीना आने पर, पसीना आने से कुछ आराम ग मासूम हो, और रातमें ज़ियादा तकलीफ बढ़ने की हालत में यह दवा दी जाती है।

पलसटिखा - अगर एक जगह से दूसरी जगह तकलीफ जाती हुई मासूम हो, स्त्रियों के लिये यह बहुत उपकारी है यदि मासिक धर्म की फॉर गड़बड़ होतो यह दवा दी जाती है। और तकलीफ रात में बढ़ती हो और शरीर उधारने और ठंडा जख पीने से तकलीफ कम होनी होतो यह दवा दी जाती है।

रसटफन - अगर तकलीफ की जगह कड़ी होजाय, विभाम की हालत में भावहवा बदलन में और पहल मुकाने में तकलीफ बढ़े और धीरे धीरे मुकाने और सेकने से तकलीफ कम होतो यह दवा देनी चाहिये।

जोड़ में गठिया और सूजन होने से - बेखेडोगो बायोनिवा, कौलचीकम, और कार्बोपोडियम देना चाहिये। तकलीफ की जगह टेढ़ी और कड़ी होजाये तो कौस्टीकम, कैकेसिस, सखफर, रसटफस, और सीपिया देना चाहिये। गठिया के साथ पक्षाघातमें आयना, रसटफस, कौकूलन। गर्मी में कम होने पर - रसटफस, कौस्टीकम, कार्बोपोडियम, मरक्यूरियस, सखफर देना चाहिये। ठंडी बीज खगाने से आराम होता होतो पलसटिखा देना चाहिये।

छानी पीठ इत्यादि जगहों में गठिया होने से आर्मिका, मरक्यूरियस, गफन, और रसटफन देना चाहिये। अगर बगल के दर्द में रेगफूलस, तथा, पहुचे और अंगुलीयों के जोड़ों के दर्द में कौलो फारखम देना चाहिये। बड़ी हड्डियों के ऊपर खास मास इत्यादि में दर्द होतो मैजेरियम, और दाहिनी बगल में दर्द होतो कैकेसिस।

शाम के बख दर्द बढ़े तो पलसटिखा, रसटफस और आधी-रात के पहले दर्द बढ़े तो आर्बोनिवा देना चाहिये।

भाभीरात के पीछे दर्द बढ़े तो आर्सेनिक, मरक्यूरियस, सबफर, और थूजा दिया जाता है। संधरे के करीब दर्द बढ़े हातो काबोकार्ब, नक्स, एसटक्स और थूजा दिया जाता है। गर्मी छानने से दर्द बढ़े तो आगोनिया, पखसटीका और थूजा दिया जाता है। आतशक, पारे तथा सुजाक के दोष से जो गठिया हो तो वह कुछ बुःसाध्य होती है। क्योंकि शरीर में मिछे हुए उस दोष को अलग न किया जाय तब तक गठिया आराम नहीं होती। पारे के दोष से गठिया होतो कारबोवैजीटेबिलिस, चायना, लाइकोपोडियम, सबफर, होपर, और कैफिस दिया जाता है।

सुजाक के दोष से गठिया होतो क्लोमेटिन, थूजा, लाइकोपोडियम और मरक्यूरियस दिया जाता है।

सहकारी उपाय—बहुत उष्ण और सूजन और तकलीफ रहे तो गर्म पानी से या गर्म पानी में गार्निका मिलाकर स्नान से फायदा होता है। बाँसुरेत की चोटली से स्नान भी अच्छा है। एसटक्स या आर्निका जीमीमेन्ट की माखिश करने से फायदा देखा गया है। धारली, माधुना, अरारोट इत्यादि हलका पथ्य देना चाहिये। इसके बाद धारे २ पुष्टि कारक पथ्य दिया जाता है। रोगी को थोड़ा आराम होने पर ही टहलना चाहिये। गर्म गठिया के सब लक्षण अक्षेजांष और बीमारी पुरानी पड़कर स्थल होजाय तो उस जगह को गुनगुने नमक के पानी से धोकर एसटक्स जीमीमेन्ट की माखिश करना उचित है।

## ( २ ) पुरानी गठिया

जोड़ फटे पड़ जाय, और फूँस जाय, अक्सर छुटनों में दर्द हो, और जोड़ बंध होजाय और अवनसके और पैर अक्सर सुल जाय।

**चिकित्सा**—रक्तप्लव—पीड़ित स्थान कडे और पुपुंख हो जाय, और कुछ दर स्थिर रखने में तकलीफ घटे, क्षिषाघट और चीरने का मा दर्द हो तो देना चाहिये। सखफर—पुरानी गठिया और शरीर में खुजली घटे और तकलीफ में किसी से आराम न हा तो हो जाती है। यदि मा बाप के गठिया घूरे हो और उस के कारण सन्तान रोग प्रस्त हो तो भी यह दवा देनी चाहिये।

**कौलोफाइलम**—बच्च दानो में पीडा हो, दद घूमता फिरता रह, छोटेरे भाडों में दद, अगली में दद, और हाथ भी मुट्टी न लगती हो तो देना चाहिये।

**कौस्टिकम**—जोड़ न मुडता हो, मनके से आराम मिलना, हो ठही दवा रो दर्द घटना हा और आडग को जी न आहना हो तथा शाम का दद गढता हो हाथ माथे तक गहों ठठाया जाय, नीचे के भाग बहुत दुयख और घे वस माछूम हो तो देना चाहिये।

**कौलाभिकम**—यह बहुत जरूरी दवा है रक्तप्लव और सखफर के पीछ ही जाती है दडिया के ऊपर के मास काज और जोडो क भीतर की फिड्डी के ऊपर इस का दमूग नसर पडता है।

**त्रायोनिया**—मरफ्यूरिंगसौल, पलमटिना वमून जरूरी दवा है ( नई गठिया देरो )

**कैबकेरिया**—जख में खडा रहन में जो गठिया हो।

जोडों के भीतर टाटर की आवाज आती हा दोनो पैरों में बहुत पसीना आता हो और ठड रहते हों। ( शडमाका इसे कठमाका भी कहते हैं गळे में फुंसी सी हो जाती है ) क



दोप से जो गठिया हा और अमाघस्या घ पूर्णमा मे दृढ़ बढ़ता हो तो यह दवाई देनी चाहिये ।

लैफोसिस— नीचे के अङ्गो में गठिया, नींद आतेही बतें शुरू हो, तकलीफ की जगह टेढ़ी होजाय और मुक मुड न सके खुली हवा और घसांती हवा में नींद के पीछे और शाम के घक दृढ़ बढें तो यह दवा देनी चाहिये ।

पुरानी गठिया में इसके साथ घारी २ से हीपर दिया जाय तो बहुत फायदा करना है ।

सहकारी उपाय - गर्म और सूखे मफान में रहना चाहिये सर्दी और ठडी हवा से बचने के लिये जाड़े और घरसात में फलालेन या और कोई गर्म कपडा पहनना चाहिये । आर्निफा, व रसटफक जीर्नीगेन्ट माखिश करने से तकलीफ कम होती है । असख सरसों का तेख माखिश करने से भी फायदा देखा गया है । भोजन हलका और ताफतवर देना जरूरी है ।

## ५१ - छाती में जलन ।

लक्षणा—छाती में जलन, अजीर्ण का एक प्रधान लक्षण है । इससे पेट में लगाकर गले तक जलन होती है और कमी २ उन्टी भी होजाती है ।

चिकित्सा—कैलकेनिया, कार्क, पुराने अम्ल रोग में इसका देना बहुत अच्छा है [ भोजन अच्छी तरह परिपाक न होने से कलेजा भारी और सट्टी २ टफार भाना इसादि को अम्ल रोग कहते हैं ] दिन में २ दफे दवाई खाने से अम्ल रोग ठीक होता है ।

नुक्सवोमीफा - सय तरह की गानूखी शिफापतों में दीजाती है । यह सखकर - के माघ घारी घारी से भी व्यवहार में आती है

सलफर; बहुत दिनों की पुगती पीडा होना से नक्षत्रमौमीका के साथ घारी २ स दीजागी है ।

पक्षसेटिखा-मद ( दृष्टी के भीतर एक तरह का सफर पदार्थ रहता है ) और तेज का पदापे खाने से अजीर्ण और छाती में जखम होने पर दीजागी है। मुह में कड़वापन और सदा और दुर्गंध रहने पर भी देते हैं । प्रारयोनिषा, खाने के बाद, पेसा मालूम हो कि पेट में पत्थर रफसा है, कदजियत, सिर में दर्द, जी मिचलाना और पित्त के दर्द में दीजाती ।

खट्टोडकाशमे--कैलकेरिया - फाष - कैमोमिला-घापना खाई कोपोडियम और मफसघानिका दिया जाता है ।

अजीर्ण के कारण खाई हुई चीज ओ गले तक निकल आगी है उसमें प्रायोनिषा, इगमेशिया- सखफर- और खैकोसिस देते हैं ।

**सहकारी उपाय- अजीर्ण देखो ।**

## ५२ - बरसा

लक्षणा--बड़ा होने से फोड़ा और छोटा होने से ब्रण कहा जाता है । पहले जलन, खास रग, और बर्द के पीछे पीप पैदा हाकर मुंह होजाता है, कभी अपने आप फट जाता है, कभी नदतर से थिरना पडता है, खून सराय होने से घषों के मुह और माघे पर भफसर देखा जाता है ।

चिकिरसा - देखेहोना - फुंसी अब पहले छाखरग की, बर्द के साथ फूल उठे यानी राच पडने के पहले से ही यह बघाई नीचे क्रम में दिन में कई बफे देने से निश्चय फायदा होता है ।

भार्निका - होट भ्रांश के पलक इत्यादि फामल स्थानों में फुंसी होजावे और उनमें तेज बर्द रहे तो यह बघाई फायदेमद

है। हीपर-सखफर-वाध पड़ने के उपरान्त यह द्रवा देने चाहिये  
 मरक्यूरियस - इसको पचने देने से फुन्सी को पकने  
 नहीं देता और पीछे देने से मवाद को गिफाछ देता है। घगछ,  
 गला, राम इत्यादि की गाठों के पकने को यह अत्यन्त लाभ  
 दायक है सार्खशिया इसको पुगगी द्वाजन मे देना चाहिये।

ज्यादातर, मर पड़जाने पर, हमेशा फोडा होते होते सख  
 फर देने से खून साफ होजाना है। जो बहुत धीरे २ पको तो हीपर  
 और जखन, दर्व के साथ फोडा हो तो घेलेडोना मयवा मरक्यूरि-  
 यम देना चाहिये।

जघानी की उमर में मुह पर फुन्सी होकर मुह मफसर बहुत  
 ही कुरूप होजाना है। कोई २ फुन्सी पडी होजाती है। और उस में  
 दर्द होने से सखी तकलीफ होती है। मुह के ऊपर की फुंसियों को  
 आगम करने के लिये कारबोपैजीटैमिखिम, हीपर, कैलफेरिया,  
 और सखफर अच्छी दवाई है। जघानी की उमर में इन्फ्री के अत्या  
 चार स फोडा फुसी होगा कैलफेरिया अच्छी दवाई है।

सहकारी उपाय—पहले फुन्सी गेछाखरग हो और दर्द होता ठडे  
 पानी की पट्टी बांधनी चाहिये। पको की टालत दामे पर तीसी  
 ( यानी अजम्बी की पुल्टिम, बाधनी चाहिये जो अपने आपन फूटे  
 तो मशर से खार देने चाहिये। जो हमेशा फोडा फुन्सी निकलते  
 होने आचारम स्वास्थ्य संपधी नियमों का अच्छी तरह प्रति  
 पालन करना चाहिये।

### ५३ - दिमाग में खून अधिक होना

लक्षण-मन की अगततास मुह और गलेकी रम और रंगे खून  
 से भरी हुए शीमनी दो सय शरीरकी रंगे फडकनी होंगीद विशेष

मालूम होगी तो शिरमें दर्द, जानने से शय्या सिरगीचा करने से शिर में दर्द की जियादती मालूम होती हो, काम में सन्न सन्न की भाषाज मालूम होना इत्यादि इस रोग के लक्षण हैं जो बहुत पुष्टिकारक मोजन करते हैं और कभी मिहमत नहीं करते उनका अफसर यह रोग होता है।

**चिकित्सा—पेकोनाइट—** शिर के दर्द को देखो ।

**बेलेडॉना—**शिर के दर्द को देखो । अगर जरा पैर रखने से या थोड़ा चलने से, थोड़ा शब्द सुनने से, शय्या रो-शनी देखने से, शय्या शिर नीचा करने से पीडा बढ़ तो यह दवा देनी चाहिये ।

**नक्सयोमीका—**गर्जित शय्या कष्ट रहने से दी जाती है जो लोग हमेशा घर में बैठ कर काम करते हैं उंगों के लिये भी उपयोगी है, शय्या की दवा से सधेरे शय्या मोजन करने बाद पीडा बढ़ तो यह औषधि देनी चाहिये । गोपीयम, अश्व-सफ खून का बढ़ आना शिर का भारीपन काम में सन्न २ होना शिर के भीतर लपका मालूम होगा प्यास, मुँह का सूखापन, अज्ञानता इत्यादि को फायदा करती है । मज्ज घन्द होने के कारण रोग की उत्पत्ति होने से यह दवा बहुत उपयोगी है ।

**ग्लोनाइट—**माथे में खून का आना शिर में दर्द और माथे के भीतर छपकन को फायदा करती है । शय्या पीने वाले लोगों के लिये नक्सयोमीका, पखसेटिखा, गोपीयम और कलकेरिया बहुत उपयोगी है । जयामी के शुरू में लड-कियोंके लिये पकोनाइट, बेलेडॉना, पखसेटिखा फायदा करती है । दात निकलने के वक्त धर्यों के लिये पकोनाइट, कै-मोमिखा, कौफिया, और जलसिमीम देना चाहिए ।

बहुत भारी खुश्की होने के कारण नाथे में खून की जियादती के लिये कौफिया, और गोपीयम देना चाहिये। भय के कारण नाथे में खून की जियादती होने के लिये गोपीयम देना चाहिये प्रथम क्रोध से रोग उत्पन्न हो तो कैमोमिला उपयोगी है।

गिरने और चोट लगने से हो तो आर्निका और मरक्यू रियस देना चाहिये।

**सहकारी उपाय**—प्रातः काल उठ कर साफ हवा में मामूली कमरत, और ठंडे पानी से स्नान, और ठंडा जल पीना जरूरी है। सब तरह की गर्म चीज खाना मना है।

हर रोज सच्चा के समय ठंडे पानी में पैर डुबाकर पीछे खूब जोर से मल देना चाहिये।

## ५४।—सिर का घूमना

इस रोग में पेसा गालूम होता है कि चारों तरफ सब चीजे घूमती है अथवा रोगी स्वयं घूमता है।

पाकाशय का दोष, इन्द्रियों का अत्याचार, गशीली चीजों का सेवन, रात में जागना, दिमाग में बहुत खून भरना, अथवा कम होना, और मस्तक में चोट लगने इत्यादि कारण से यह रोग उत्पन्न होता है। इस रोग की उत्पत्ति कई कारणों से होती है इस लिये पहले इस का कारण निश्चय कर पीछे उस के अनुसार चिकित्सा करने से बहुत जल्द फायदा होता है।

(१) दिमाग में जियादा खून की वजह से

**लक्षण**—दिमाग में जियादा खून इकट्ठा हो जान का प  
याग देखो ।

**चिकित्सा**—एफोनाइट, और घिलेडोंना धारो से दिया  
जाता है । विशेष करके चान्पाई से उठने में अथवा सिर को  
नीचे स ऊपर उठाने में सिर घूमने लगे और मुह बाब रंग  
का हो जाय ।

**घेलेडोंना**—एफोनाइट देखा ॥ यदि अज्ञानता शराबी की त-  
रह पैरो का रखना दिमाग में खून का भरजाना और बहुत  
योक्त मालुम पढना ।

**नफसयोगीका**—अगर खाने के समय अथवा खाने के बाद बाहर  
हवा में घूमने के वक्त मूछां सी मालुम हो, और सिर में मन  
मनाहट होकर एसा मालुम हो कि नींद आयेगी तब यह दवा  
दी जाती है अगर चक्कर खाकर धीमार गिर पड़े तो बेले-  
डोंना, पलमेटिका और रस्टफस दवा चाहिये ।

## (२) अजीर्ण के कारण

**लक्षण**—सिर घूमना, नींद सी नागा, विशेष कर मो-  
जन के बाद ही सिर का भारी हाना शिर में दर्द जीभ मैखी  
पेट फुला हुआ, खाने की अरुचि और उल्टी होना ।

**चिकित्सा**—अक्सयोगीका—इस से पहले देखो ।

बहुत खानेअथवा नशीबी चीजों के सेवन से रोग हो तो दी-  
जानी है । पलमेटिका बहुत घी का पकमान खाने से रोग हुआ हो  
तो देना चाहिये ।

बाहर हवा में फावदा मालुम होता हो और सायर जी

मिथछाता हो अथवा गशा सा गार्फिक गालुम होता हो तो यह  
वर्गाई हेनी चाहिये ।

**सहकारी उपाय**—पेट में गडबड रह तो उपवास करना  
चाहिये पीछे हलका पथ्य लेना चाहिये पीने को ठंडा पानी  
देना चाहिये ।

### (३) दुर्बलता के सबब

**चिकित्सा**—वायना अच्छी दवा है । सुबह के एक सिर  
घूमने से कैलकेरिया, नफसवामीका, रसटफस, फासफरस देना  
चाहिये । घाम के एक सिर घूमता हो तो प्लेडोना पलसे-  
टिखा, सीपिया, लैकेसिस फायदा करती है ।

सोन के एक अगर सिर घूमता हो तो पलसेटिखा, भार-  
सैनिक दिया जाता है ।

उठन के एक होतो नफसवामीका, रसटफस, लैकेसिस  
उपयोगी हैं ।

घूमने के एक होतो पलसेटिखा, लाइकोपोडियम फासफरस,  
और कैलकेरिया देना चाहिये । सिर घूमने से कैलकेरिया भार-  
योमिया और सीपिया फायदा करता है ।

साखी पेट रहने से बड़े हो ता फासफरस, कैलकेरिया और  
वायना दिया जाता है ।

भोजन करने के बाद होतो कैलकेरिया, नफस, और फासफरस ।

नींद से जगने पर होतो फासफरस, सीपिया और नफस ।

खलते से भाराम माळूम होतो रसटफस और पलसेटिखा ।

दिभाग करने से भाराम माळूम होतो नफस और पिछोडोना ।

सिर घुगने से नफस, इपीका, आरसेनिक, पलसटीका ।

सिर घूम कर सामने गिर पड़े तो मैकाइटिन, सिलियूटा, स्पाईजीडिया ।

पीछे गिरे तो एसट्रफम, नफस और प्राइयोगिया ।

वगल में हो तो साइबेसिया, सलफर और इपीका देना चाहिये ।

सहकारी उपाय—गौर फाई रोग न होतो पुष्टि कारक पानी ताकठ घर चीठें देनी चाहिये ।

## ५५ सिर में दर्द Headache

लक्षण—सिर में दर्द होने में चाहे कुछ सिर में हो अथवा किमी हिस्से में हो उस को सिरका दर्द कहते हैं । यह सर्दी, सिर में खून की विशयता, अजीगा, स्नायु विधान की गड़बड़ से, मागविक शिक्ता, फडन, अजीग्य थकापट इत्यादि कारणों से होता है । यह अकसर शरीर में प्रयत्न किये हुए किसी रोग का उपसर्ग मात्र है ।

### १—सर्दी के कारण ।

लक्षण—सिर में तेज दर्द—भक्तर सयरे के एक कम, सध्या के समय ज्वाला, आंखों में पानी भरजाना, छींक, नाक में



कैमोमिखा - ठंडी हवा खगकर अथवा पसीना टकने के कारण सिर में दर्द होने से देना चाहिये ।

मरक्यूरियस सौख-हमेशा कौंक माना, नाक से पानी गिरना, ठंड लगना, रात में पसीना आना, हाथ पैरों में दर्द इत्यादि हावतों में दिया जाता है ॥

नफसघोमिका - माथे में भारीपन, और नाक बंद मालूम होने से देना चाहिये । सत्रेरे पठला कफ निकलना शाम और रात में सूखा कफ निकलना, मुह सूखा हुआ और ज्यादा प्यास इत्यादि हावतों में रहे तो उपकारी है ।

सहकारी उपाय - सर्दी का बुखार देखो ।

## २ सिर में अधिक खून होने से

खच्चण - माथे में खून भरा हुआ और भारी मालूम होना, सिर घूमना, विशेष कर नीचा करने से । सिर के भीतर उपकन-मालूम होना, माथे का उस्ताप, गले की सब रगों-का फड़कना, सिर दिखाने या झुकाने से या छेदने से दर्द का बढ आना ।

चिकित्सा- पेकोनाइट - मुह की रगत छाब और मूजा हुआ मालूम होना बरै इतना ज्यादा होकि बेहोश कर देता हो ।

पेलेडोना - दर्द सबत मालूम हो तो पेकोनाइट के साथ पारी बारी से दिया जाता है । सिर में उपकन, सिर में खून अधिक, माथे के भीतर सामान्य शब्द मालूम होना, दिखने झुकने में और रोशनी में कष्ट मालूम होना ।

माइयोमिया सिर दिखाने स पेसा दर्द हो कि सिर फटा जाता हो, बहुत उपकन, पैदल खचने से, विशेष कर भाव खोखने से, और दिखने झुकने से दर्द होता है ।

जैलसीमिमम - सिर में भागपन, विशेष कर गरदन और सिरके पीछे की तरफ, - दर्द कब तक फैला हुआ, ऊचे तकिये का सहारा देने से दर्द कम होना। भाँसों से धुँपवा दीखना, सिर धूमना, भाँधी महानता, और सब शरीर की दुर्बलता और तन्धुरुस्ती धराय माळूम होने पर यह देने से खूब फायदा करता है।

नक्सबोमिका-सिरमें दर्द - सिरमें बोझता माळूम हो कि सिर फटजायेगा-ब्रयथा भाँसों के ऊपर भयानक दर्द सिर हिखने से और खाँसने में ज्यादा दर्द माळूम होगा-पित्त, और खट्टी उन्टी का होना। बहुत लगीखी खीजोंका इस्तेमाख, घर में बैठकर बहुत काम करना मानसिक परिश्रम के सबय होने से देगा चाहिये- दर्द सुबह के घक और खुली हुई जगह में बढ़ता होतो यह धवा फायदा करते हैं। भोपियम—महानता माळूम होने से देनी चाहिये

सहकारी उपाय—सब तरह की उच्छेजना बन्द करना चाहिये मोजन इत्यादि बातों में विशेष ध्यान रखना चाहिये—मांस और धाराब बिबकूख छोड़ देना चाहिये।

### ३ कब्ज अथवा अजीर्ण के कारण।

लक्षण—जीम मैली, मुँह का बुरा स्वाद, भूख नलगना, जी मिचलाना, कै होना, बद् के साथ २ उन्टी जियादा होना।

चिकित्सा आइयोमिया—बाहि मल कडा पड गया हो और निकलने में बहुत तकलीफ देना होतो बहुत उपकारो है।

इपीकाफ—बहुत जी मिचलान से घा कै होने में बहुत उपकारी है।

नक्सबोमिका—बहुत कब्ज। पाखाने जाने में दस्त। का नहोना मयबा बहुत सिर में दर्द होना। (Coffee) (कहवा) तमाप्

अथवा नशीली चीजों के सेवन करने से होता बहुत फायदा करता है।

**भौगियम-** अगर बहुत दिन से वस्तु बन्द होगया हो और दस्त की विलकुल दाउन नहो और उसके साथ साथ सिर में भारापन हो तो दवा चाहिये।

**पलसटिजा -** मजीर्ण होने के साथ यदि सिर के दर्द का कोई संबंध रहे और बहुत तेल या घी की चीज खागे से दर्द हुआ होवे, तीसरे पहर या सध्या के वक्त दर्द की ज्यादाती, सुबह के वक्त मुह का स्वाद बिगड जाये तो देना चाहिये।

**सहकारी उपाय -** मजीर्ण के कारण सिर में दर्द होने से साथ में पहले गाउन आदि का ठीक नियम करना चाहिये। बहुत तेल की अथवा भारी या न पचने वाली चीजों का ब्रुडई। हडका मोजा करना चाहिये - बाहर हवा में सहज कमरत करना बहुत अच्छा है।

## ४ - बाहरी सब्बों से

**चिकित्सा-**मार्मिका-गिरने से चोटलगे से, घाय होने से, अथवा बहुत गिहनत करे से जो दर्द हो तो देना चाहिये।

**आइयोमिया -** सर्दी या गरमी लगने से वायु पत्थिंगे होने से वा बहुत शरीर गरम होकर जो सिरमें दर्द हो तो देना चाहिये।

**नफसयोगिका-**गमकी बिस्ता, घर में बैठकर बहुत काम करना अथवा बहुत दिन किसी रोगी क पास रहकर उसकी सेवा करने से जो सिरमें दर्द हो तो देना चाहिये।

## ५ - मानसिक विस्तारके कारण।

**चिकित्सा—**कैमोगिला - गुस्सा मथवा उन्नेजना होने के कारण दर्द होने देना चाहिये ।

**भोपियम -** मथके कारण जो सिरमें दर्द हो तो फायदा करता है ।

**रामशिया -** मासिक रंज वा दुःख मथवा दिख दूट जाने से दर्द होने देना चाहिये

### ६ - स्नायविक विकार से सिर म दर्द ।

**लक्षण -** इसका खान लक्षण यह है कि यह कभी कभी होगा है - दर्द सिरके एक तरफ मथवा किन्ही खान जगह जम कर वा - दर्द की जगह दाघने में तफ्तीक मासूहा, गेसगी, बाधाज, और मथकी चिन्ता बरदाइन न होती हो, सिर दर्द के साथ मकसर पिच मथवा कफ की उल्टी होगी रहे ।

**चिकित्सा—**बेबेछोना—सिर में खून की ज्यादाती के सिर दर्द का घयान बेबो—

**प्राइवागिया—**चयका चले कासा दर्द—ज्यादातर जो एक तरफ हा—और टहलने में और गरम रथा लगन से दर्द पड़े, घेनों भांखों में इनका दर्द हो कि छुर न जाती हो ।

**खाना—**खियों के मासिक भां के समय बहुत खून गिरने से, मथवा बहुत दिना तक ठहरना होने—मथवा और किसी तरह खियों क खून गिरने से, और पुराना उबरामथ रहने में जो दर्द हा तो देना चाहिये—दर्द मासिक चिन्ता के कारण घटना—मथवा बहुत इन्दि के मस्याकार क कारण सिर के पीछे के हिस्से में दर्द हो तो यह ध्याई देनी चाहिये ।

**कौफिया—**दर्द बहुत ज्यादा होने से तथा सिर क एक

तरफ ठहरे रहने पर उस जगह ऐसा मालूम होता हो कि सुभा सुभाया जाता है, माथा सिर दर्द होना, उस के साथ सामान्य उत्तेजना से बिल कापना, रात में अनिद्रा हो तो बहुत उपयोगी है।

जखसोमीनम—भाजों के ऊपर और सिर में दर्द रहने से, सिर में दर्द होने के पहले भाजों से कम दीखना—दर्द सिर के पीछे के तरफ हो—ज्यादा, सब चीजें हो दीखती हों, दर्द होने पर फान के भीतर शब्द सुनाई देता हो तो देना चाहिये—

इगोसिया—सिर में ऐसा मालूम होता हो कि सुरं सुभाये जाते हैं—नाक के घासे में बहुत दर्द—रुपान वा अन्य घस्या परिवर्तन करने से कुछ भाराम मालुम होना—सोत वक्त दर्द कम होना ॥ दर्द आठवे दिन १५ दिन पीछे अथवा १ महीने बाद हो तो देना चाहिये।

नफसघोमीका—खून की जियादती होने का बयान देना।

पलमेटिका—बाहर हवा में दर्द कम मालुम हो, और घर में रहने से, खेतने से अथवा शाम के वक्त दर्द बढ़ता हो, सिर का फटना मालुम होना हो तो देना चाहिये।

सीपिया—औरतों के खिये सास कर उन के खिये जिन को कि मासिक धर्म की गड़बड़ रहती हो उन के लिये बहुत फायदे मन्द है, सिर में कोई चीज सुगाने का सा दर्द मालुम हो, हर रोज एक ही वक्त सिर में दर्द होता हो, उल्टी अथवा जी मिचखाता हो तो यह दवाई बहुत फायदा करती है ॥

सांगुनेरिया—दर्द इतना जियादा हो कि सिर को जोर

में जमीन में दाँव के रखना पड़ता हो, सवेरे दर्द शुरू हो  
 ठो, दिन भर बढ़ता हो, और शाम तक रहता हो, दाहिने  
 तरफ दर्द जियादा हो, और सोने से दर्द कम होता हं  
 तो देनी चाहिये।

स्पाईजीलिया-- मसूदा दर्द, आंख तक फैला हुआ। सि  
 दिलाने से दर्द, बढ़ता हो सूर्य के साथ साथ दर्द का बढ़ना औ  
 काम होना, चिन्ता, शब्द इत्यादि से दर्द की जियादती, और हाथों  
 से कम रहने में दी जाती है।

स्पाईजेसिया-- स्नायुविक यकाघट से शिर में दर्द, गर्दन में  
 दर्द शुरू हो, और सिर के ऊपर तक पहुँचे, और पीछे भाग  
 के ऊपर तक आ जाये, और सेकने से कम हो, लेकिन दाव  
 ने से नहीं। सिर के घाल उड़ जाय तो यह दवा उपयोगी है,

सहकारी उपाय-- स्नायविक-- सिर दर्द के लिये भो-  
 जम का नियम, ठंडे जल से सहाना हेसियत के माफिक  
 घोंडे पर बैठना बहुत अच्छा है, जो सिर में दर्द कमी हो  
 तो बहुत मुदिकल से आराम होता है।

## ५६ मुख क्षत

(छाले)

क्षत्राण-- मुँह-गाँव-जीम इत्यादि में छाले होते हैं, पहले  
 पहले छाले बकसर ही सफेद रगत के रहते हैं पेट में ग-  
 उबड़ रहने की वजह से बकसर छाले हुआ करते हैं।

चिकित्सा-- बोरेक्स ( सुहागा ) बच्चों के मुँह में छाले होने  
 पर यह दवाई बहुत कामदा करती है, ४ ग्राम ग्लिसरिन

और एक भावस पागी में ४ ग्रेग सुहागा मिलाकर उस से मुह के छालों को भोने से बहुत फायदा मालूम होता है—जब इस दवा से फायदा नहीं तो दूसरी दवा खगानी चाहिये ।

**नफसघोभीका**—मसूडा सूजा हुआ और उस में दर्द होता हो, छालों में घश्घ् जाती हो, मुह मसूडा, जीभ, और तालु भादि के छालों में दर्द होता हो, लार में खून मिला हुआ गिरता हो और कब्ज हो तो यह दवा देनी उचित है ।

**मक्यूरियस**—मुह से लार गिरना, उदरामय, मुह में, दुर्गन्ध और मुह में छालों में घाय सफेद से रहते हों तो देना चाहिये । तथा दांत हिलने हों मसूडों में खुजली चखनी हो और जखन होनी हो । और जीभ सफेद और कड़ी हो तो भी यह दवा बहुत उपकार करती है ।

**आर्सेनिक**—मुह में घश्घ्, दुर्गन्ध फर देने वाला उदरामय असह्यत दुर्गन्धता, जीभ के किनारों में छाले और उन में बहुत दर्द होने पर दिया जाता है ।

**फांशो वेजीटेबलिस**— यदि आर्सेनिक से फायदा नहीं भयया थोडा फायदा होतो देना चाहिये ।

**गार्ड्रिक एसिड**— मुह के छालों के लिये बहुत उपयोगी औषध है । मसूडे सफेद हों, और सूजे हुये हों, उनमें से खून गिरता हो, मुहसे दुर्गन्ध भाकी हो और लार गिरती होतो देना

रुका गया हो और फिर फायदा नहोता हो तो धीरे २ में यह रेफ रेफ मात्रा देना माघदयक है। मुँह में छांछे हों और उसके साथ २ शरीर में और फोटा फुम्सी भी होतो यह दवा विशेष उपयोगी है।

**सहकारी उपाय**—साफ कपड़े पहनना बहुत भारी माघदयक है। दूधके और सहज में पचने वाला मोजन करना चाहिये। मुँह में छांछे हों तो मछली खाना अच्छा गदी है।

५७।—मूर्च्छागत वायू (एक तरह का भिरगी रोग)।  
( Hysteriae )

**लक्षण**—यह रोग प्राय स्त्रियों को होता है, रोगी चि-छाते चिछाते अथवा बकते बकते बेहोश हो जाता है—बाह्य मोक्षत्रा है, हाथ पैर इधर उधर पटकता है और पेटता है, मुँह से झाग निकलते हैं और बौख बढ़ हो जाता है, अथवा कभी कभी मूर्च्छा धीरे धीरे होकर अज्ञानता को प्राप्त होता है।

**चिकित्सा**—कैम्फर—मूर्च्छा के समय यह दवा विशेष-उपकार करती है, विशेष कर यदि शरीर ठंडा पड़ गया हो तो दो तीन बूँद कैम्फर यागी अरक कपूर चीनी के साथ, अथवा दो गोली पट्टह पीस मिर्च के अन्तर से मूर्च्छा के समय देना चाहिये।

**मस्कस**—मूर्च्छा के समय कैम्फर के बदले इस का व्यवहार किया जाता है। इस को खाने को गी देते हैं। और नाक



के पास रख कर सुघाते भी हैं ।

दूसरे समय- -

इग्नेशिया-पेसा माछूम होता हो कि गले के भीतर से कुछ उठना है या निकलना है—स्नास का घब होना, गला घब सा होना और निगलने में कष्ट माछूम हो तो यह दवा दी जाती है- -रोगी घबड़ाया हुआ, दुःखी और दुःख के कारण चुप रहना हो ता भी यह फायदा करती है ।

नफसघोमीका---रात में ३ मजे वाद गीद्व न आती हो बे-किम ५ घजे वाद भोंघे लगे, कम्ज रहता हो, कडवी डकार का आना, पेट फूलना---दुन्नकी आना---सिर में दर्द---पाक-स्थली में तकलीफ आदि रहती हों तो बहुत उपयोगी है । कुछ दिन इस के व्यवहार करने के बाद सबफर दी जाती है

पलसेटिखा--जरायु ( घबे दानी ) में कुछ गडबड रहती हो और ऋतु यानी मासिक भ्रम घब हो गया हो तो यह दवा देना चाहिये ॥ उदरामय, प्यास का न खगना, स्लेष्मा की उ-कटी होना, और जरायु के दर्द में यह उपकारी है--जो स्त्रियां मुलायम प्रकृति की होती हैं, जिन को ऊदर रोना आजाता है, और जो बहुत मोटी होती हैं उन के लिये यह बहुत उपयोगी है । इस क बाद सावाइना और साइलिसिया दिया जाता है ॥

गिरंतर बिता प्रस्न रहो पर रोगी को - इग्नेशिया - नफस घोमिका । विगप रहने पर अर्थात् दुखके कारण वाक वेद होखाने पर पलसेटिखा । इवास कष्ट रहने पर कैलकेरिया और इग्नेशिया । अनिद्रा रहने पर लेलन्मिनम नफस, और इग्नेशिया । बायटे आते होंतो सिफूटा इग्नेशिया । निर में दर्द होतो - इग्नेशिया, प्लाटीना । ऋतु बंधवा अरायु दोष होतो - कोकूबस, इग्नेशिया, पलसेटिखा; प्लाटीना और छीपिया देना चाहिये ।

सहकारी उपाय - उपयुक्त चिन्त को प्रसन्न रखने वाले काम में रोगी के चिन्त को हमेशा लगाये रहना चाहिये - ब्राह्मस्य में रक्षा इस रोग में बिलकुल निषिद्ध है। समय समय पर देश समया और इसके द्वारा मानसिक अवस्था का प्रसन्न रखना बहुत भावश्यक है। सत्य तरह की विद्यासता, उच्छेजता करने वाले खाने के पदार्थ; अथवा मन में विकार खाने वाली पुस्तकों का पढ़ना और गप्प करना बिलकुल निषिद्ध है। जिससे साधारण स्वास्थ्य में कुछ फरक पड़े एसे नियमों पर विशेष ध्यान देना चाहिये। ठंडे पानी से नहाना, निषणित परिश्रम, और साफ हवा इत्यादिक स्वास्थ्य संबंधी नियमों का प्रतिपादन पूरे तौर से करना चाहिये।

मूर्च्छाके समय भय करने का कोई कारण नहीं है, आँखों में मूत्र पर, और छाती पर ठंडे जल के छींटे देने चाहिये और ऊपर खिन्नी दवाइयाँ देना चाहिये - उस वक्त रोगी की बात न मान कर जैसा मुगसिब हो उसी माफिक उसका इलाज करना चाहिये।

हम लोगों के देश में इस बीमारी से ग्रस्त रोगीके लिये ऐसा विश्वास फरलेते हैं कि मूत्रने घर खिया है, और तरह तरह की कुचिकित्सा करते हैं यह बिलकुल झग है।

### ५८ - मूत्रकृच्छता ।

लक्षण - मूत्र पत्र में किसी न किसी रोगके शोथ के कारण यह रोग उत्पन्न होजाता है। मूत्र धार में जखन होना - पथी होजाता अथवा प्रमेह इत्यादि कई प्रकार के रोगों के साथ मूत्र कृच्छता के लक्षण देखने में आते हैं - यह राग यद्यपि दुर्लभ है।

होता है। इससे इतना कष्ट होता है कि जीवन का भी संदेह होसका है। बार बार पेशाब की हाजत होती है परन्तु पेशाब नहीं उतरता है और जो उतरता भी है तो धूँद धूँद करके होता है और बड़े दर्द के साथ उतरता है।

**चिकित्सा** - पेकोनाइट - प्रवाह के लक्षण हों, ठंड लगकर रोग उत्पन्न हुआ होवे, शरीर गरम रहे, भारी प्यास लगती होवे, रोगी भीत और चिन्तित रहता हो, पेशाब की बहुत हाजत लगती हो, और खाब खाब मैला पेशाब होता होतो—यह वषा बहुत फायदा करती है।

**कैफर** - बहुत तकलीफ देने वाली हाजत में हर पंद्रह मिनट के बाद एक एक धूँद साफ चीनी के ऊपर डालकर तीन चार बार देना चाहिये।

**कैथेरिस** - पेशाब बंद होना, पेशाब की बहुत हाजत का लगना उसके साथ अचान और काटने कासा दर्द होना, पेशाब होने के पहले और पीछे भारी दर्द का होना, खून मिखा हुआ पेशाब अथवा कभी कभी धूँद धूँद करके खून का गिरना इत्यादि अवस्थाओं में दिया जाता है।

**नक्सबोमिका** - बहुत तकलीफ देने वाली और बार बार पेशाब की हाजत का होना, लेकिन पेशाब का न उतरना। बहुत शराब पीने आदि कारणों से उत्पन्न हुए मूत्र छल्ले रोग में यह वषा उपयोगी है।

**सखफर** - भ्रंश रोग रहे तो यह देना चाहिये।

**भार्निका** - थोटा लगने में अथवा गिर पड़ने से जो रोग उत्पन्न होवे तो यह वषा फायदा करती है।

छाहकोपोडियम - पेशाब के साथ ईंट का चूर्ण सा मयबा घालू रेत सा मिखा हुआ निकले वा रात में धार धार पेशाब होता हो और दिन में कम होता हो वा खून गिरता हो परन्तु जखन न होती हो तो यह दवा बहुत उपयोगी है ।

मरक्यूरियस - मूत्रस्थली के छूने में दर्द होता हो - पतली धार से मयबा घूब घूब कर पेशाब उतरता हो - पेशाब के साथ खून और राध गिरती हो—खून का पेशाब होता हो, और पेशाब की हाजत सही न जाती हो तो यह दवा बहुत उपयोगी है ।

सहकारी उपाय —पेड़ पर ठहा अख छिड़कने से फायदा मालूम होता है, एक दम ठंडे पानी में डुबकी मारकर नहाना अच्छा है । कभी कभी पेड़ के ऊपर गरम पानी में फलाखैन डबो-कर उससे सेकने से पेशाब का कष्ट निवारण होता है । पथ्य रसीखा और हखका देना उचित है जैसे साधूवामा घासी शरबत इत्यादि ।

### ५६।—रजःस्वल्पता वा ऋतुरोध—

धकाधट, भय, दुःख भादि भायेग, दुर्बलता, ऋतु काळ में ठह लगने इत्यादि कई कारणों में यह रोग उत्पन्न होता है । कभी कभी ऐसा भी होता है कि छडफियों को ऋतुकाळ होजाने पर भी ऋतु आरंभ नहीं होता ।

चिकित्सा—छडफियों को ठीक समय पर ऋतु आरंभ न होतो पक्षसेटिखा और पीछे घापना वा सखफर देना चाहिये ।

पक्षसेटिखा—यह इस रोग की सब से अच्छी दवाई है ।

ऋतु नव होजाना, मयबा थोडा होगा, वखे जनम काभा पेट में

वर्द, मूल कम लगना, उखटी होना, इत्यादिकार्यों में यह धवा दीजाती है।

पेकोनाइट- ठंड लगने से मय, अथवा अज्ञानक और कोई मानसिक आघेग होने से रोग की उत्पत्ति हो और उसके साथ खर रहता होतो यह धवा बहुत उपकारी है यौवमारम में और रक्तप्रधान प्रकृति की स्त्रियों के लिये यह धवाई विशेष उपयोगी है। यह पलसेटिखा के साथ साथ भी धारी धारी से दीजाती है।

आयना - बहुत दुर्बलता के कारण ऋतु बंद हो गया होवे और बहुत खून निकलने वा राध निकलने के बाद यह विशेष उपकारी है। अक्सर बहुत पानी सा रक्त स्राव होवे तो केवल आयना अथवा धारी धारी से आयना और पलसेटिखा देनी चाहिये।

सखफर - इस धवाको पलसेटीखा के साथ धारी धारी से देने से अमरकार दिखलाने वाळा फायदा होता है।

सीपिया - यदि दूधेत प्रदर हो और बुद्धावस्था में बंद होने के समय ऋतु थोडा होता होतो यह धवा देनी चाहिये। खडकियों को प्रथम ऋतु होने में बेर होतो कैबकेरिया - पलसेटिखा और सखफर देना चाहिये।

ऋतु थोडा हाता हो और एक समय में बंद न होता होतो कैबकेरिया, प्राफार्डिस, और पलसेटिखा बहुत फायदा करती है।

सहकारी उपाय-दुर्बलता अथवा खून की कमी के कारण जो ऋतु बंद होजाये तो पथ्यकोतरफ विशेष ध्यान देना चाहिये। यदि गर्भ रहने की सम्भावना होतो कुछ दिन बेसे पित्त और पथ मर्द देना चाहिये। पेहू पर गर्भ पानी का सेक देने से अक्सर फायदा देखा गया है।

## ६०-विच्छीने पर पेशाव कर देना ।

लडकों को यह बहुत बुरी बीमारी होती है । हर जगह इस रोग का ठीक कारण निश्चय करना बड़ा कठिन होगा । पेशाव रोकने की शक्ति कम होने से यह बीमारी उत्पन्न होती है । पेट में कीड़ा उत्पन्न होने से भी यह बीमारी होजाती है ।

**चिकित्सा**—बेखेडोना—यदि रात को एकही बच्चा विच्छीने पर पेशाव कर देता होतो यह बच्चा पेशाव रोकने की शक्ति को खटाती है । यदि सोते में बाखक चिखता हो ये, ये, करता हो अथवा चमक उठता होतो यह बच्चा अपकारी है ।

**सीता**—यदि रोग कीड़ों के कारण उत्पन्न होगया होतो सीता देना चाहिये ।

**फौस्टिकम** - पहले गींद के समय वे मासूम पेशाव निकल जाता होतो यह दवा देनी चाहिये ।

**फस्फरिक पेसिड** - यदि पानी सा बेरग का पेशाव होता हो और बहुत होता होतो यह दवा देनी चाहिये ।

**फैरम** - फौस - रात भर में ५ इ वफे विच्छीने पर पेशाव कर रहे तो उपयोगी है ।

**केल्सीमिनम** - चाहे रात में हो चाहे दिन में हो पेशाव रोकने की सब तरह की कमजोरी को माराम करता है ।

**सूखेगन्नायक** - यह नए दवा बाखकों के विच्छीने पर पेशाव कर रहने की अमोघ औषध है । यदि और दवाइयों से फायदा न होतो हर मसूर्य को इसकी परीक्षा करना उचित है । एक एक सूद करके दिन रात में, अथवा के अनुसार दो तीग बार देना चाहिये ।

**सहकारी उपाय** - यदि बाखक मासूम के कारण और

आगते रहने पर भी पिछोगे पर पेशाब कर रहे हो, धमकाने तथा बलकी ठाड़ना देने से भी फिर बाखक पिछोगे पर पेशाब नहीं करता - लेकिन बिना अच्छी तरह जाने वृथा धमकांगा या ठाड़ना करना ठीक नहीं - सोने से पहले पेशाब कराकर फिर सुखाना चाहिये । और सोते तक दूध या पानी कुछ न पिखाना चाहिये । रात में दो पेंक बफै बाखक को उठा कर पेशाब करा देने से फिर कुछ भय नहीं रहता । हररोज ठण्डे पानी में स्नान कराना चाहिये ।

## ६१।- लड्डूकोंका ऐँठजाना-

**लक्षण**-मामूखी हालत में बहरे के पड़े सुकड़ जाते हैं बाँखें घूमती हैं और उसास में कुछ उपतिक्रम होकर ही रहजात है । जब रोग बढ़ने की हालत पर पहुँचता है तो बाखक अज्ञान होजाता है, आँसू बन्द होजाते हैं हाथ पैरों में बाँयठे बाने लगते हैं । बाँखें कपाख की तरफ खटजाती हैं मुह भीखा पडजाता है । और मुह से माग निकलने लगती है घरोटे के साथ उसास आता जाता है । और २ ऐसे ही अमानक लक्षण प्रकाशित होते हैं । कभी दो पेंक मिनट बाखक सूछों की हालत में रहकर अच्छा होजाता है अथवा कभी अल्दी और कभी बेर से होशमें आता है । साधारण तौर पर ४ बरस तक ऐसा रोग होते देखा गया है ।

**कारण**- अनेक कारणों से बाखकों को यह बीमारी होजाती है इनमें से दाँत निकलने की उत्तेजना, फ्रेचक, इत्यादि के फोटा फुन्सी के कारण ज्वर, अमानक खेचक आदि का बैठजाना, फीडे, अहार और पेट का बोप, सिरमें खोट लगना, और माग-सिक्-आवेग इत्यादि प्रधान कारण होते हैं ।

**चिकित्सा**—दांत निकलने के कारण होने से घेखेडोना, ऐकोनाइट, और कैमोगिला देना चाहिये ।

मानसिक उद्वेग के कारण होने से ऐकोनाइट [ भयहेतु ], कैमोगिला [ क्रोधहेतु ], मोपियम [ भयहेतु ], देना चाहिये । अजीर्ण से होने के कारण - इपिका [ उखड़ी होतो ], गफसवोगिका [ कब्ज होतो ], पखनेटिशा [ आहार का दोष होतो ], मस्तिष्क की पीड़ा से होतो - ऐकोनाइट, घेखेडोना, जखसीमीगम, देना चाहिये ।

चेखक बैठ जाने से होतो - ब्राइयोनिया, घेखेडोना देना चाहिये । कीड़े पेटमें होने के कारण से होतो सीना और एप्रेशिया देना चाहिये ।

गिरने से अथवा मस्तिष्क में चोट लगने के कारण से होतो ब्रानिका देना चाहिये ।

ऐकोनाइट - प्रबलज्वर, सूना और उत्तम शरीर, घेखेनी दांत निकलने या उखड़ी होने के समय से अथवा गम वा उन्ने-जना के कारण से रोग उत्पन्न होवे तो देना चाहिये ।

घेखेडोना - चहरे की रगत छाल हो - भाके उज्वल और बाल, मस्तिष्क उरुपा और रोगी सामान्य शब्द से चमक उठता हो, तथा सब शरीर कच्चा पड़ गया होतो देनी चाहिये ।

ब्राइयोनिया - चेखक बैठ जावे और उसके कारण खासी और इबाम्ब खेने में कष्ट होतो देना चाहिये ।

मोपियम - यदि मुंह की रगत फालीसी हो - और सूजन वा भाके कपाळ की तरफ खडजावे - रोशनी न सहनी हो पेशाब न होता हो, या कम होता हो, कब्ज और घरीट के साथ उत्साम जाता जाता होतो दिया जाता है ।



**सहकारी उपाय** — घांपटे आने से साथ ही कपड़े बिछ-  
 कुछ उतार डालने चाहियें और धारीय सोख देना चाहिये।

सिर ऊंचा करके सिर पर, मुँह पर, छातों पर, और छाती  
 पर ठंडे पानी के छींट देने चाहियें - पसून से आर्द्रमयों का इकट्ठे  
 होकर द्रवा की आगष्ट रफ्त पत्र नहीं करनी चाहिये - यदि  
 मोजन के शोष म रोग होतो उलटी कराना चाहियें। और कब्ज  
 के कारण से होतो साधन और गरम पानी की पिचकारी  
 लगानी चाहिये।

## ६० - शूल का दर्द।

शूल का दर्द कई कारणों से होजाता है। जैसे अम्लगूल  
 पिचघण्डल, श्रुतुशूल, इत्यादि - भांतों के झुकडगे वा देठने से जं  
 दर्द उपस्थित होता है उसी जा यहां रण्य किया जाता है।

**वाक्ष्या** — पेट में विशेष कर डूंडी के आम पास कटन और  
 मरोडने फामा दर्द। दाघने से वा घोकरणे से आराम मालूम होता  
 है। इस लिये रोगी पेट पर हाथ वा तकिया रखकर आगे को झुक  
 पटना है। कब्ज रहना है परंतु ज्वर नहीं रहना, आने के अनि-  
 यम से, ठंड लगने से, पेट में कीड रहने से, और कब्ज इत्यादि  
 के रहने के कारण यह उत्पन्न होता है।

**चिकित्स** — फोखोसिध--फाटने फीसी तकलीफ, और ठहर  
 ठहर कर दर्द का होना, पेट फूलना, उदरगघ का रहना, आने से  
 तकलीफ का बढ़ना इत्यादि लक्ष्यों के होने पर यह दवाई  
 दीजाती है।

**नक्षत्रोमिका** - अनियमित आहार करने के कारण जो दर्द  
 होतो वह दवाई फायदा करती है।

आयना-पित्त वा पथरी के कारण रद्द होता होतो केना चाहिये ।  
 कैमोमिसा—छो और बड़ों के रस के लिये बहुत उपयोगी है ।  
 मार्शरिस—भाज एक ऊपर खिन्नी हुए तीनों दवाइयों से  
 जब कुछ फायदा नहीं होता तब इस से माध्यम जगह फायदा  
 दीखता है ।

गकपूरियस या सीगा—पेट में कीड़े पड़ने के कारण ओं बह  
 होवे तो दिगा जाता है ।

यायु भरना के कारण दर्द होने में—कार्बोवेजिडेसलिस  
 थाइकोपोडियम, कैमोमिसा, काण्डूलस, और गक्स, दिया जाता है ।

उदर उदर कर मराह्य कामा दर्द होने से—थेओडोगा,  
 कौकूलम, और कौलोसिय देन हैं ।

सहकारी उपाय—गरम फ्लाक्सेन का सेक, और गरमजल  
 की पिचकारी देने से तुरन् आराम माछूम देता है ।

बाहार खूब सावधानी से करना चाहिये ।

### ६३।—श्वेतप्रदर ।

सन्ताना—पोनि वा अरायु में से एक तरह का सफेद कफ वा  
 पाणी कीसी बीज निकलती है । इस तरह के र्राव को श्वेत प्रदर  
 कहत हैं । इस बीमारो के शुरु मेंही चिचिरसा परामा चाहिये यदि  
 शुरु मेंही रोग आराम न हाजाय तो कर्मदा शरीर की पुष्यता,  
 खून कमहोगा, भूख कम लगना, परिवर्क क्रिया में गड़बड़,  
 इत्यादि तरह तरह की शिकायतें इस के साथ उपस्थित होजाती  
 हैं तथा गर्भ धारण की शक्ति भी जाती रहती है ।

कारण—प्रसव के धन में बिशेष फर तम मित्रों के बाद

उपयुक्त विधाम न मिलने के कारण, अथवा और और नियमों का प्रतिपादन न करने के कारण अक्सर यह बीमारी होजाती है। अनियमित वा असमय में स्नाना सह्याम भी इस रोग का एक प्रधान कारण है।

**चिकित्सा** — कैलकेरियाकार्य—सफेद दूधसा प्रदर होना दोनों पैरगिछे और ठंडे रहने हों, बुगैल और रक्त प्रकृति की शिथिलों के लिये खास कर उन के क्षिय जिम को अधिक रज आव होता हो बहुत फायदा करना है।

**चायना**—ऋतु होने से पहलेही प्रदरहो-प्रदर काख रगकाहो, योनि के भीतर बहुत तकलीफ देने वाली खुजली और सुकड़नहो, रोग की प्रथम अवस्था में विशेष कर रोगी यदि बहुत बुगैल हो तो इस दवा को देना चाहिये।

**पलसेटिका**—जखन के साथ, पसला, और घाव कर देनेवाला प्रदर, ऋतु के पहले ऋतु के समय वा ऋतु के पीछे सफेद प्रदर, ऋतु बहुत देर से होता हो, और बहुत कम होता हो, बैठे रहने के बाद उठने पर सिर घूमना, और ठंड खगंगा, इत्यादि हाजतों में दिया जाता है।

**सीपिया**—गर्भावस्था में, वृद्धवस्था में ऋतु बद होने के समय, अथवा यौवन के आरम्भ न यह रोग होतो, सीपिया बहुत फायदा करता है। पीला पानी सा दूधसा वा कफसा प्रदर हों और साथ साथ जरायु की प्रीधा (गरव का गन्ध भाग) में सुई सी चुभती हों और योनि में खुजली चलती हो तथा पेशाब में बुगैल और कीचड़ कासा गैला मिजा हुआ होतो ऐसी हाजत में यह दवा उपयोगी है।

सखफर—ऊपर खिन्की हुई दवाइयों से उपकार न हमे पर तथा पुरान रोग में यह ब्यवहार में लाया जाता है ।

पेलूमिना—सिर्फ दिन में बहुत और पतला, घाघ करने लाजा जखम पैदा करने लाजा प्रदर लाघ, खडे हाग से पैरों पर यह कर लाजावे, योनि प्रवेश में स्त्रारूप [ घाघ के तरह के होत हैं ] होजाये और कब्ज रहता होतो बेना लाहिये ।

गाडा प्रदर होतो—नट्रम म्यूरोटिक, पखसटिळा और सीपिया दिया जाता है ।

पानी सा पतला प्रदर होतो—पेलुमिना और प्राफाइटिस दिया जाता है ।

पीथ के माफिक प्रदर होता मक्यूरियस दिया जाता है ।

पीळा प्रदर होतो—खाइकोपोडियम और सीपिया देते हैं

हरे रङ्ग का प्रदर होतो—फार्ब पेज, कैकेसिस मक्यूरियस और सीपिया फायदा करता है ।

दूध के समान गदर होतो—कैलफेरिया और पखसटिळा उत्तम है ।

धक्कू दार प्रदर होतो—क्रियोजोट, नेटम और नाइट्रिक पेसिड उपयोगी है ।

सहकारी उपाय—हमरोगकी चिकितसा के समय इस बात को जानकर कि श्रुतसम्बन्धी कोरं गड पड तै कि गही । फिर दोगों रोगों की उपयुक्त औषध करणी लाहिये । रोग, प्रसित क्याग को, हमेशा ठण्डे गख से घोरकर भाफ रकना लाहिये बहुत परिभम मामसिक चिन्ता और उत्तेजना से बचना लाहिये । टारंट्रमटिस या कैथेंड्रटा बोशन की विषकारी बहुत फायदा करता है ।

तन्त्रियाँ—शरीर के अनेक स्थानों में जल इकट्ठा होजाता है और यह जगह सूज जाती है। इसी को शोथ कहते हैं यह कभी-कभी एक स्थानों पर, और कभी सब शरीर में होजाता है।

गैलेरिया, पुरानी मापतिछी, और उदग्गमय आदि पुगने रोगों की मज्जरी हाजतों में देखा जाता है। सूजी। दुर्ग जगह को उगलों से दवांन से बहा एक गढ़े कासा वाग होजाता है।

चिकित्सा 1— आर्सेनिक— मुह, हाथ, पांघ इत्यादि स्थानों के शोथ होने पर और दिल के रोग तिछी और जिगर के घटने के कारण शोथ होने पर बहुत उपकारी है।

दुर्बलता, शरीर का कम होना, हाथ पैरों का ठंडा पड़ना, मांसी क्षीण, फलेज पर शोथ सा माळूम देना, बहुत प्यास, घबेरी, और चिन्ता आदि लक्षण रहने पर दिया जाता है।

डिजिटॉलिस—बहुत तरह के मनाध्य शोथों को इस दवा के देने से विशेष फायदा होगा है। गांडी की अनियमित गति और उमका क्षीण होजाणा, बहरा रक्त हीन होजाणा, श्वास फट, और दिलके रोग की हाजत में देना चाहिये।

एपिस—मूत्र प्रन्थि के ऊपर इसका बड़ा प्रभाव पडता है। इस विधे शोथ की ऐसी बधस्था में जबकि पेशाब पण्ड होगया हो या कम होगा हो -या और उसे ही लक्षण उपस्थित होंतो यह दवा बहुत फायदा करती है। सामान्य शोथ और सूजन में भी यह दीजाती है।

वायना—रक्त छाया, उदग्गमय, इत्यादि शरीर को सब करने वाले रोगों के कारण शोथ हो, और तिछी या जिगर का व्यति कम होतो यह दवा दीजाती है।

मजफर— चेचक, गायसरा इत्यादि फोड़ा फुन्सी के रोगों में, फुन्सी यदि बैठ जाने के कारण से शोथ होती यह दवा फायदा मन्द है।

एकोनाइट—पीड़ा शोथ की प्रथम समस्या में, विशेष कर जब उपर रहता हो और दिखे न। फायदा इत्यादि यौतरिक रोग मौजूद हों तो यह दवा दोगी चाहिये।

एपोसार्गम— जखोर ( उदरी ) मधया दिखको टकने वाली पस्तु पर शोथ होता यह विशेष उपकार करती है।

चेचक इत्यादि के बैठ जाने से शोथ हाता— एपिस, गार्सेनिक और सलफर देना चाहिये।

तापगिष्ठा मधया जिगर के दर्द के कारण शोथ होता फायदा और कार्बोपोडियम देना चाहिये।

पहुन दिन के पुखार के कारण शोथ होगा गार्सेनिक, फेरम और सलफर देना चाहिये।

दिलके रागके कारण शोथ होता गार्सेनिक और डिजिटलिस देना चाहिये।

सहकारी उपाय-- सूखी जगह में रहना उचित है। रोग की पहली समस्या में तबकी गाजन करना चाहिये; रोग पुराना पड़जाने से रोटी तथा आवख भी दिया जासकता है। यदि सखहोतो गरम पानी में स्नान करना अच्छा है।

## ६५ - फोड़ा ।

लक्षणा - समझे के नीचे वा पंथ के बीच में पीप इकट्टी होकर मूज जाता है इसी मूजे हुने स्थान को फोड़ा मधया चिपचि कहते हैं। मूजन के साथ २ दर्द और जखन रहती है। और

अक्षीर में राध निकल जाती है, यह फोड़ा तथा और पुराना दोनों तरह का होसका है। पड़ों के बीच में इडु की ऊपर, जिगर और खियों की छाती आदि स्थानों में अक्सर फोड़े उपस्थित होते हैं।

## ( १ )—नयाफोड़ा ।

**लक्षण**—म्यान सूज जाता है जखन और दर्द होता है। कुछ दिन बाद उसमें राध पड़जाती है, दर्द और चपकन मालूम होती है, और दाबने से राध चलती फिरती मालूम होती है। पीछे आदिन्ते २ उसमें मुह हाफर फोड़ा फूट जाता है और उस में से गाढ़ा पीप निकल जाती है।

**चिकित्सा** - यदि किसी स्थान में दर्द, लाल रक्त और जखन के सिवाय फूला हुआ सा मालूम होये तो पेंजेडोना दिया जाता है। यदि २४ घंटे या दो दिन तक इस दवा को देने से सूजन कम न होये तो हीपर, सलफर देने से फूला हुआ कम होजाता है। और फिर पक नहीं सका लेकिन जो एक बार राध पड़ चुकी है तो मर्क्यूरियस देने से राध निकल कर घायल अपने आप सूख जावेगा, जो पीप पड़ जाये तो मर्क्यूरियस दिया जाता है जो बराबर मर्क्यूरियस देने पर भी घायल न सूखे तो हीपर अथवा सार्लेशिया देना चाहिये। नये पुराने मथथा दुर्गन्ध युक्त सप प्रकारके घावों में ऊपर खिसी दोनों दवाइयां बहुत फायदा करती हैं।

**हीपर-सौख**—दर्द की जगह में खपक चखती होये, चमड़े में बहुत जखन होती हो, चमड़ा फटा, उलस और सूजा हुआ हो, पीप कम, कचखोड़ और बदबूदार होतो यह दवा देनी चाहिये।

गीला कपड़ा पहनने से यह स्मरण रखना चाहिये कि जितनी देर गीला कपड़ा पहिन कर परिभ्रम करने रहेंगे। उतनी देर तक परिभ्रम फ करने से जो उत्ताप शरीर में उत्पन्न होता है उसके कारण से सर्दी अमर नहीं करमनी, खभिग परिभ्रम वद कर देने पर भी गीला कपड़ा पहने रहने से सर्दी होने की निश्चय समाधना है ॥ ( २ ) ठंडी हवा का शरीर में लगना ( ३ ) पाते में बहुत देर तक रहना ( ४ ) एक दम गरमी में से सर्दी में चला आना ॥ ( ५ ) पहनेने छोड़ने के कपड़े का कम होना । इत्यादि वध, युद्ध, रोगी तथा बुर्ख, लोगों को इन सब बातों से हुंशियाद रखा उचित है ॥

**चिकित्सा-सर्दी का सूत्रपात गाछा हाते ही पैम्फर या भी कपूर का अरक चीनी के साथ दो दो बूद करके भाय भाय घंटे में ५२ बार खाने से सर्दी एक दग दद होजायेगी । जो पैम्फर सर्दी शरीर में दुरुहातेही न दिया जाये तो उससे फोर विशेष फायदा नहीं दीखना ॥**

**ऐकोनाइट - जुकाम या टड लगना ओ बहुत सी पीडा कपक्षित होजाती हैं विशेष कर उनके साथ ज्वर रहता हो तो ऐकोनाइट मधमे उत्तम द्वाद् है । १ बूद दो या ३ घंटे के अगल से देती चाहिये ।**

**मक्सयोमिका - जो जुपाग सूस जाये और कफ गिरना बंद होओघ और उसके कारण नाक रुक जाये सिर में धक मारूम होना हो तो यह द्वा यहुग उपकारी है ॥**

**आर्सेनिक - बगवत नाक से गरम, जपन करने भाजा गामी वा कफ निकलना हा, आंखों म पाग सरता ह, नाक में बंद मारूम --- तो --- में बख नवकीक वम मारूम देती हो तो हना**



**सहकारी उपाय** - गये फोड़ को पहले गरम जल में सेकाया चाहिये, और पीछे बग़ार गलती की पुलटिस पाये। जब एक घाटकी पांभी हुई पुलटिस उठी होंजाने तो फिर पुलटिस को धरल देना चाहिये। जो पीत्र निशकता होता कैलडूखा खोशग में धोकर और एक कगडा उनी गं गिगोकर बाध द्ये, कैलडूखा सध तरह के घाथों क लिये गहौपय है ॥ इसका जिनगा धाखिक प्रयोग किया जाता है उनी ही जखरी घाघ सूख जाता है ॥ ऊपरकी पट्टी गैली हाते ही बधुल देनी चाहिये ॥ जरूरत पहले पर पुराने फोड़े अकसर नदर से फाटरी दिये जाते हैं ॥

## ६६ सर्दी [ जुकाम ]

**लक्षण** - यह बहुत साधारण रोगहै-नाक और उसके पास के नय स्थानों की दक्षिणिक क्लिखियों के प्रवाहही को सरदी या जुकाम कहते हैं। नाक और तालुके भावि स्थानों में सुरसुरावट और खुजली चखनी है, और पीछे पानी कडगा है ॥ घारघार छीके भाती हैं, गस्तक चादि स्थानों में योग्यता गालूम होगा है, आंखे डवडगाई हुई और डामें पानी भर आता है, और कभी कभी एवर गी हा जाता है ॥ मगर देश में अहा कि अकसर मौसम गरम रहगा है इसके होने से तथा इसके परिणाम का कुछ भय नहीं किया जाता ॥ लेकिन इसके होने से अनेक प्रकार के नय अघन के सहारफारी और भयानक रोग उत्पन्न होसके हैं। इस लिये शुरू में ही इसकी उचित चिकित्सा कराना अवश्य चाहिये ॥ अतएव इसकी चिकित्सा के विषय में सक्षप से कुछ लिखते हैं ॥

**कारण** - शरीर में किसी तरह के भी जो उत्ताप कम हो-जाता है तो सर्दी नपना नसर कर डाखती है ॥ जैसे (१)

के बाद अच्छी तरह से सूखे कपड़े से पैरों को पोंछ डालना चाहिये। दिन में ३।४ बार पानी के साथ नमक मिखा कर नाक में भ्वास से चढ़ाये तो बहुत फायदा कीमतता है।

जुकाम की पहली अवस्था में सय तरह की रसीली चीजों का खाना बंद करने से, बहुतों की राय में उपकार करता है। जिगको बहुत ही मामूली समय हाते ही अट जुकाम होजाता है उनको नीचे लिखे नियमों का पालन करना उचित है।

( १ ) नये वदन हर रोज खुली हवा में टहलना चाहिये। इससे श्वास में सर्दी गोकने की शक्ति उत्पन्न होजाती है ॥

( २ ) हर रोज सधेरे उठते ही स्नात करना चाहिये ॥ गद्दी में गोता लेकर महाने से बहुत फायदा होता है ॥

( ३ ) नाक से उसास लेना चाहिये, और मुह में गर्ही, क्योंकि मुंह की अपेक्षा नाक में सरदी सहने की शक्ति अधिक होती है।

## ६७ - सर्द गरमी।

**बल्लशा** - उष्ण भयवा त्रेज घूप में पहल मस्तक बहुत वृत्तेजिन होजाता है। पीछ उसकी क्रिया जाती रहती है ॥ पहले प्यास, उष्ण, और श्वास का सूखापन, इसके बाद भ्रमश सिर घूमना, सिर में दर्द आंखें बाल रगत की, या श्वास पेशाय का होगा, पीछे एक दम या थोड़ी थोड़ी करके मूर्छा का होजागा, कभी कभी मूर्छा के साथ पांघटे भी मौजूद रहते हैं और कभी नहीं भी रहते ॥

**चिकित्सा**—रोगी को ठंडे स्थान में रखना चाहिये, यदि बापशा उहों में सय शरीर के कपड़े उतार कर मखग करवें। और सिर ठंड, छाती, और सय शरीर पर ठंडा अन्न डालें। कपूर को नाक

मफ्यूरियस—सौख—प्रसार ऊँकि भाती हो, गढ कफ मि-  
 कलना हो, घहुत पन्नीना भाता हो, गले में दर्द मालूम देता हो,  
 नाखों में जलन हो, और जाल रगत हो, शाम के घक्त तकलीफ  
 का बढ़ना, इत्यादि हालतों में दियाजाता है। इसको कमी कमी  
 मफसघोगिका के साथ थारी थारी से भी देते हैं

पलसेटिखा—गाढा और यद्बुदार कफ निकलता होब  
 जीम से कुछ स्वाध मालूम न देता हो, और न नाक से कोई तरह  
 की गंध मालूम देगी हं—सिर में बोक और गढ घढ मालूम होना  
 हो, फाग में, और सिर के भास पास बहुत दर्द इत्यादि हालतों  
 में यह दवा दीजाती है।

सूत्रा कफ, और नाक यद् होने पर—वाइयोनिया, मफस, और  
 कैलकेरिया दिया जाता है।

हाल के पैदा हुये घषों की अकसर नाक बंद हो कर बडाही कष्ट  
 देती है, क्यों कि यह स्तन पान नहीं कर सका, ऐसी हालत में  
 नफस देने से तत्काल फल दीजना है।

जुकाम के साथ ज्वर रहे तो—पेकोमाइट- मफ्यूरियस—मफस  
 और जेखसीमीगम देना चाहिये।

अधिक सर्दी और जुकाम के होने को बूर करने वाली दवाई—  
 कैलकेरिया है। जुकाम रुक जाये, और सिर में दर्द होवे तो, घेखे  
 डोगा, और नफस दिये जाते हैं, और दमा होजाये तो आसैनिक,  
 इपीका और नफस देने हैं।

सहकारी उपाय—जुकाम हो जाने पर दो एक दिन घर में  
 भीतर ही रहना उचित है। सोने के समय पैरों का फरीय २०मिगट  
 तक जुवा कर गरम पानी में रखने चाहिये— इस अर्थ में ही जो  
 पानी ठंडा होजाये तो और गरम पानी मिलाखना चाहिये। इस

के पाद अच्छी तरह से सूख कपड़े से पैरों को पोंछ डालना चाहिये। दिन में ३।४ बार पानी के साथ नमक मिखा कर नाक में भ्रामन से चढ़ाय तो बहुत फायदा दीखता है।

जुकाम की पहली अवस्था में तब तरह की रसीली चीजों का खाना बंद करने से, बहुतों की राय में उपकार करता है। जिसको बहुत ही मामूली सत्रय होते ही झट जुकाम होजाता है उनको नीचे लिखे नियमों का पालन करना उचित है।

( १ ) नम यद्न हर रोज खुली हवा में टहलना चाहिये। इससे श्म में सर्दी रोकने की शक्ति उत्पन्न होजाती है ॥

( २ ) हर रोज सचेरे उठने ही स्नान करना चाहिये ॥ गर्मी में गोता लेकर गहाने से बहुत फायदा होता है ॥

( ३ ) नाक से उसास लेना चाहिये, और मुह से नहीं, क्योंकि मुह की अपेक्षा नाक में सरदी सहने की शक्ति अधिक होती है।

## ६७ - सर्द गरमी।

**लक्षण** - उत्ताप भयथा नेज घूप में पहले गस्तक बहुत घर्षाजम होजाता है। पीछे उसकी क्रिया जाती रहनी है ॥ पहले प्यास, उत्ताप, और चर्म का सूखापन, इसके बाद क्रमशः सिर झुगना, स्निग में दर्द आखें बाल रगत की, या बाल पेशाब का होना पीछे एक दम वा थोड़ी थोड़ी कण्ठे मूर्छा का होजागा कमी कमी मूर्छा के साथ पायटे भी मौजूब रहते हैं और कमी नहीं भी रहते ॥

**चिकित्सा**—रोगी को ठंडे स्थान में रखना चाहिये, यदि गर्मायता नहीं तो तब शरीर के कपड़े उतार कर रखग करवें। और सिर पीठ, छाती, और सभ शरीर पर ठंडा जल डालें। कपूर को नाक

के पास रखकर रोगी को सुघाना चाहिये। या भर्गर रोगी कासि कहें तो दा गक वृक्ष अथ कपूर सीते के साथ देना चाहिये-यदि रोग हुआ हुआ हो तो १०।१५। गनट के अंतर स कपूर क यक्ष ग ऐमोमाइट देना चाहिये। जो रोगी अत हा तो जय तक रोगी का शरीर स्वाभाविक अवस्था म न आजाये तब तक उसको थोड़े गरम पानी में बिठलाकर फिर क्रमश उसमें ठंडा पानी मिलाता रह।

ग्लोमाइग - येहोशी, मूच्छा, ऐमा गालूम होता है। कि सब खून मिर में बढ गया है। और मिर फटा जाता है, सिर घूमना और सिर नीचा करने में या हिलाने में बढगा, इत्यादि हासतों में दिया जाता है ॥

घबडोना - अतृप्त तेश मिरफा बू, गस्तक में रक्त की अधिकता, एक दग मूच्छा होकर मिर पडना, चहरे की छाछ रगत। होना, अतृप्त बपना श्वास खगे में फट गालूम होगा, इत्यादि हासतों में फायदा करता है ॥

निरद्रुग - गिरड-फातों में गों, गों, कामा गश्च हाना, जीभ को रगत पीला पडजागा, उदरों होना, छाती में रक्त की अधिकता, जल्दी २ उमास लेना, और निकालना, मय शरार ठंडा पडजागा, मुह हाथ और परा में ठंड पमीत आना, इत्यादि हासतों में यह दवाई फायदा करती है। इस रोग के पीछे हाग वाक लक्षण - उमका बहुत हाशयारी बरता चाहिये - जय जैसे लक्षण उपस्थित हों जैसे ज्वर बुखला, फेफड़ का व्यतिक्रम इत्यादि उम मय गैसा ही उपचार करेग गार्हा दवाइया का प्रयोग करना चाहिये।

महकारी उपाय--आयु मर्षण को बुखला और सुर्ती

के कारण मर्द गरमी होजाती है - स्नायु समूह की उत्तेजना के कारण गर्मी होगी, इसलिये ठंडा पानी मस्तक पर, शरीर पर, छाती और पीठ पर, प्रयोग करना इसका बहुत अच्छा इलाज है । फिर और पीठ पर बरफ छगाना और यदि रागी का हाथ होतो बरफ से पानी ठंडा करके पिखाना चाहिए ।

## ६८ - स्तन प्रदाह ।

**जन्तुरा-**स्तन, [ छाती ] सूजी हुई, प्रदाह युक्त, खालरग और बहुत दुःख होगा हो । स्तन में दूध जम जाता, स्तन में से दूध न निकलना, ठंड छगाना, आम पीने की गह्यद्वय भयना स्तन में बहुत दूध एकट्टा होने से यह बीमारी उपस्थित होती है ।

**चिकित्सा-**ब्रायोनिना बहुत ज्यादा दूध एकट्टा होगा स्तन कड़ापट्ट जागा, भारी होजागा, गरम होगा, और दुःख करने की हालतों में यह दवा दीजाती है । स्ना खालरगन का अगधवार होता इसके साथ गेलेहोगा, और यदि बुखार रहना होतो प्राइयो निया के साथ एकोगारट घारी घारी स दगा चाहिये ।

**मफूंगियम पील -** यदि सूजन कमश घटती साथ, और पीठ पट्टा किसी गरम से बर ग हुआ हो या ऐसा मालूम होकि पीठ पट्ट गया है तो यह दवा दनी चाहिये ।

**होपर - सलफर -** जब ऐसा मालूम होकि निश्चय पट्ट जायेगा तब यह दवा दनी चाहिये । और उसके साथ साथ पुलटिस भी लगायी चाहिये ।

**साइलेशिया -** सर पट्ट गई हो, पीठ पतली पानी सा हो या गांठी और बहबूवार होतो यह दवा दनी चाहिये ।

**पाइटाथेका** यह दवा प्रदाह की हासतमें या पकड़ठ ऐसी

सब हासलों में में ही लगानी चाहिये ॥ स्तन प्रदाह की एक बहुत ही उमदा दवाई है ॥ इस दवा के खाने से तथा ममली मरक (Mother Tincture) २० घीस दूध एक आऊंस पानी में मिलाकर साहर प्रयोग करने से बहुत उपकार करता है ॥

**महकारी उपाय** - दूध स्तन में जमते ही बच्चे को पिला दिया जाये तो यह बीमारी नहीं होती - बर्षे शुरू होते ही स्तनों का खटकना फौरन धक करदेगा चाहिये ( यदि खोखी पहनने में तकलीफ होतो एक पट्टी से स्तनों को लपेटकर उनको गले में बांध देना चाहिये ) गरम पानी से स्नान से भी बहुत फायदा होता है ॥

( स्तन्य उत्तर योग्य )

## ६९ - दमा

यह रोग देखने में ऐसा भयावक और रोगीको कष्ट देने वाला है जैसा प्राणघातक नहीं है ॥ श्वास कष्ट जैसा श्वास लेने में होता है जैसा श्वास निकालने में नहीं जाता - खांसी गले में कफ की घराहट छाती में भारापन, मुह की रगत बहना जाना, सब शरीर में पसीना आना, रोगी श्वास लेने की बहुत चेष्टा करताहो । बीमारी के आक्रमण करने का कोई विशेष समय नहीं होना परंतु प्रायः आधीरातके पीछे ही शुरू होती है ॥ उस समय बिल्लाने पर से उठ घैठना है, कानों कंधे और गरदन ऊंची हो हैं नाखें खुलती जाती हैं नाक फूल जाती है साम लेते हापना जाता है पेसी तकलीफ बहुत दर या थोड़ी दे से धीरे धीरे कफ उठ आता है । और कफ निकलने रोगी को कुछ मोरामें गालूम होता है-और साँज साय सुपार नहीं रहता, इस रोगका कोई ।

को निश्चय नहीं होता जिसको जिस जगह आराम रहता हो उसको उसी जगह रहना चाहिये ॥

**चिकित्सा - श्विका - दमा, छाती पर बाफसामासूम होगा,** गलेमें कफ बढ़बढ़ाना, और ऐसा मासूम होगा कि कफ मरा हुआ है और खांसने से नहीं निकलता है, तकलीफ और उल्टी करने की इच्छा होना, तकलीफ देगे धीरे धीरे खासी मामूली बल्ले में ही बढ़जाना, कफ बैठजाने पर भी दमे का उपस्थित होना, इत्यादि हासलों में यह बहुत उपकार करती है ॥

**पेकोगाइट - द्वास कष्ट** दिखका कम बल्लगा और खासी के साथ यदि दमा होतो शुरू में ही यह दवा फायदा करती है ॥ और जो ऐसी हासल भी होकि रागी अपने मरने का दिन निश्चय करने लगे तो भी यह उपकार करती है ।

**गकसधामिका** यह दवा दमेको राकन वाली है जिनका अजीर्ण के कारण दमा हो उनको यह दवा बहुत फायदा करती है ॥ दमेका आक्रमण होने के पीछे भी जी मिचखाना, पेटफूला कठज होना, और थोडा थोडा द्वास कष्ट आदि लक्षण रहें तो यह बहुत उपकारी औषध है ।

**आर्मेनिक—रोग** पुराना पड़जाय तो बुढ़े और दुबल आदमिया केक्षिपे यह बहुत उपकारी है । जन्टी और साथ साथ शब्द के साथ दमा—साने और थोडा हिखग झुलने दिन में राँ दमा का उठभाना मुह की रगत बहल जागा, पुरानी हासल में छाती में जलन होना, ठंडा पसीना आना और दुर्भूता रहन पर यह दवा देनी चाहिये ।

**सलफर—पुराने रोग** में विशय कर जग चन राम रा



सब हाइलो में में ही लगानी चाहिये ॥ स्तन प्रवाह की एक बहुत ही उमदा दवाई है ॥ इस दवा के खाने से तथा अपनी भरक (Mother Tincture) २० घीस यूक् एक आऊंस पानी में गिळाकर याहर प्रयोग करने से यमुन उपकार करता है ॥

**सहकारी उपाय -** दूध स्नान में समते ही यन्त्रे को पिछा दिया जाये तो यह बीमारी नहीं होती - बर्षे शुरू होते ही स्तनों का छटकना फौरन बन्द करवेना चाहिये ( यदि छोली पहनने में तकलीफ होगी एक पट्टी से स्तनों को छपेटकर उसको गले में बांध देना चाहिये ) गरम पानी से सेकने से भी बहुत फायदा होता है ॥

( स्यान्व ज्वर वेग्नो )

## ६९ - दमा

यह रोग देखने में जैसा भयानक और रोगीको कष्ट देने वाला है वैसा प्रायः घातक नहीं है । श्वास कष्ट जैसा श्वास लेने में होता है वैसा श्वास निकालने में नहीं होता - सांसी गले में कफ की धरातट छानी में गारापन, मुह की रगत बह जाना, सब शरीर में पसीना आना, रोगी सांस लेने की बहुत चेष्टा करताहो । बीमारी के आक्रमण करने का कोई विशेष समय नहीं होता परन्तु प्रायः आधीरातके पीछे ही शुरू होती है ॥ उस समय रोगी बिछाने पर से उठ बैठता है, वानों कंधे और गरदन ऊर्ची होजाती हैं बायें खुलती आती हैं नाक फूल जाती है सांस लेने वक्त रोगी हांपसा जाता है ऐसी तकलीफ बहुत दर या थोड़ी देर तक रहते से धीरे धीरे कफ उठ आता है । और कफ निकल जाने के बाद रोगी को कुछ आराम गालूम होता है-और साजाता है, बग के साथ पुकार नहीं रहता, इस रोगका कोई विशेष समय या स्थान

भय निश्चय नहीं होता जिसको जिस जगह आराम रहता है  
उसको उसी जगह रहना चाहिये ॥

**चिकित्सा** - श्पिका - दमा; छाती पर धाकनामालूम होगा,  
गलेमें कफ घड़घड़ाना, और ऐसा मालूम होगा कि कफ भरा हुआ  
है और खांसने से नहीं निकलता है, तकलीफ और उल्टी करने  
की इच्छा होगी, तकलीफ दगे वाली खांसी, मामूली चलने में ही  
पड़जाना; कफ पैठजान पर भी दमे का उपास्थित होगा, इत्यादि  
हालतों में यह बहुत उपकार करता है ॥

**एकागाष्ट** - द्वास कष्ट दिखका कम चखना और खांसी क  
साथ यदि दमा होतो शुरू में ही यह दवा फायदा करती है ॥ और  
जा ऐसी हालत भी होकि रागी अपने मरने का दिन निश्चय करने  
छने तो भी यह उपकार करती है ।

**गफसवामिका** यह दवा दगको राफन घाली है जिनको  
अजीर्ण के कारण दमा हो उनको यह दवा बहुत फायदा करती  
है ॥ दमका आक्रमण होन के पीछे भी जी मिचखाना, पेटफूलना  
कठज होना, और घाडा थोडा श्वास कष्ट आदि लक्षण रहें तो  
यह बहुत उपकारी औषध है ।

**आर्सेनिक**—रोग पुगना पड़जाय तो बुडदे और दुबल आदमिया  
केलिये यह बहुत उपकारी है । जल्दी और साथ साथ शब्द के  
साथ दमा—सोने और थोड दिखग हुजने दिन में भी दमा का  
उठभाना मुह की रगत घदल जाना पुरानी हालत म छाती म  
अरुण होना, ठडा पसीना आना और दुर्गटना रहत पर यह  
दवा देनी चाहिये ।

**सलफर**—पुगना राग म विशेष कर जब अम राग या

प्रकृति न और फाई दोष रहा हो तथा और दवाइया सधि-  
दोष फल न दीजा होतो यह दवा देनी चाहिये ।

ब्राह्मोनिचा- रोगी को स्थिर रहना चाहिये जरा हिचकने मुकमे  
में फट मालूम हो, हमेशा खांसी रहती हो, छाती औरपसखी  
के नीचे दर्द मालूम होता हो, और गख फडा पड गया हो तो यह  
दवा बहुत उपकार करती है ।

दमा, दो तरह का होता है—कोई श्लेष्मा प्रधान, और कोई  
वायु प्रधान होते हैं । श्लेष्मा प्रधान दमे में मोस, ठड, नहाना  
इत्यादि सख नहीं होता । वायु प्रधान दमे में नहाना और  
फभी फभी दोनो घक नहाना सख होता है । श्लेष्मा प्रधान दमे  
की खास खास औषधें आर्सेनिक पलसेटिजा इपीकाफ और वेंट्रि-  
मटाटं है । वायु प्रधान दमे की प्रधान प्रधान दवा में कूपन, इपी-  
काफ लोबेड्रिया, गौफस, और छैटा हैं ।

**सहकारी उपाय**—रोगी को ठडे पानी से स्नान कराना  
चाहिये और हलका भोजन कराना चाहिये—भोस, वृष्टि, और ठंडी  
हवा से शरीर को बचाना चाहिये ।

जब दमा उठता हो तब धतूरे के पसे या खुरट बना  
कर पीना चाहिये और गरम पानी की गखे में भाप खेनी चाहिये  
शोरे के पानी न स्याही सौषता ( Blotting paper ) कागज मिगो  
कर और सुआफर फिर उस को खुरट की तरह बना कर  
गखे में घूसा लेगा चाहिये ।

छाती में बर्ब रहता हो तो छाती और पीठ पर गरम  
पानी में फ्लागली मिगो कर—उससे सेफ करना चाहिये । दवा  
खगाने के घक फलूप तेख में फपूर मिखाफर छाती और मेठ बंड  
पर माक्षिश फरगेसे बहुत फायदा होता है । दमा उठने के समय

इपीकाक गाध गाध घटे म वेना चाहिये और जो इससे विशेष फायदा रहे तो आसैनिक वेना चाहिये।

## ७०—खसरा ( एक तरह कीचेचक )

### Measles

**लक्षण**—यह एक तरह का मक्रामक रोग है।

पहले चार पांच दिन तक सरथी, छीक, खासी, इत्यादि होती है आंखें लाल रगत की पानी भरी हुई रहती हैं। पीछे चोखे पाखवे दिन मघ शरीर में गोज गोज हान बाहर निकलआते हैं। और आठने वा नने दिन बैठ जाने हैं। यह प्राय बच्चो को दोल देखा गया है। इस के पुष्कार में शरीर का उत्ताप बहुत ज्यादा होता है—तापमाग (Thermometer) से देखने से १०४ या इसने ज्यादा भी गरमी माळूम होती है।

**चिकित्सा**—वेकोगाइट और पल्लसेटिळा-साधारण खसरे फेबुसार की बहुत अच्छी दवा है।

**जेखसीमीनम**—दागे बाहर निकलने में बेर होगे से वा दागे बैठ जागे पर और बहुत तेज पुष्कार के साथ निद्रालुता और चांपटे उपस्थित होने का उपक्रम होने पर यह दवा दीजाती है।

**विटेड्रमथीरड**—मस्तिष्क मघदा अनायुधिक उत्तेजना और उस के साथ घायटा का होना मघया फेफाडे में ज्यादा रूग जमगे की भाशंका होने से उपकारी है।

**वेलेडौगा**—निद्रालुता—आखे लाल रग की होगी, सिर में दर्द, रहना, रोशनी सहन होगा, गले में घाघ होगा, रूग्नी रूग्नेग युक्त खांसी के साथ, चांपटे का भाग, इत्यादि मत्स्याओं में बहुत उपकार करने वाली दवाई है।

यूफेशिया—मूर्छा खापी व आस और नाक में सरसी के लक्षण  
रहता विशेष कर भासों न रुकें रहने पर यह दवा दीजाती है।

इपीका—गले में फफ का घट बढ़ावा, बहुत उबकाई वा  
उलटी हाना, खेचक के निकलने में देर और श्वास लेने में कष्ट  
होना यह दवा दीजाती है।

पलसेटिला—यह दवा प्रायः इस रोग की सब हासता में ही  
दीजाती है विशेष कर सरसी, और उदरामय रहने पर और  
खसरा निकलने में देर होने पर दीजाती है।

सक्षफर—दाने पैठने के चक और भाषण्यक हो तो पीप घीप  
में भी एक एक मात्रा दीजाती है।

सहकारी उपाय—रोगी के घर में अंधेरा रहना चाहिये  
हवा की आसव रफ्त रखनी चाहिये, और घर को थोड़ा गरम  
रखनी चाहिये।

हवाकी आसव रफ्त से मतलब यह है खराब हवा  
निकलती रहे और साफ हवा आती रहे, लेकिन बहुत  
तेज हवा के झोंके से रोगी को घब्राना चाहिये। खसरा निकलने  
पर तथा आराम होजाने के कुछ दिन पीछे तक भी रोगी को  
ओस और ठण्ड न लगने देना चाहिये। गरम जलमें कपड़ा बुवा  
कर शरीर पोंछ दिया जा सकता है। शरीर के कपड़े हमेशा  
बदलते रहना चाहिये। और आँसों के पखक दानों बिपक जायें  
तो दृश्यादी से गरम पानी से धो साखना चाहिये। पहले साफ  
वाता बाजा आदि हलका पच्य और पीछे जय बुखार छोड़ आवे  
तो दूध दिया जाता है।

रोकने वाली दवाई—भास पास जो यह रोग फैला  
हूमा होतो दिन में दो बूके पलसेटिला या एक दिन पेफोनाइट  
और दूसरे दिन पलसेटिला खाना चाहिये।

( १ ) यदि खमरा ठीक न निकल कर वैसे ही बैठ जावे—

ठगड़ लगजाने से, या उत्ताप का परिघटन हाथ से धाना ठीक तरह से उठ नहीं सका है, और जो उठता भी है तो बाँध में ही बैठ जाता है। चिकित्सा— फौरन प्राइयोगिया देना चाहिये विशेष कर यदि खासी और छाती में दर्द होतो।

( २ ) घेचक के पीछे की शिकायतें

( १ ) खासी—

चिकित्सा—खासी स्वर भग, गले में घाव, इत्यादि शिकायतें रहें तो - प्राइयोगिया, ड्रोमेग, गोफन और सखफर दिये जाते हैं। धाँपट लागे घाँखी खाँसी होता घेलेडोना, हायनामन दिया जाता है।

सहकारी उपाय— जो बहुत खासी होतो मुह फाड़ कर गरम पानी की भाप लेना चाहिये।

( २ ) उदरामय—

चिकित्सा—पलसेटिना और सखफर घारी घारी स बना चाहिये दुबेळता और दस्त की शिकायत होतो घापना देना चाहिये, मफथूरियस की भी समय समय पर आवश्यकता होती है।

सहकारी उपाय उदरामय देखो ॥

३ - कान में दर्द वा पीव होना

चिकित्सा—घारी घारी से पलसेटिना और सखफर उपकार करते हैं।

मरक्यूरियस भी ऐसी हाखत में एक अच्छी दवा है ॥

## ४ - गाठ का फूलना

**चिकित्सा**—रस्टफस और भारनिका घारी घारी से बने से फायदा माछूम होता है ॥

मरक्यूरियस - भायोड - रस्टफस और भारनिका से फायदा न होतो देना चाहिये ॥

खमरे के निकल जाने के साथ फेंफड़े का प्रदाह (Pneumonia) एक बहुत कठिन रोग है और अकसर सांघातिक अवस्था को पहुच जाता है ऐसा होने पर रोगी को बुशियार चिकित्सक को दिखलाना चाहिये ।

## ५- दिल धडकना ।

स्वस्थ और सामाविक अवस्था में छाती के भीतर दिलका काम कुछ भी मालूम नहीं होता - इसका शब्द भी नहीं सुना जाता और धडकन भी मालूम नहीं होती, परंतु कोई बीमारी होने से इसकी खाख ऐसी बढ़जाती है कि छाती के भीतर जोर से धडकन होने लगती है ॥ कभी कभी उसका जल्द जोर से धडकना इतना बढ़जाता है कि स्पष्ट सुना जाता है । यहा तक कि रोगी भी कापने लग जाता है ॥ स्नायविक दुर्बलता, बहुत मानसिक चिंता, अथवा भावेग, फल्ल, अजीर्ण, बहुत रक्तस्राव होने के कारण दुबलता, बहुत स्नायविक परिभ्रम, दिलका दर्द, इत्यादि तरह २ की बीमारियों के कारण दिल धडकने का रोग उत्पन्न होजाता है । बहुत खाद्य, अथवा धूम्र पान करने से अकसर यह रोग देना जाता है ॥ स्त्रियों का बहुत संवर्धी गडबड रहने से भी इतना रूप देना जाता है ॥

## [१] दुर्बलता के कारण

**चिकित्सा**—चायना बहुत गच्छी ब्याह है । रक्तस्राव इत्यादि ब्रह्म को क्षय करने वाली शिकायतों से यह बीमारी उत्पन्न हो-और मुह लाल रंग का और हाथ ठंड हों तो यह ब्याह विशेष फायदा करती है ॥

**फौसफरस** - खाना में एसा माजूम होकि किसी चीज से ब्याहीगई है और उसके साथ श्वास फट और दुर्बलता, भोजन क बाद और गार्गसिक बिता से बीमारी बढजाती हो ता यह ब्याह विशेष उपकार करती है ॥

**डिजिटैलिस** - घाल कहन से या दिखने में झुखने से दिख घटकता होतो यह ब्याह देनी चाहिय ॥

**रस्टफस**—बुप चाप बैठे रहन से दिख घटकता होतो यह ब्याह बहुत फायदा करती है ।

**औरम**—बृह मनुष्यों की दुर्बलता के कारण दिख घटकता होतो यह ब्याह बीगती है ।

## [ २ ] अजीर्ण के कारण ।

**चिकित्सा** नक्सबोमिका-शराब पीने वाला और घल्लिएकारक मनुष्यों के पक्ष में विशेष फायदा करती है ।

**पखसेटिखा**—यह एक बहुत अच्छी ब्याह है मारी दिख का घटकता, इस के साथ दर्द कम बीलगा, और हाथ पैरों का कपना, बीमारी का शाम के पक्ष बढ जाना और भय के कारण जो बीमारी दुर्द होतो यह ब्याह फायदा करती है । स्त्रियों को प्रथम मृत्यु के समय अथवा मृत्यु पद होने के कारण यह बीमारी होतो उसमेंभी पखसेटिखा देना चाहिय ।



## ( ३ ) मानसिक आवेग के कारण ।

**चिकित्सा**—पेकोनाइट-मय से रोग उत्पन्न हुआ हो, दिख बहुत जोर से धड़कता हो-और उम के साथ मृत्यु का भय होना, हाथ पैरों का सुन्न होजाना, मुह गरम खाखे रंग का, जल्दी २ उसास भाना जाना, इत्यादि लक्षण होते यह दवाई दीजाती है ।

ओपियम-मय, शोक, और कोई रज की खबर सुनने से रोग की उत्पत्ति हो, तथा नाडी भाहिस्ते भाहिस्ते खलती हो और शक्तिप्रमित होतो यह दवाई उपयोगी है ।

**बेलेडोना**—मस्तिष्क में खून की विशेषता, दिख की जगह बंद और कष्ट मालूम होना, विभ्रम की हालत में दिख धड़कना, हिखने से घबरा, गले और मस्तक में छपकन मालूम होना इत्यादि लक्षणों में बेलेडोना दिया जाता है ।

यह न परिभ्रम करने के कारण रोग उत्पन्न हुआ होवे तो आर्निका बहुत फायदा करता है ।

खून की ज्यादाती के कारण रोग की उत्पत्ति होने पर पेकोनाइट और बेलेडोना दिया जाता है ।

स्नायविक कारण अथवा वायु की वृद्धि होजाने से मस्तिष्क स्पर्शजिहिया, बेलेडोना, पेकोनाइट और आरमेनिक दिया जाता है ॥

**वर्वाई खिलाने की तरकीब** । अस्थानक दिख धड़कना शुरू होतो-फौरनही दवा देने की आविष्ये और जल्दतर के माफक एक या भाव घटा के बाद दवाई देने की आविष्ये । इसके बाद थोड़े दिग तक चित्तों को तीव्र रूप करके दवा-देन से दिखबुझ आराम होजाता है ॥

**सहकारी उपाय**— रोगी को मानसिक चिंता और उद्वेग, उच्छेजक पदार्थ जैसे शराय, चाय, काफी; देर से हजम होन वाळा भोजन और सख्त मिहनत आदि छोड़देना चाहिये, रोगी को रोज प्रभात के समय ठंडे पानी से नहाना चाहिये ॥

### ७२ - क्षत अथवा घाव

**लक्षण**—चोट या और कोई घाहुरके कारण से चर्म उड़कर घाय होजाता है ॥ यह कभी जन्म सूख जाता है और कभी उसमें प्रदाह को करके बहुत तकलीफ देता है । कभी कभी ऐसा भी होता है कि जय घाव पुराना होजाता है तो भाराम नहीं होता ॥ भीतर सर पडने से या धारों तरफ फैलने से बहुत तकलीफ देता है ॥ शरीर में पारे का दोष रहने पर जल्द घाय होने की संभावना होती है और जो एकवार घाय हो भी जाता है तो जल्दी भाराम नहीं होता ॥

**चिकित्सा**—दुधार्दू चाने का असखी मतलब शरीर को स्वस्थ रखना है ॥

**साईंछशिया** - पुराने और सामान्य घाय तथा सर पडजाने, और सूखने में देरी होने से यह दुधार्दू दीजाती है ॥

**वेखडोना**—बहुत दुर्द करने वाळा घाय, और धारों तरफ ढाल रगत होने की हालत में दिया जाता है ॥

**दार्दूस्टिस** - मुंह, गळा, नाक आंख इत्यादि स्थानों में घाय, होने पर यह फायदा करती है—इसका छोशन और कुछी भाघदयका के माफक काम में लाये जाते हैं ।

**भासेनिक** - बहुत प्रदाहित और जलन करने वाळा घाय, दर पक्त खून और पतला सडा हुआ पीय गिरता, अथवा घाय के

भारतग होने में देर लगना इत्यादि अवस्थाओं में यह दवा दी जाती है ॥

है पर - सखफर, कैलफेरियाकान, सखफर, यह दवा चातु पदने के लिये उपयुक्त करनी चाहिये ॥

बहुत पीस निकलती रहने पर, चायना, मर्क्यूरिस पक्षसेटिडा, हिपरसखफर मधया सखफर दिया जाता है ॥

सड़ा हुआ घाव होने से मर्क्यूरिक, लेफेसिस, कार्बो- वेंजी, क्षीपर और सार्लेशिया देना चाहिये ।

हृद्दियों में घाव होने पर फॉनफागॉरेसिस, कटाकैलफेरिया, सार्लेशिया और मर्क्यूरियस देना चाहिये ।

यदि घाव में से खून गिरता हो तो मर्क्यूरिक, चायना, कैसफरिक, कार्बो-वेंजी, सखफर और मर्क्यूरियस दिया जाता है ।

उपद्रव यानी गरमी के कारण घाव हों तो मर्क्यूरियस नाइट्रेट पेसिड और घृता- वि. जाते हैं ।

परे खाने के कारण घावों के लिये—नाइट्रेट पेसिड और और देना चाहिये ।

**सहकारी उपाय—**कैल्शियम लोशन बनाकर (पेकमान मैकेडुला और अमोनिया) घाव की जगह को अच्छी तरह धोना चाहिये । घाव की जगह के घावने वाली पट्टी को खोलने तक, पहले पानी से तर कर लेना चाहिये । ताकि खून न निकल जाये सखफरकता के अनुसार रोज मधया दिन में दवा दफे घाना चाहिये । पीसिन स्पान का पूरे तरह भारतग देना बहुत जरूरी है । देर में घाव होने से घूमना मधया पैर लटकता कर बैठना एक बम गिनिय है । हृदके और पुष्टि कारक भोजन करना चाहिये मच्छी, मांस, बहुत दूध और गीदा गिनिय है ।

घाग पर बाहें जैसी गरम गरम लगाया अनुचित है, घाग की जगह को खुला हुआ बिनाकुल नभी रखा चाहिये जितना साफ रफता जायगा उतनाही जलता घाग सूज जायगा ।

## ॥ तृतीय अध्याय ॥

### ( १ ) ॥ हड्डी टूटना ॥

**लक्षण**— गिर पडने से हाथ पैर में जोरसे चोट लगने के कारण हड्डी टूट सकती है । हड्डी टूट जाने से शरीर का एक हिस्सा टडा लगवा छेदा जाजाता है और टूटी हुई हड्डी की जगह के दागे गरफ, दागा हाथों से पकड़ कर हलाम से दागे हिस्से मजबूत गालूग पडते हैं यदि इस तरह से ऐलावा जाय तो टूटी हुई हड्डी क ब गा मिर एक वृत्त से लगकर एक तरह का घाटा करग है, इसी घाटे से ठे क गालूग पडजाता है कि हड्डी टूट गये है, इसके लक्षण्य उम जगह में बडा सूज हाता है और घाकि शून्य गालूग पडता है ।

**चिकित्सा**—हड्डी टूटने ही उस जगह को अच्छी तरह जोर से पकड़ कर टूट हुए दागे टुकडों का परस्पर एक वृत्त में गिना कर टूट हुए जगह को दागा गरफ पगडा लाग गरभूत वा लकड़ी की गचरो ( Splint ) मजबूत कर छोट पर बांध देगा च रिये । यमा कान के पाश् पसी गरवीय गरहना चिकित्सा जिन से कि हड्डी का जाड हिलने से पाग इसके खिसे गरहना उपाय गरहने क गरव में एक पट्टी बांध कर इसमें हाथ का छरफाय रखा जाहिये । यदि पैर टूट जाय और उस वक्त गरहनी छरफटी की गरनी [ Splint ] से गिख ना गरहनावाले छरफे या छरी जा कुछ गा गिख सके टूट हुए र्थाग का गरहनी तरह जाड कर उस पर वा ठान

रुमादा से फसकर या घ घेना चाहिये । घांभने वक्त खूब साफघनि से घांभना चाहिये क्योंकि बहुत जोर से खून घांभने से की खाज रुफने का अदेशा होता है जिस से कि यह जगह फूज उठती है और बहुत तकलीफ देती है । जब तक हड्डी अच्छी तरह से जुड न जावे जब तक हाथ पैर चखाना न चाहिये, और छफडी धभी रखनी चाहिये ।

खाने की दवाइयों में सिफाइरम बहुत ही उमदा दवाई है दिन में २३ बार खाना चाहिये ।

यदि प्रदाह होतो पेफोनाइट अथवा वेलेडोना दियाजाता है ।

हड्डी में तेज दर्द होतो पेसिड फौसफरिक अथवा मैजेरियम देते हैं यदि हड्डी जुडने में देर खगेतो कैलकैरिया और सांखे-शिया उमदा दवाई हैं ।

## २ कान या आंख में कीडा घुसजाना ।

कभी कभी आंख कान इत्यादि स्थानों में कीडे घुस कर बहुत तकलीफ देते हैं । आंख में किरकिरी, [ कंकड या रेत ] छोटाघाछु अथवा कीडा आदि कुछ गिरपड़े तो उस आदमी को बैठाकर उसके पीछे खड़े होकर आंख के ऊपरसे पलक पर एक पेंसिल खगाकर बिन्तूनी [ पलक के नाख ] पकडकर धीरे धीरे पलक को उखट देना चाहिये ॥ यदि आंखके नीचे के पलक में कोई चीज गिरपड़े तो यह आसामी से निकाल लीजासकी है ॥

आंख में यदि सफेदी गिर पड़े तो पानी नहीं खगाना चाहिये । आंख में गिरी हुई चीज निकल आने के बाद कैलकैरिया खोशन में कपडा भिगोकर उसके ऊपर रखना चाहिये, और आध आध घंटे में पेफोनाइट देना चाहिये ॥ आंख में यदि कोई चीज गिर पड़े तो उसकी रगडना नहीं चाहिये ॥

काम में यदि फीडा गिर पड़े तो तेज गरम करके काम में डालने से फीडा मर जाता है ॥ तेज को गरम करने के बाद उंगली से देख लेना चाहिये - इतना गरम न हो कि काम में जलन महसूस होने लगे - यदि और कोई चीज काम में गिरपड़े-जैसे किसी फलका बीज, कौड़ी, और पेंसिल का छोटा टुकड़ा इत्यादि तो उसको बहुत होशपारी से चीमटी से निकाल लेना चाहिये ।

### ३ - कीड़े का काटना या डक चुभाना

चिकित्सा--कीड़े या घरे, तैया भादि के डक मारने से अक्सर डक चमड़े में रहजाता है ॥ सुरे, चिमटी, या चाबी के छेद के बीच में डक की जगह को धवाने से डक ऊपर उठ जाता है । इसको याद नाखून से पकड़ कर डक को निकाल लेना चाहिये ॥ डक लगने या काटने की जगह में घुने का पानी, कपूर का मरक, या प्याज का रस लगाने से जलन कम होजाती है ॥ भार्मिका अथवा खेडम के पेस्ट्र के छोशन को उस पर लगाना चाहिये ।

### ४ - चोट लगकर खून जमजाना ।

चिकित्सा--दो चार खुरक भार्मिका की पानी चाहिये । चोट लगते ही भार्मिका छोशन लगाने से उसमें न दर्द होता है और न खून जमसका है ॥

यदि खून जमकर भीखा होजाये तो मोमेक्सि उगदा द्याई है ॥

### ५-चोट से कुचल जाना

चिकित्सा--खमडा नरडे और चोट लगकर यह जगह कुचल आवे तो गरम भार्मिका छोशन में खरे, लिट अथवा कपडा मिगो

कर उस जगह रक्तना चाहिये। यदि दृष्टी में चोट लगे तो रुंटा, और लग नस्यवा किसी गाठ में चोट लग ना फोनागाम देना चाहिये यदि प्रदाह होने लगे तो एकागाहट देना चाहिये—जितने दिन तक यह जगह फूली हुई रहे तब तक उस जगह का स्थिर रखना आवश्यक है।

## ६-जल जाना या जलने से घाव हो जाना

जलना तीन प्रकार का होता है (१) मामूली जलना, इस में ज्यादा खुग आजाता, चगड़े में प्रदाह और लाल रंगन होजाता इयादि होता है। परंतु फफाला नहीं पड़ता। (२) फफोली पड़जाता और चर्म में प्रबल प्रदाह उपस्थित होजाता।

(३) लख कर घाव आजाता, और उसका गलकन तुर्गंध युक्त होता। इस में कभी तसक चमड़ा और कभी कमी चगड़े के नीचे गास तक का क्षमर पहुचता है—नीमर तरह के जल जाग स यह क्षमर स घातक होजाता है। हाथ पैर जलने से उस का कारण गरम पानी में डुबाने से जल्दी जलना गिट जाती है।

चिकित्सा—यदि और कोई जगह में जलनाये तो पौरण उस को नई में टंक देना चाहिये।

अगर हुए जगह में हवा नसकुल नहीं लगना चाहिये। एतुन जगह में यदि चालजाय तो चर्मका एक थग नहीं खाकना चाहिये—थार्ड गाली जगह स खाल कर साफ करके धावें टक देना चाहिये।

जब तक घास न प्राणी हो तथा जब तक रोगी को बंधन मामूम यथा हो, तथा रुई मैला नहो जाय तब तक अखी हुई जगह

शोषण नहीं चाहिये। क्योंकि जहाँ हुई जगह जितनी कम साखी जायगी उतनी जल्दी चगड़ा प्राम खगेगा।

यदि थोड़े थोड़े फफोले पड़ जायें तो सुई चुताकर ठगफा पानी बाहर निकाल देना चाहिये। लेकिन इतनी बुझगी रखनी चाहिये कि फफोले का अमड़ा न लकड़जाय। घाय पुराने के समय इसबात का ध्यान रखना चाहिये कि फाइलिंगमक(टका नरानाये।

एकही जगह जलकर गहरा होजाना से ऐसा साधातिक नहीं होना जितना कि बहुत दूर तक जलन से होता है।

जगान की दवाई — एकभाग कार्बोसिलिक एसिड और ६ भाग कैल्श के मल को मिलाकर और उस में सर भिगोकर जल्दी हुई जगह पर लगाना चाहिये।

गामूचा जलन पर कार्बोसिलिक एसिड या बेनोयलिन छोशन लगाने से प्रारण होजाता है। चूनेका पानी और नार्मल का लेख लगाने से भी बहुत जल्दी कायदा हुआ है। जलनजाने के समय यदि तराती का नत्र या गरम फ रण खगायी जान तो जल्द जलन मिट जाती है परन्तु साखी से यदि घाय माछूग पड़े तो नार्मलका लेख लगाना उतने बेखनदूना या अण्टीक। यूरेम मिखाकर लगाना चाहिये। यदि पीप पड़जाय तो उसको धाखा-खना चाहिये। सक जल्दी हुई जगह को पानी से धाकी जरूरत नहीं है।

जान की दवाई - गामूची जलने के विषय और सग हासों में दवाई लिखागी चाहिये। शुरुवा में रेफार्गार्ड दने से बुनार जलन भार दूर फ रण मिटजात है। बहुत ज्यादा घाय होने पर जयपः एना माछूग हात पर कि सड जायगा प्रारसेनिक दना चाहिये। य की ऊपर लिखी हुए हासों में सिकसो और फाय पेजी टेबिडिस दिया जाता है।



## ७ - जहर खाना

जहर अथवा जहरीली चीज खाई है ऐसा मालूम होने से ही पिछकूल समय नष्ट न करके फोरन अच्छी चिकित्सा का यत्न-  
वस्त करना बहुत जरूरी है। क्योंकि देर करने से रोगी के जीवन  
के सशय होजाता है ॥

अगर कोई दो तरह का जहर खावे तो उसके खिये दो तरह  
के उपाय करने चाहियें जहर खाया है ऐसा जानने सेही बहुत सी  
उलटी कराने की दवाई देनी चाहिये ॥

किसी २ जहर के खाने से उलटी कराना उचित है और  
किसी २ में शुरू ही शुरू में उलटी कराने वाली दवाई देनी  
उचित नहीं है किस तरह के जहर में उलटी कराने वाली दवाई  
देनी चाहिये और किस तरह के में न देनी चाहिये इसका ज्ञानना  
बहुत जरूरी है।

१— जब मुंह और होठ इत्यादि स्थानों पर जखन या घाव न  
रहे तो उलटी कराने वाली दवाई देनी चाहिये।

२— और जिस जगह ऊपर लिखी हुई दवाइयें सब मौजूद हों  
यहां उलटी कराने वाली दवाई नहीं देनी चाहिये ऐसे मोके पर  
चूने का पानी अथवा पानी, में खडियां मिखाकर या मेगनैशिया  
घोलकर पिखाना चाहिये अगर ये चीजें न मिलें तो राख  
या साधुन पानी में घोळ कर दिया जाता है। इस खोगों के देश में  
अक्सर खोग अफीम खा लेते हैं यह मालुम होते ही ऐसा बन्दो  
वस्त करना चाहिये कि रोगी सोने न पावे जिसने अफीम खाई  
है वो यदि एक बर्फे सो जाय तो फिर जगाया नहीं जासका। यह  
मिखय हमेशा के खिये सो जाता है। इसखिये ऐसा काम करना  
चाहिये कि रोगी सो न सके दो भादमी रोगी को दोनों हाथों

स पकाट कर लूय दोढ़ायें तो नींद से रखा हो सकी है। इस तरह  
 ने दोढ़ाते २ जय रोगी की निद्रालुता हट जाय तब उसको  
 बैठने देना चाहिये। पहल उलटी कराने वाली दवाई देनी चाहिये  
 अथवा सोमकर्मप द्वारा पाक कस्थली से अफीम निकालने की  
 कोशिश करनी चाहिये तृतीया, नमक, राई, अथवा पिस्ती बूरे राई  
 को गरम पानी में मिलाकर पिछाने से फौरन उखटी होजाती है।  
 अफीम के जहरको रोकने खाकी दवाई टिन्चर वेखेडोना है  
 हर पन्द्रह मिन्ट में दस-दूई देनी चाहिये गाढी काफी ( कड़वा )  
 भी फायदा करता है।

### । ८- मोच ।-

असाध्यधी से पैर रखने से वा एक दम कारं चीज उठाने  
 से हाथ पैर में मोच भाजाती है। मोच की जगह में बहुत दर्द  
 होता है और सूजन भी आजाती है।

**चिकित्सा** — जयतक सूजन और दर्द में कुछ कमी न हो  
 तयतक गरम जलमें डुबा रखना या गरम जल से सेकना चाहिये।  
 जल ठण्डा होजाने पर उसमें और गरम पानी मिलाता रहे, मोच  
 की जगह को बिलकुल नहीं दिखाना चाहिये। और अथस्था के  
 अनुसारमार्मीका एकोमाईट, रसटकम, रुटा वा हाइपेरीकमखोशान  
 में कपडा मिंगो कर दर्द की जगह लगाया चाहिये इस के साथ  
 ही साथ आरमिका, वा रसटकस पीने को देना चाहिये। दर्द कम  
 होने पर चाहिये २ थोड़ा २ हाथ पैर दिखाने की कोशिश  
 करनी चाहिये। जयतक दर्द कम न होजाय हाथ पैर से काग  
 नहीं लेना चाहिये। जयतक दर्द बिलकुल न जाता रहे और हाथ

पैर में फाग छेना शुरू करेवे से आराम नहोकर गठिया की तरह होजाता है ।

गारतिका — मोचक साथ यदि यह जगह फुचल जाय या गूँस इफटा होकर नीखा पडजाय तो यह दवाई देनी चाहिये।

पेंफोगार्ड — उष्ण, लाल रङ्ग, सूजन, इसके साथ रज्ज्वर, प्यास, और येचैनी इत्यादि होतो यह दवाई देनी चाहिये ।

रसटफस — मोच आना इसके साथ सूजन, बहुत दर्द होना विभ्राम करने से दर्द का घटना, और हिलाने झुखाने से कम होना इत्यादि हालतो में यह दवाई दी जाती है ।

फोई मारी चीज उटाने से, पीठ में जोर से लगने के समय मोच आजाये तोगी यह दवाई फायदा करती है ।

हाइपेरीकम — इसका असर रसटफस के माफिक है लेकिन जब छाथुओं के ऊपर असर होतो यह बहुत फायदा करती है ।

रोग अगर पुराना पड जायतो नीचे लिखी हुई दवाई देना चाहिये — कैल्कोरियाकार या फसफोरस ( जोड़ों की कमजोरी ) (ग्राईयोनिया,) हिलाने से दर्द का घटना आयोडियम ( जोड़ों में रस इफटा होजाता ) ।

## । ६- मस्तिष्क में चोट लगना ।

गिरने से वा स्त्रिमें चोट लगने से मस्तिष्क की क्रिया में गड़ बड़ होने से उसको मस्तिष्क घात कहते हैं । सामान्य चोट लगने से मस्तिष्क स्थिर रहजाता है और जियादा चोट लगने से प्रायों का सशय भी होसका है ।

मस्तिष्क में जोरकी चोट लगने से तीन तरह की हाखत देखी जाती है ।

प्रथम-हाथ पैर ठंडे होजाना, शरीररक्त शुभ्य, नाडी और

स्नासक्रिया घुसक, मात्र की पुतली बढी हुई, यह हालत एक घंटे से लगाकर तीनघंटे तक रहसकी है

दूसरी-रोगीका धेंचेत कराहना, डभर उभर करघट लेना, और उखटी करना । रोगीको भाषाज देनेमे रोगी जगता है और भाषाज देताहै । यह हालत कई घंटे तक रहसकी है ।

तीसरी-बेहोशी वा निद्रा की अवस्था-जैसे नाडी पूर्ण और अनियमित, सरीर गरम, वेधरा छाछ, आंखकी पुतली छोटी और रोगी का गहरी नींद में सोना । रोगी को ईंस नींद से जगाना सहज नहीं है । यह हालत एक दिन से लगाकर सप्ताह तक रहसकी है ।

चिकित्सा—यदि घरसे कुछ कासिके पर पेसी दुर्घटना हो तो रोगी को घर छाते समय जितनी होसके इसघातकी चेष्टा रखनी चाहिये कि रोगीपर भावसे रहे अर्थात् बहुत हिंसे झुके नहीं - पालकी में अथवा हाथों पर आदिस्ते आदिस्ते ठाना अच्छा है । रोगी को अच्छी तरह से आराम से सिर नीचा कर के सुलाकर केवल खूप उदावेना चाहिये, ताकि शरीर की गरमाई कम न होने पाये । रोगी को सपूर्ण विधाम करनेदेना चाहिये । कोई घात पूरना, आहट करना रोशनी इत्यादि नकरनी चाहिये । जिससे कि रोगी को थुरान मालूम होवे ।

प्रतिक्रिया जब-शुरू हो तब माथे और कंधे के पास थोड़ा ऊँचा कर देना चाहिये । ठंडा और एकान्त स्थान रोगी केलिये बहुत उपयोगी है । २) सप्ताह तक ज्यादा होद्वारी रखनकी अवश्यता होती है । सब तरहका मासिक धम और बिना पिसकुछ वर्जित है ।

चोट लगतेही धार्मिका देना चाहिये । यदि होय होने क

साथ साथ ज्वर आजावे तो आर्निका के साथ एकोनाइटवारी वारी से दिया जाता है। यदि घिकार के लक्षण उपस्थित हों यथा सिर में दर्द, चहरे की रगत लाल, इत्यादि तो एकोनाइट और वेलेडोना वारी वारी से देना चाहिये। वसास खेत में घराटा होताहो और, कन्ज इत्यादि हाखतों में औपियम दिया जाता है। और यदि रोगी बकता होतो-हायोसायेमस दिया जाता है। अवश्यकता के अनुसार १-२-अथवा ३-घटे के अंतर से द्वा देना चाहिये।

## १०-मूर्च्छा

अनेक कारणों से मूर्च्छा होजाती है। गिरना, चोट लगना, असह्यप्रणया, शोक, बहुत ज्यादा रक्तस्राव, और बहुत आश्चर्यों के एकही स्थान में भरजाने के कारण वायु दूषित होने से मूर्च्छा होजाती है। अफसर ऐमा भी देखागया है कि जिन की स्नायुषिक दुर्बलता होती है उनको कोई कष्ट कारण दृश्य देखने से जैसे यकरा फाटना या किसी कोठे में खीरा खगाना ऐसे कारणों से भी मूर्च्छा होजाती है।

मूर्च्छा हुई है कि नहीं इस बात को नीचे लिखी हुई रीती से निश्चय कर लेना चाहिये-वगल में हाथ रखकर रोगी के शरीर का उर्त्ताप देखना; आँसू कीहालतया छाती के ऊपर फान रखकर दिख की थड़कन का मालूम करना; मुँहके पास एक साफ काच रख कर मुँह देखना कि उस में किस तरह माप खगती है। और नाक के पास पक्ष रखाकर देखना कि वह कितनी दिखती है। इन सब लक्षणों के देखने से मालूम होजायगा कि मूर्च्छा हुई या नहीं।

मूर्च्छित मनुष्य को एकांत खुली हुई जगह में लाकर उसकी छाती, शरीर, गले, और कमर के कपड़ों को थिलकुल खोल दे या ढीला करदे और सिर नीचा करके झुलावे। आँसू, छाती और

सिर पर ठंडे पानी के छींटे लगाये और नाक के पास कपूर के भरफ को रखकर सुयाये ।

अधिक रक्तस्राव के कारण मूर्च्छां होतो थायमा, मानसिक उद्वेग जैसे शोक, इत्यादि कारणों से होतो इमेरिया और मय के कारण होतो औपियम वना चाहिये

### ११-घाव या कट जाना ।

किसी जगह कटजाने से नीचे लिखे हुए नियमों पर दृष्टि रखनी चाहिये ।

(१) खून गिरना बंद करना चाहिये । इसका इलाज कई तरह से होसकता है जैसे — कटी हुई जगह को जोर से दाबने से, ऊधी उठा कर रखने से, और ठंडा पानी वा भरफ लगाये से इत्यादि । यदि कोई सिर या घमनी कट गई होवे तो खून बड़े जोर से निकलने लगता है पसी दाखतों में सिरया घमनी का मुह बांध देना पड़ता है ।

घाव की जगह में कैलेंडुला खोशग लगाना चाहिये इससे खून गिरना और पीव पड़ना रक जाता है ।

(२) कटी हुई जगह को या घाव को खूब सावधानी से धोना चाहिये । जिस चीज से कट जाता है वा ओ चीज छुम जाती है वही अक्सर घाव के भीतर रहती जाती है बांधने से पहले कोई मैख, वाख, काचका टुकडा, कांटा, वा फास यदि रहगई होये तो उसको निकाल डखना चाहिये ।

(३) कटी हुई जगह के दोनों हिस्सों को मिखाकर बांध देना चाहिये क्योंकि इससे शीघ्र मुह खुलकर घाव मूल जाता है

(४) कटी हुई जगह को स्थिर रखना चाहिये हाथ पैर कट जाय तो टहलना वा कोई काम करना निषिद्ध है ।

( ५ ) घाघ को रोज धोना चाहिये - धोने के समय धोने से पहिले जो पट्टी बधी हो उसको तथा घाघ के ऊपर के कपडे को खूब गरम पानी मे तर करलेना चाहिये पीछे सावधानी से उसे खोलते, यदि ऐसा न करके जल्दी से और ओर से यदि पट्टी खोलहाली जावे तो रोगी को कष्ट होता है, बहुत खून गिरने लगता है और घाघ के सूखन में अड़चल पडजाती है ।

**चिकित्सा**— फैलेडूखालोशन से घाघ को धोकर कैलेंड्रबा की मलुम या फैलडूबा में नारियल का तैल मिखा कर लगाना चाहिये ।

ऊपर की दवाई लगाने के सिधाय बाच २ में दवा खिलाने की आवश्यकता भी पडती हैं एफोनाइट और आर्निफा घारी २ से दोसे अफसर बहुत फायदा होना है ।

यदि घाघ बहुत बढ़ करता हो और इधर उधर सूजन आगई हो तथा मस्तक में रक्त की अधिकता के कारण दर्द होता हो तो बेलडोना देना चाहिये । घाघ यदि पकजावे तो हीमर सखफर । और सूखने में देर लगे तो साइबेरिया दिया जाता है जरा कुछ लगजाने से ही घाघ में से खून निकलने लगे तो एफोनाइट, आर्निफा, चायना, और फासफरस दिये जाते हैं ।

यदि घाघ में बहुत राध पडजावे तो चायना, मर्क्यूरियस, एलसेटिजा, सखफर और हीपरसखफर देना चाहिये ।

यदि घाघ सडजावे तो -मांसीनक, चायना, कैफोसिस, साइबेरिया, और कार्बो-वेजीटोसिस देना चाहिये । यदि किसी गांठ पर घाघ होवे तो -कोनायम, आयोडियम, फसफोरस, हीपरसखफर और मर्क्यूरियस दिये जाते हैं ।

## ॥ चतुर्थ अध्याय ॥



### । सञ्चित भैषज्य तत्व ।

पदत्रय अष्टाव्यो में रोगों का वर्णन और चिकित्सा लिखी गई है; इस अध्याय में भावद्वयीय ५० द्रव्यों के लक्षण, गुण, और पद प्रायः कित २ रोगों में दी जाती हैं इस को सम्मेलन रीति से लिखा है।

१—आर्सेनिक-सर्दी, दमा, श्वासकष्ट, के साथ सर्दी में करने पाखी आंसी, इत्यादि, उषर, यथा सपिराम, यिकार, बहुत प्यास और दुरवस्था, उन सब रोगों में तथा अस्वस्थानों में जिन्हें बहुत दुरवस्था हो, जिवन शक्ति का कम होता, नाड़ी धीमा, तथा विस्तृत प्राय इत्यादि सङ्घातक लक्षण हों। हैजा, पेटकी पीमारी, विशेष कर उसके साथ अज्वन, और कमजोरी रहने से, उदरामय दस्त पानी के समान रक्त का हरा और जखन के साथ चर्म रोग विशेष कर सब तरह की खुदक कुम्भी, जिन्हें बहुत पतला रस पड़े और अज्वन हो, पुराना घाव, उस में अज्वन, रस युक्त, और पतला या दुर्गन्ध युक्त स्राव हो, शोथ इत्यादि

२—आर्निका — इसका प्रधान व्यवहार चोट लगने से जो घाव होती है उनमें ही होता है गिरने या चोट लगने से घनुशुक्र, मस्तक या और किसी जगह जोर से चोट लगना, बहुत परिश्रम के बाद शरीर में दर्द, गटिया का दर्द, यकावट प्रभय के उपरान्त यह औषध बहुत उपकारी है।

ऊपर लगाने को— चोट, कुचल जाना, घड़े से चोट, चोट लगकर काँटा पड़ना, चोट लगने तथा कुचल जाने के बाद



फौरन ही यदि यह दवा लगादी जावे तो काखा पटना, दर्द, और सुजन कुछ नहीं होती। इस दवा की २० घूट एक छटाक पानी में मिखा कर खोट लगने की जगह पर कपडा भिगो कर रखना चाहिये। और एक सूजे कपडे से उसे ढक रखना चाहिये। इस के साथ २ मारिनेका ३ कम पिखावे।

३-इपीका- अक्सर खास और, परिपाक, यत्र के रोगों में व्यवहार होती है। श्वास रोकने वाली आक्षेप युक्त खासी -- गले में सुरसुपट, कभी २ कै होना दमा, विशेष कर रात्री में हूपिंग खांसी, परिपाक यत्र के रोग, उदरामय हो या नहो लेकिन जी मिचखाता हो-और उल्टी होती हो, पेट में दर्द, मामाशय (पेटिया) रक्त स्राव, खून उज्ज्वल खाख रक्त का, उसके साथ उद्रेग, खहरा रक्त शुभ्य और उल्टी इत्यादि।

४-इमेसिया-शोक से जो रोग उत्पन्न हों और जो पुरुष अथवा स्त्री जरासी बात में उदास और दुखी होजाते होंतो उनके लिये विशेष उपकारी है। स्नायविक कारणों से सिर में दर्द, मूर्च्छागत वायू (Hysteria) शोक, दु ख, निराशा, विरक्त के कारण आक्षेप भाव में इसके साथ ऐसा मालुम होना जैसा कोई गोख खीज गले से निकल आती है, जघानी आरम्भ में गधवा कृन्दाधस्या में ऋतु बन्द होने के समय, स्त्रियों को तरह २ के रोग उत्पन्न होना, फीलों के कारण यक्षों को तकलीफ, फाँव निकलना इत्यादि।

५-एकोनाइट-यह दवा होमियो पैथिक में सधे प्रचल है क्योंकि पेसी कोई नई बीमारी नहीं है जिसमें यह थोड़ी बहुत नहीं दीजाती ही। प्रयोग व्यवहार --सधे तरह का पुकार और मदाए में विशेष कर शुद्ध में।

प्रधान लक्षण; — प्यास, गरम और सूया शरीर, पहले ठंड और कंठ पीछे ज्वर; नाड़ी पूरा और जल्दी जल्दी चलने वाली; घबेरी, उद्वेग, मृत्युभय, अहंराजाह, दह, अर्द्धी और तदाक्षीफ से सांस लेना, ज्वर के साथ सूखी खासी, घोडा और हाथ रंगत का पेशाब, और सर्दों, ( प्रथम अवस्था ) इत्यादि ।

६—**एंटिम टार्ट** । इसकी प्रधान क्रिया श्लेष्मि क्लिष्टी, फेंफड़ा और चर्म के ऊपर होती है । घ्रांटे की आयास के साथ खासी, वमा, पुगरी खासी, फेंफड़े का प्रवाह इत्यादि, माता ( वंचक, ) उन्टी, उस के साथ ठंडा और एक हीन बुद्धि शरीर रहना । यंत्रों की घगटे के साथ खासी, छाती में फफ भरा रहे परन्तु सामी के साथ कफ गतिक्रम, भयानक श्वास कष्ट इत्यादि अवस्थाओं में यह बहुत ही उत्तम दवा है ।

७—**एंटिम क्रूड** — इसकी क्रिया पाकाशय और आंतों कि द्रव्यमा की क्लिष्टी के ऊपर इस की क्रिया है । दुर्गंधयुक्त फट्टी प्रकार भागा, जीमिच्छामा, और उन्टी होगा, दुर्गंध यायु निकलना, भूख न लगना, पर्याय क्रम से कब्ज और उदरामय, श्वास निकलना, मूत्र खीसी रगत की सफेद कीम, परिपाक शक्ति ( हाजमे ) का कम होना ।

८—**ऐपिस** । शरीर के मध्य स्थानों में सूजन और घोष, आमयात, स्वरगत और सूनी खासी, और इसके साथ . पेशाब कष्ट, बार बार हाजत हो परन्तु पेशाब न होताहो, विकारज्वर ( याय ) ठहठहठ कर जोर से बिछा पटना ।

६. ऐसिड-नाईट्रिक । गरमी तथा पारेके बहुत इस्तेमाल से रोग उत्पन्न हो, हड्डी अथवा गाठों की बीमारी, चर्म और श्लेष्मा निकालने वाली फिस्सो यों घाव ।

चक्षुषाह, सर्दी, छाती में दर्द, डिफ्थीरिया ( Diphtheria ) आंशों से खून निकलना, स्वेन प्रदर, अर्प, प्रमेह, गठिया, इत्यादि रोगों में यह दवा सर्वथा दी जाती है ।

१० — ऐसिड - फौस । बहुत द्रव सेवनसे रोग, इन्त गैथुन, शोक और दुःख से उत्पन्न पीडा । हड्डीयों का क्षय और उग में घाव, गाठों में दर्द, मुर्च्छागत त्रायु, अजीर्ण, पुराना उदरामय, ध्वजभंग, स्वप्न दोष, डिम्बाधारप्रदाह, अरायु-प्रदाह, बहुत रजस्वाय अथवा इन्त प्रदर, पेशाब में शकर और घट्टमूत्र आदि पीडा में उपकारी है ।

११ — ओपियम — बहुत ज्यादा कब्ज, पेशाब रूद्ध होना, भ्रूणमय अथवा मानसिक बिता, स रोग उत्पन्न हो उनमें में, सर्दीगर्मी, गले में घर्गटे के साथ सांस आना और निकलना, विकारज्वर, रोगी निद्राही में पड़ा रहता हो, और बेचेतना हो, शारीरिक और मानसिक निम्नेजता, पैजा से एक दम रुन् रुद्ध होकर पेट फूलजाना इस-के लिये यह महोपघ है । तद्रा दोष ओपियम का एक प्रधान लक्षण है ।

१२ — कैमोमिला — बच्चे तथा स्त्रियों की पीडा, पायु रिच, और जरायुत्र बीमारियों में, घापट, दांत निकलने के समय, कोचके कारण अथवा पेट में दर्द होनेके कारण; स्नायु छल, दांतों में दर्द, रात्रि में दर्द और पैजा माष्टम होकि दांत अग हो- गया है, बच्चों के दांत निकलने के समय पीडाओं में; पक्षाघातों का

उद्दामय, हस्त पतला, आम के साथ दहा या पीली रगत का; दाँत निकलने समय उथर, घब्रौंकी सर्ती या खांसी स्त्री रोग तथा ऋतू शुद्ध, गर्भोपस्था की पीडा प्रसव के उपरांत बर्ह इत्यादि ।

१३-- काली- वाइक्रान्तिकम्— श्लेष्मिक फिस्त्री और खगड पर इसकी क्रिया है पुरानी खासी, कफ गोंद के मज्जा, कफ मासानी से नहीं निकलता हा खर मज्जा, गाक की धीमारी, गर्मी के जहर के कारण आँखों के रोग, पुराना मजीर्य रोग, उसके साथ छाती में जडग, डकार, कडुवा स्वाद, जीम मोटी और पीली ।

१४-- कैफिया-- हृयं अमित रोग, घब्रों का रोग, निद्रा न आना जगने पड़े रहना, बहुत ममाद्य प्रसव, तथा इसके उप-  
र्यंत दर्ह, धारू प्रधान सब लक्षण। पश्य कर बचे और छियों के

१५-- केल्लेकरिया कार्वि गण्डमाखा के जहर के

कारण उतपन्न हुए सब रोगों में; गले की गाँठो का फूटना, दाँत निकलने में दर होगा और तख्तीफ से दाँतनिकलना। पदगान, कामों में शब्द, फान से गीप निकलना, पुराना उद्दामय खांसी और उसके साथ गाँठो और यदधुसार कफ; गन्ना यदजाना, स्त्री रोग विशेष कर अगको बहुत वेर में श्रुतु हो, और सूा बहुत गिरना हो, पत्थान, श्वतनदा हड़्डियों की धीमारी, माभास्य सरह स, स्त्रियों का घब्रों को, पुरानी धीमारी में दिया जाना है

१६ — काँठो गनेटोयोक्षन — परिपाक र्थत्र क रोग, गोंडा के उपरांत कफ गालूग होना, पेट फूला, और उसके साथ छाती में दद, आँर खटपण, दुग्ध घाय निकलना, उद्दामय, मर्ह पेट, के कीड़े, पुराना आगपात, खर मज्जा, गुमची,

घदबूझार सदा हुआ घाव, हैजे की मखीरी हावत में जब नाकी  
पैठ जाती है और रोगी निपपन्न होजाता है; और पेट फूल जाता  
है तब यह बहुत उत्तम दवा है ।

१७ -- कौलोसिन्थ -- पेट में दर्द, शूलः स्नायु मूक  
रखादि ।

१८ -- कैन्थेरिस -- प्रक्षय यन्त्र की पीडा, रक्त घ्राव,  
वेशाय में बहुत जलत गुलाबी रक्त का पेशाव; हैजे में पेशाव पद  
होजाता ।

१९ -- कैलेडुला - यह दवा अकसर खगाने के काम  
आती है घाव किसी तरह का भी होवे पर्याप्त चाहे फटजाने से  
हो, चाहे अस्तर लगाने से हो-कैलेडुलाखोशन खगाने से पीप नहीं  
पडती है और शीघ्र आशाम होजाता है ।

यदि कोई जगह फट आवे तो कैलेडुलाखोशन खगाने से  
रक्त घ्राव पद होजाता है । दर्द मन्दा पड जाता है और पीप न  
पड कर घाव जल्द सूख जाता है । चार्स भाग पानी में एक भाग  
कैलेडुला मिखाकर खोशन बनाया जाता है । घाय पर लगाने  
को इसका मरहम भी उपकारी है ।

२०-कैम्फर-- सर्दी की प्रथम अवस्था में हैजा कोई  
कारण से मूच्छा मूच्छांगत वायु में अथानक स्नायुविक  
दुर्वलता हैजे की शुरू हावत में ही पांच घूँट अर्कैफूर बीनी के  
साथ १५-१५ मिण्ट के अन्तर में लेना चाहिये । यद्योशी के समय  
इसको छुपाने से होश होगा है । कपूर सब होमियो पैथिक दवा-

गुण गट करना है। इस लिये इसको अलग रखना । बहुत से होमियो पैथिक दवाइंवाले से यदि कोई हुआ हो तो घोड़ा कपूर का बर्क खिलाने से उसका र जाता रहता है।

—कूपम— स्नायु विघान पीड़ा यथा माक्षेप; मस्तक में है, मिरगी; हँसे में अगुलिये का पायटा और उल्टी, हृयिग सिंसी असह्य पेट में दर्द उसके साथ हुयखापन और चहरे का लडा रङ्ग ।

२२ चायना — रक्तश्राय, पुराना उदरामय, अधिक पीष निकलना, अधिक यिषय मोग, बहुत दिनों तक आखर को न दूध पिखाने से जो एक प्रकार निर्मलता की पीडा होती है। का होना, सधिराम ( अन्तर देकर होनेवाला ) ज्वर; पारीज्वर धेक पसीना का निकलना; उदरामय ( भीष्मप्रदु का ) गी के समान दस्त हो; पीखा रङ्ग लिये हुये हो; कभी कभी अजीर्ण पदार्थों के साथ हो, भूख नखगती हो पेटफूला हो।

कामला ( पीलिया ) फूहा, स्वप्न दोष

( सोते हुये हीर्य पात ) विशेष कर इन्द्रिय दोष में आपना का व्यवहार करना बहुत ही खाम दायक होता है।

२३ जलसिमिनिम् -- एकोनाइट या वेखेडोना जिस अ-क्षय में दिया जाता है बीच बीच उन्ही में यह भी दवा व्यवहार होती है। स्नायु रोग — पक्षाघात, शीत नहोने पर भी कायना घरी घामनी, जब इस में एकोनाइट कुछ उपकार नकरे तब, घालकों को मीद नभागा, अल्प चिराम ज्वर, वेखने की

शाकी का काम होता, मस्तक का घूमना, शीत उठने के समय में जो खड़को को रोग होते हैं उन में, और विछैला पर मृतता आदि में जखसेमितिमा उपकार करती है।

२४ ह्रीसेरा— हृषिके आसी, उसी के साथ स्वांस के रुकने वाले क्षणया, धमन या गांफ से रक्त का गिरना, ( इपीकाक और घेखेहोगा देगे के पश्चात ) आलेपिक खांसी, गले के भीतर घुर घुराहट का होना, यमन मथवा सारि सारि शब्द का होना, या स्वांस रुक रहा है ऐसा मालूम होतो-इस औषध को देगा फल प्रायक है।

२५ डल्का मारा— सर्दी आम के साथ उदरामय आदि नीचे मध्यम में रहने, और जल में गीजने से जोरोग उत्पन्न होते हैं, उससय को डल्कामारा नावा करता है भीजने के बाद ही सवम करने से सर्दी गही होती है।

२६ यृजा-- आखिख ( मरुना ) प्रमेह या प्रमेह से उत्पन्न रोग समस्त, गर्मी, आरम्भक, हर प्रकार के खसं रोग, मुख के घाघ, शरी के भीम बजने के बाद होने वाला ज्वर-या पुराना प्रमेह आदि के लिये यह औषध अतीव उपकारी है।

२७ नक्सत्रोमिका—परिपाक गहंने वाले समस्त रोगों में यथा कनजिगम, बार बार गलत्याग की इच्छा-पर यक्त पति गहोना, मुख में पसी का आना, छाती पर जखन हागा, पेट फूटना, नाभ में दर्द, नाभरी माये की घूमना, कोष्ठ र्ध के साथ साथ पाकाशगके और और दोष, पाचन शक्ति की हिनता, बार बार जो उठवाना, कमी कमी बमन का होना, मये की वरमु खाग

से हाथ पाय का कापना, यकृत की पीड़ा, दमा, सूखी सर्दी आक्षेप के छारा दर्द होगा गागा प्रकार के उपद्रव, जो प्राग केवल एक स्थान पर ही बैठे काम करते हैं और बिना प्रकार का शारीरिक परिश्रम नहीं करते, यद्यपि गान्धिका परिश्रम ही अधिक करते हैं, उनको या शिखा करते मासो का, क्षराय २ निवार उदात्त करो याद, रात्रि में जागते, रोगी की सेवा करते, और निरोग से भोजन न पाते याद, गार्क द्रव्य का सघन कर्मा, मुका भादि पीत पाला को और जिन खागों का पेट के दोष पशुर्वा, बहुत अशक्ति दाप, भोजन करने के बावही और गान्धिका शिखा से गाग की बुद्धि हो, इत्यादि प्रकार के रोगों में गक्सपौतिका फल प्रद है।

२८ **नेट्रोम गिउर**—मयिराग ज्वर। हेटों में घाव का होना, अधिक आशा ११ यज्ञ के करीब उषर, कुशतारन भादि के अधिक सघन से छुट्टा यकृत भादि के साथ ज्वर की घटती,। टन्डे स्थ म या कुमा भादि के खादने में या गद जमीन जानने भादि के साथ जो उषर होता है उस में यह अधिक उपकारी है। कोप वद, विमयता, नेत्र प्रदाह, प्रमेद, स्वेद मत्त, मृत्पायकु रोग भांस की कुन्डी, भादि में उपकारक है।

२९ **पलमटिला**—मञ्जीशरोग, अंग मखयुक्त, उषक है, पिच्छ, कडुभा खट्टा पदाथं का समन होना, घृतादि गिनेए पदार्थों के साथ स मञ्जीशरोग, उद्गमय विशेष कर रात्र में दर्द का होना और दानिवा खेचक साथ उद्गमय के साथ फुलसी यादरों के साथ में उपकारी सर्दी खांसी, और पक्षकों का मापुस में जुड़ जाना, मञ्जी ( गुहेरी ) भादि के साथ या हाम [जमरा] के साथ बहिरापन, यदुषों के काम में दद या फाग से पीय का निकलना,



घात, वेदना होना, जो एक स्थान से अन्य स्थान में फिरती मी हो ।  
स्त्रियों के रोग । विशेष में अर्धतु से सम्बन्ध रखने वाली कुष्ठपीडा  
में स्वेत प्रदर, प्रसव वेदना, या तत्सम्बन्धी समस्त गड़बड़ी, प्रसव  
के बाद फुल (नाड) के गिरने में देर अधिक दर्द, प्रसव के बाद का  
अधिक भैरगिरना घम्ह होजाना, छाती में दूध का न उतरना,  
आदि में नितास्त उपकारी समझना चाहिये, पुरुषों के अण्डकोश  
में सूजन या फूखना, या पुरुष की जनन इन्द्रिय में और २ प्रकार  
के रोगों में गुण वायक है । यह औषध प्रधाता स्त्रियों के और  
कोमल प्रकृति के पुरुषों के लिये अधिक उपकारी है ।

३० पोडो फाइलम—उदरामय, हारिस कांच और यकृत  
की यिमारी में लाभकारी है ।

३१ फासफरिस—फेफडा में प्रदाह स्वरमद्ग, सूखी  
आंभी और उसी के साथ में एक आना, यहमाकाश, पुरातन  
उदरामय, पथ सामान्यगुप्त ज्वर कमला [पिलिया] विकारजन,  
शारीरिक या मानसिक निर्धरता, विशेषतः अधिक और स्थाय  
विरुद्ध इन्द्रिय क्षेपन करने वाली को ।

३२ वेलेडोना ।— प्रदाह वाले रोगों में इसके साथ पको  
नाइट का विशेष सम्बन्ध है । किसी स्थान का प्रदाह उज्ज्वल,  
आरकता या वेदना, प्रकाश, या आबाज सुने में अक्षि इत्यादि  
में एकोनाइट के साथ या बाद में व्यवहार करना उपकारी है ।  
आस्र का, प्रदाह गले का दर्द, दांतका दर्द या मस्तक में अधिक  
रक्त के कारण दर्द, आक्षेप, प्रलाप, मस्तक, या ज्ञान रोग में अथवा  
शिर में पीडा, विशेष कर कपाल में, जहां पर दर्द होना हो या  
शिरा में दर्द बढ़ना हो महा अधिक उपकार पहुंचाता है ।

३३ ब्राइयोनिया — प्रदाह केफडे में पसखी में दर्द, सूखी खांसी वक्षस्पात में सुई गढ़ाने का दर्द, यकृत या भीतरी आठ में दर्द, ओंखों पर दर्द, दिखाने से दर्द का बढ़ना, कामछा, अपरिपाक सम्पन्धी रोगों में प्रधाग लक्षण, जैसे मुख में पानी आना, कड़ुथी, या खट्टी टफार, पाकाशय पर बोक्ता माळूम पटना, कोष्ठ बद्ध पाखाना कडा, और सूखा हो वहां इसे देना चाहिये ।

३४ भिरेट्रम अल्वम् — हैजा, सहसा दस्तों का आग या घमन होगा, उदरामय, दस्त होते २ घमन होने लगना, हाथ पांश में बैठग और शरीर का ठण्डा पसीना हो जाना, या काखा घमन होगा, मथवा गर्भाधर्या के घमन में फल प्रद ।

३५ भिरेट्रमभिरह — उषर, सायही साय अधिक माथे में दर्द होने लगे, नाडी का तेजी से चञ्जना, घमन की इच्छा, यालकों में स्त्रवविगम उषर का होना, हाम आविफी आरभिक दशा, माथे में, खून का ज्यादा होना येव केफडे का प्रदाह ।

३६ मर्क्यूरियस सल । — नाठ का बढ़ना, पीप निकलना, गले का घाय, उसी से मुख में दर्द, निगलने में तकलीफ, मुख से बहुत खार का निकलना, और बुगंध, मुख का घाय, मुखों सडा भाव, मुसफुर या मसूखों का फूलना, दर्द होना, पफना पीप निकलना, दांत का बढ़ या फीडा खगना, कामछा, वेह भांज का हलदी कासा रङ्ग होजाना, भांज का उठना, पखकों का रात में जुड़जाना, फानसे सुगार न घना, या पीप का निकलना । उदरामय में भांज के साथ मख या सख रङ्ग का मख या कीचड के रङ्ग का मानागा प्रदाह के रङ्गों का नाभयुक्त इस्त होना । याख-

काके उदरामय में बहुत की क्रिया का विगड़ जाना, पित्त का बच्छी प्रकार से न निकलना, मूत्र कड़ा सफेद बह्युदार, दक्षिण शङ्ख में दर्द मालूम होना, भूख का न लगना, मन सुस्त फीड़े, आतसक का घाव, घागी या प्रमेह में परम उपकारी प्रमदना चाहिये ।

**३७ मार्क्यूरियस कारोसाइभस**-रक्त भ्रामाशय, पेट में दर्द वेगकी अधिकता, आतसक, या यिष के जरिये से आतस का उठना,

**३८ रस्टक्स**-- यह खास कर घात या चर्म रोग में व्यवहार की जाती है । पुराना घात, एक स्थान पर विश्राम या हिलने छुलने में तकलीफ मालूम करना, थोड़ी देर पेसा करने से आराम घोष हो । पच्चाघात, घसत, (खेचक) दाढ़ फुन्सी, आदि कि चर्मरोग, काऊर राघ में होनेवाला ज्वर, गाठ का फूलना, मोचखाजाने, जोड़के स्थान में खोट लगने से बाहर लगाया चाहिये ।

**३९ लाइकोपोडियम**--पत्थिक यक्ष की कमजोरी, पेट का फूलना, मुँह में पानी का आना । पेट में नानालिधि की आघाज होगा, फोए बर, परथरी गिल्टी की वृद्धि घात की पीडा, बाखों का उडजाना, या घाव ।

**४० सलफर**-- यह यक्ष चमड़े पर अधिक उपकार करती है । खाळ पर के दर बिहम के रोग में इसका व्यवहार करना चाहिये । खासकर खाज, या फुन्सी जिनके खुजलाने में आराम मालूम पड़े या उष्णता में वृद्धि हो, स्फोटक को आराम करती है, आगुल हाडा ( गगुली का रोग पिथेप, ) पुराना

काष्ठ बड़ को घमासीर, सूत्र के बेगको रोकने में असमर्थ  
मलद्वार में खुजली या जलन अथवा कृमि। कोई औषध  
उपकार नहीं पड़े तब इस दवा को दो एक बार बी  
बीच में खानेसे उपकार होता है। औषधों में भी करीब  
यही लक्षण हैं।

४१ साइसिया- घाव, मसूड़े फोड़े, खेबक, गाठ फूटन  
हृष्टी का राग, दाढ़, बंगुलदाडा, हाथ पाव में पसीना, खेत  
प्रदर, माखी का घाव, या पीय का निकलना, और घाव का  
सूखना, इस दवाका खास फाम है-और पुराने रोग में अधिक  
उपकारी है।

४२ सिकेली- जरायू से रक्त गिरता हो या गभ अथ  
अथवा अनिमित्त आक्षेप जनक दुर्बल प्रसव वेदा, प्रसव  
के बाद छाव बद्ध हागया हो, प्रसव के बाद दर्दहोन  
प्रसव के बाद नाडी का न निकलना आक्षेप, सटने वाला घाव या  
विशुद्धि में शरीर का पेंठना आदि में लाग कारी है।

४३ सीपिया- ठीक समय पर अणु न होना या वापस  
रजनी कमी, खेतप्रदर जरायू से रक्त गिरना, जरायुका स्थान से हट  
जाना, मृतपाण्डु रोग, सवेरेका यमने, प्रमेह गमे क्षाप में प्रवृत्त  
मूर्च्छा गभघात, शिरकी पीडा, फोएवक पक्षाघात ( गोठ ) में  
खेतता, भाव, दाढ़, खमरोग या फगला आदि में उपकारी है।

४४ सीना-कृमी नाशक । लक्षण-नाक की खुजली,  
हाथो का जगना, किडमिडाना, बार बार भूल लगना, या भूल  
का न लगना, देवराज कृमि निकल आना से मल द्वार की  
खुजली, विस्तर पर मूत्र त्याग पेट का दर्द कृमि इत्यादि में ।

४५ लिमिसिप्यूगा — यह रूखा खास कर गठियाँ  
 कंधा पीडा में अधिक उपकारी है, शरीर के बावें अङ्ग में  
 खास कर जब उस के साथ में जरायु की कोई पीडा हो अथवा  
 कटि [ कमर ] में दर्द, माथे की घेदना, हृदय कम्पन, स्वरपरज, पा  
 रजशूल, प्रथमा अधिक रक्त का गिरना, गर्भा वस्था की  
 पीडा, वृद्धा वस्था में जब रज छाव बन्द होता है उस समय  
 की पीडा ।

४६ स्पन्जिया—घुगरि खासी की प्रथम अवस्था में  
 यह रूखा एफ्रोनाइट के साथ अदख बद्ध कर देने से बहुत लाभ  
 होता है । इस के अलावा अगर सूखी खासी रात्रि में अधिक उठे,  
 स्वरमङ्ग या उसी के साथ सूखी खासी अथवा अयस्केश के  
 घबने या छठोर होने में भी उपकारी है ।

४७ लेपेकेसिस — स्नायविक खासी, हृषिक्र खासी, घुगरि,  
 खाँसी, हापनी विकारज्वर, सधिरामज्वर, आस्येप मृगी, पक्षाघात,  
 शोथ, बुध्प्रण सय्याद्धत, केनसर [ कर्कट रोग ] नाराङ्गा ( एक  
 प्रकार का फोडा ) ऋतु शूल, अपाक, कमखा, टेनसिख प्रदाह  
 डिपथीरिया, उदरामय, अशं, आदि पीडाओं में व्यवहार  
 होती है ।

४८ हायसायेमस — मृगीरोग, पैठन, स्नायु की उत्तेजना  
 उन्मत्तता, मद जनित प्रलाप, सन्निपातिकज्वर के बहुत से लक्षण  
 बख पडना, मूत्र बन्द होजाना, या पेसा होना जो मालुम न पड़े ।  
 अवशाङ्ग रात्र में सूखी, खाँसी स्नायु या सिर के बहुत प्रकार के  
 रोगों में यह व्यवहार होती है रात्री में सूखी खासी, सोने पर

दुबकी, प्रसव के बाद उदरामय, स्नायु और मजूदे की पीड़ा में व्यवहार होती ।

**४६ हेमा मेलिस** — इस के द्वारा रक्त का गिरना रक्त गिरने वाली, यथासीर, शरीर क हर एक स्थान से रक्त गिरना मोमरी की पीड़ा के कारण रजशूख काकासिरा, पाहर का प्रयोग जहां पर झार्निका सही न जाये वहां पर इसे व्यवहार करणा चाहिये, खूनी यथासीर को दम करने के लिये चारभाग जख में १ भाग इस दवा को मिलाकर खगाना चाहिये ।

**५० हेपर सलफर**— यह दवा फालकेरिया और सलफर इन दोनों को मिलाकर बनी है । इसी लिये फालकेरिया के समान गांठ पर और सलफर के समाग चर्म के ऊपर इस का व्यवहार होता है । श्वास की गली की सय पीड़ा और घुगरी खांसी श्वरभङ्ग, घट घट श्वास का होना परमाकाश, गांठ से पीष विस्पोटक और घिद्रभि पारा आदिक के अपव्यवहार करने से जो रोग होते हैं उन सब में प्रयोग होती है ।



इति

# लाहिड़ी एण्ड को

प्रधान औषधालय—१०१ नम्बर कोलेज स्ट्रीट—कलकत्ता  
कलकत्ता शाखा मुफसिख शाखा

(१) शोभा बाजार शाखा, (४) धाकीपुर शाखा चोदहा धाकीपुर,  
(२) बहा बाजार शाखा, (५) पटना शाखा चौक पटना  
(३) भवनापुर शाखा, मथुरा शाखा होलीदर्याजा मथुरा

हम लोगों के औषधालय में सर्व प्रकार की होमियो पैथिक पुस्तकें औषधें-इंग्रेजी-बंगला-हिन्दी-उर्दूकी पुस्तकें और होमियोपैथिक चिकित्सा करने के उपयोगी सामान सर्वथा मौजूद रहते हैं।

हमारे औषधालय में अच्छे अच्छे डाक्टर रहकर औषधी का काम देखा करते हैं। उत्कृष्ट और अछूतम औषध विक्रय करना ही हम लोगों का उद्देश्य है। सबसे मुख्य विज्ञाकर, निष्कृष्ट वस्तु विक्रय करना अर्थम समझते हैं-सर्व जगो से प्रार्थना है कि हम लोगों की उत्तम औषध की परीक्षा करके देखे-माग जाने से, सूचीपत्र इंग्रेजी--बंगला--हिन्दी--उर्दू, भाषा का रूप बिना मुख्य भेजा जाता है।

और सर्व साधारण लोगों के सुभीते के लिये और विदेशीय ग्राहक महाशयों के लिये--धाकीपुर--पटना और मथुरा प्रायः के औषधालय में होमियो पैथिक औषधियों के निषाय एलो पैथिक औषधों भी दुसरे स्थान में रखकर विक्रय करते हैं। सम्पूर्ण औषध विद्यार्थ को सीधा मोडर भेजकर मगाते हैं इस लिये और औषधालयों की अपेक्षा उत्तम औषध और बहुत कम नफे पर विक्रय करते हैं। सिवाय होमियो पैथिक--एलोपैथिक औषधों के और भी उपयोगी सामान जैसे-थर्मोमटर [ बुझार-

जागने का यत्र ] पिचकाये नष्टर--भादि डाफ्टरी चिकित्सा करने के औजार भी मौजूद रहते हैं।

## साधारण औषधों की सूची

	१ ड्राम	२ ड्राम	४ ड्राम	१ भोंस
अमिभसर्क(गदरटिबर)	1=)	11=)	१)	१11)
१ नम्बर से १२ तक	1)	1=)	11=)	१)
३०	1=)	11)	111)	१1)
२००	१)	१1)	२11)	४)
५००	२)	३)	४)	५)
१०००	३)	४)	५)	६)
चूर्ण (पाउडर) ३ नम्बर	11)	111)	१1)	२)
टिबर चूर्ण ३० ग, तक	1=)	11)	111)	१1)

हेजे की अमूल्य औषध डा० रुवनी - साहिब

### का असली स्प्रिट कैम्फर

यह औषध हेजे के लिये अत्यन्त ही उपयोगी साबित हुई है इस से बढ़कर शीघ्र फायदा करने वाली दूसरी औषध नहीं है। इसको हर एक महत्त्व मनुष्य को पास रखना चाहिय और प्रायः उन मनुष्यों को जो विदेश भ्रमण करते हैं, वीथ यात्रा करते हैं, या शिकारत करते जाते हैं उनके लिये तो बहुत ही उपयोगी है। क्योंकि एक स्थान पर औषधी मिलना बहुत ही मुदिमाल है, और कोई कोई स्थान ऐसे है जहां पर न तो औषध मिल सकती है न कोई चिकित्सक है। वहां पर धीमाती होजाने से मनुष्य मर गया बैठते हैं, उनके लिये मित्र के समान हेजे से बचाने वाली औषध अर्क कपूर भी जरूर १ शीशी पास रखना चाहिये १ शीशी से कितनेही मनुष्यों को फायदा पहुंचता है



और दूरी उपयोगी औषध होने पर भी मुख्य बहन कम है यानी  
छोटी शीशी मूल्य 1- ) मध्यम शीशी मूल्य ॥ ) बड़ी शीशी ॥= ) है

## अर्क कपूर की गोली

यह गोली भी अर्क कपूर के समान फायदा पहुंचाती है।  
इसे वधे तक बड़ी आसानी से खासके हैं और विदेश में  
भ्रमण करने वालों के लिये इसके पास रखने में बड़ा  
सुभीता पड़ता है और विशेष फायदा करती है मूल्य आधी  
ओंस की शीशी ॥) । १ ओंस की शीशी १।)

## डाक्टर सातजर साहिव का बनाया

### हुआ कपूर का चूर्ण ।

चूर्ण इस चूर्ण के सेवन करने में बड़ा सुभीता पड़ता है और  
फायदा अर्क कपूर व कपूर की गोली के समान ही करता है  
मूल्य आधा ओंस शीशी १ रु- एक ओंस की शीशी का १॥ )

### औषधो से भरा हुआ बक्स

न १—हैजे की दवाई का बक्स ( छोटा ) १२ शीशी दवाई  
और पुस्तक हैजा के इलाज करने की, १ शीशी कपूर का अर्क, और  
१ छूट टपफाने का पत्र के सहित मूल्य ४॥ )

२—हैजे की दवाई का बक्स ( बड़ा ) । २४ शीशी दवाई व  
उपरोक्त छिन्ना सामान सहित मूल्य ८ )

३—बृह चिकित्सा करने का बक्स ( छोटा ) २४ शीशी  
दवाई सहित बक्स १ अथ चिकित्सा नाम की हिन्दी पुस्तक,  
और छूट टपफाने के पत्र सहित मूल्य ८ )

नं०४—बृह चिकित्सा का ( बड़ा ) बक्स ३६ शीशी दवाई  
व उपरोक्त सामान सहित मूल्य ११॥ )

